Class: M.A. II Semester | Course Code: MUSI503PR

Subject: Music (TABLA) | Course type : Elective Course - III

MUSIC
(Basic Techniques of Tabla Playing)

Lesson : 1 - 15

Dr.Rajeev Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषयसूची

क्रम	अध्याय	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	2
2		प्राक्कथन	3
3		पाठ्यक्रम	5
4	इकाई – 1	वाद्यों के प्रकार (वादन के संदर्भ में)	6
5	इकाई – 2	तबला के अंग (वादन के संदर्भ में)	16
6	इकाई – 3	तबला के पारिभाषिक शब्द (वादन के संदर्भ में)	27
7	इकाई – 4	ताललिपि पद्धति (वादन के संदर्भ में)	51
8	इकाई – 5	तबला में लय और लयकारी (वादन के संदर्भ में)	60
9	इकाई – 6	तबला के क्षेत्र में विद्वानों का योगदान (वादन के संदर्भ में)	73
10	इकाई – 7	प्राचीन अवनध वाद्य चित्र सहित (वादन के संदर्भ में)	89
11	इकाई – 8	एकताल में ½ और ¼ (वादन के संदर्भ में)	104
12	इकाई – 9	तीनताल में कायदा (वादन के संदर्भ में)	114
13	इकाई – 10	पाठ्यक्रम में प्रयुक्त तीनताल (वादन के संदर्भ में)	131
14	इकाई – 11	पाठ्यक्रम में प्रयुक्त एकताल (वादन के संदर्भ में)	142
15	इकाई – 12	पाठ्यक्रम में प्रयुक्त चौताल (वादन के संदर्भ में)	152
16	इकाई – 13	पाठ्यक्रम में प्रयुक्त ताल दादरा (वादन के संदर्भ में)	162
17	इकाई – 14	पाठ्यक्रम में प्रयुक्त ताल रूपक (वादन के संदर्भ में)	172
18	इकाई – 15	तबला के वर्ण (वादन के संदर्भ में)	182
19		महत्वपूर्ण प्रश्न कार्यभा -	201

प्राक्कथन

संगीत स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSI503PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में वादन के संदर्भ में वाद्यों के प्रकार, अच्छे तबले की पहचान, और तबले को मिलाने की विधि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में वादन के संदर्भ में तबला के अंगों और तबला के रक्षार्थ गद्दियों का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में वादन के संदर्भ में तबला के पारिभाषिक शब्दों का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में वादन के संदर्भ मेंताललिपि पद्धति का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में वादन के संदर्भ में तबला में लय और लयकारी का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में वादन के संदर्भ में तबला के क्षेत्र में विद्वानों के योगदान का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में वादन के संदर्भ में प्राचीन अवनध वाद्य को चित्र की सहायता से दिखाया गया है।

इकाई 8 में वादन के संदर्भ में एकताल में ½ और ¼ का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में वादन के संदर्भ में तीनताल में कायदों का वर्णन किया गया है।

इकाई 10 में वादन के संदर्भ में तीनताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

इकाई 11 में वादन के संदर्भ में एकताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

इकाई 12 में वादन के संदर्भ में चौताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

इकाई 13 में वादन के संदर्भ में दादरा का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

इकाई 14 में वादन के संदर्भ में रूपक का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

इकाई 15 में वादन के संदर्भ में तबला के वर्णों का और उसके निकास का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक अध्याय में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. राजीव शर्मा

COURSE CODE MUI503PR

Hindustani Music

Paper-I Practical (Unit-II)

Title-Stage-Performance

Max Marks 100, ESE-80, CCA-20 **Credit 4**

Course Objective

- To learn basic techniques of Tabla Playing.
- To learn to perform prescribed Talas on Tabla.

Course Outcome

- The student will learn basics techniques of Tabla Playing.
- The student will learn to perform prescribed Talas on Tabla.

Course of Study **80 Marks**

1.Capacity to demonstrate the following

- Ten Varns of Tabla & Nikas of Bols.
- Kayeda in Teentaal and Ek Gun and Dugun of prescribed talas.
- Knowlodge of Thekas – of Ektaal, Teentaal, Chautaal, Dadra, Roopak playing on Tabla.
- ¼ & ½ Laya of Ektaal

इकाई -1
वाद्यों के प्रकार
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	वाद्यों का परिचय
1.3.1	तबला का परिचय
1.3.2	अच्छे तबले की पहचान
1.3.3	तबला मिलाने कि विधि
	स्वयं जांच अभ्यास1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में वादनके संदर्भ में, वाद्यों का परिचय , अच्छे तबले की पहचान , और तबले को मिलाने की विधि को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। वाद्यों के प्रकार के बारे में में समझाया गया है । इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी वाद्यों का परिचय,तबला का परिचय, अच्छे तबला कि पहचान, और तबला मिलाने कि विधि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वाद्यों के प्रकार की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- तबला का ज्ञान विकसित करना।
- वाद्यों के प्रकारों को लिखने और समझने की क्षमता विकसित करना।
- तबला मिलाने कि विधि को समझना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, वाद्यों के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, वाद्यों के प्रकारों को समझनेमें सक्षम होगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, तबला का परिचय को समझ पाएगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,वादन के अंतर्गत, तबला के पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 वाद्यों का परिचय

हमारे देश में अनेक प्रकार के वाद्य शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत और फिल्म संगीत में प्रयोग किये जाते हैं। रामायण और महाभारत काल में भी कई प्रकार के वाद्यों के नाम मिलते हैं। आज कल तो अनेक वाद्य प्रयोग किये जाते हैं। किसी वाद्य में तार द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं तो किसी में हवा द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं। कुछ वाद्य ऐसे भी होते हैं जिनमें किसी धातु से विभिन्न स्वर निकला करते हैं। अधिकतर वाद्यों में अलग-अलग स्वर निकला करते हैं, किन्तु एक प्रकार का मुख्य वाद्य ऐसा भी है, जिनमें केवल एक ही स्वर उत्पन्न होता रहता है और लय-ताल दिखाने के काम आता है। तबला या पखावज ऐसा ही वाद्य है। इस तरह मुख्य चार प्रकार के वाद्य हो गये।

उनके नाम हैं-

(1) तत, (2) सुषिर, (3) घन और (4) अवनद्ध।

(1) तत वाद्यों में तार द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं, जैसे सितार, तानपुरा, सरोद, गिटार, वायोलिन आदि।

(2) सुषिर वाद्यों में हवा से स्वर उत्पन्न होते हैं, जैसे बाँसुरी, शहनाई, हारमोनियम आदि।

(3) घन वाद्यों में किसी धातु द्वारा स्वर उत्पन्न होते हैं, जैसे मंजीरा, झांझ, जलतरंग आदि।

(4) अवनद्ध वाद्यों में चमड़ा अथवा खाल को हाथ या लकड़ी से बजाने पर स्वर निकलता है जैसे नाल, खँजरी, तबला, ढोलक, ताशा, नगाड़ा, पखावज आदि। ये वाद्य लय-ताल दिखाने के काम आते हैं।

आजकल हिन्दुस्तानी संगीत में तबले का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। जहाँ कहीं पखावज या ढोलक का प्रयोग होना चाहिये वहाँ तबले से ही काम चला लिया जाता है। जैसे ध्रुपद के साथ पखावज बजाया जाना चाहिये या लोकगीत के साथ ढोलक बजाया जाना चाहिये, लेकिन हर समय न पखावज मिलता है और न ढोलक। तबला आसानी से मिल जाता है। इसलिये तबला से ही काम चला लिया जाता है। ध्रुपद के अच्छे गायक पखावज ही पंसद करते हैं।

1.3.1 तबला का परिचय

दुनियाँ के किसी भी संगीत के गायन, वादन और नृत्य को अधिक आकर्षक बनाने के लिए किसी न किसी अवनद्ध वाद्य से संगत की जाती है। हिन्दुस्तानी संगीत में संगत के लिये तबला एक मुख्य वाद्य है। अतः सबसे पहले इसका परिचय जानना आवश्यक है।

इसके मुख्य अंग दो होते हैं। जो बाएँ हाथ से बजाया जाता है, उसे बायाँ, डग्गा तथा माँडिया कहते हैं। दाहिने हाथ से बजने वाले को तबला, दायाँ या मादी कहते हैं। कुछ लोग इसे नरघा तथा सौराष्ट्र में धुक्कड़ कहते हैं।

तबला :

यह लकड़ी का बना होता है। आम, खैर, शीशम, चंदन, बबूल, कटहल तथा बिजैसार का बनता है। इसके नीचे का भाग प्रायः ८३ इंच, ऊपर का ७ इंच तथा ऊँचाई लगभग एक फुट की होती है। जो दाएँ तबले नीचे स्वर में मिलाए जाते हैं, उनका मुँह बजाय उन तबलों के, जो कि ऊँचे स्वर में मिलाए जाते हैं कुछ बड़ा होता है।

1.3.2 अच्छे तबले की पहचान

अच्छे तबले की पहचान :

दाएँ का काठ जितना अधिक भारी होगा, उतनी ही अधिक गूंज उत्पन्न होगी। बिजैसार की लकड़ी का दायाँ प्रायः उत्तम रहता है।

उत्तम डग्गे की पहचान :

बायाँ प्रायः मिट्टी का बना होताहै। यह जितना हलका होता है, उतना ही अच्छा होता है। परंतु मिट्टी की कुंड़ी फूट जाने के डर से और सुविधा के लिए ताँबे या पीतल की भी कुंड़ियाँ बनाई जाती हैं। पंजाब में तो बायाँ भी प्रायः तबले के बराबर का ही होता है और इसे लकड़ी का बनाया जाता है। कुछ लोग बाएँ की पंदी में राँगा, सीसा या जस्ता आदि डालकर उसे भारी कर देते हैं। फलस्वरूप उसमें से गुज अधिक निकलती है और वह इधर-उधर नहीं हिलता।

दाहिना तबला दाहिने हाथ से बजाया जाता है और बाँया बाये हाथ से बजाया जाता है। कुछ तबलिये दाहिना तबले को बाँये हाथ से बजाते हैं किन्तु ऐसे व्यक्ति बहुत कम पाये जाते हैं। ,

1.3.3 तबला मिलाने कि विधि

दायाँ तबला मिलाना :

इसे मिलाने के लिए किसी एक ओरके भाग को जिस स्वर में तबला मिलाना हो, उससे कुछ नीचा मिला लीजिए। इसके बाद जो घर आपने मिलाया है, ठीक उसके सामनेवाले घर को भी इसी प्रकार मिला लीजिए। जब ये आमने-सामने के घर कुछ-कुछ मिल जाएँ, तब चाहे दाई ओर का घर मिलाया है, तो बाद में बाई ओर का और यदि पहले बाईं ओर का घर मिलाया है, तो बाद में दाई ओर का घर मिला लीजिए। जब इस प्रकार चारों घर मिल गए, तो अब शेष बीच के घाटों (घरों) पर हल्की-हल्की चोट देते हुए सबको मिला लीजिए। इस प्रकार आपके सारे घर, स्वर से

कुछ-कुछ नीचे होंगे। इसके उपरांत आप प्रत्येक घर को क्रम से गजरे पर हथौड़े से हल्का- हल्का प्रहार करते हुए ठीक स्वर में मिला लीजिए।अतः तबला मिलाने के लिये स्वर-ज्ञान आवश्यक है। छोटे मुँह का तबला ऊँचे स्वर से और बड़े मुँह का तबला नीचे स्वर से मिलता है।

बायाँ डग्गा मिलाना :

प्रायः लोग डग्गे को चारों ओर से ठोकदेने से ही यह समझने लगते हैं कि वह ठीक हो गया। परंतु सच बात तो यह है कि डग्गे को इतना ठोकना चाहिए कि उससे उत्पन्न होनेवाला नाद, जिस स्वर पर दायाँ मिला है, उसके नीचे के (मंद्र) 'सा' में हो।

तबला मिलाते समय ध्यान रखने योग्य बातें :

तबला मिलाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कभी भूल से हथौड़ी द्वाल अथवा किनार पर न पड़ जाए। यदि हथौड़ी के प्रहार से द्वाल कट जाएगी, तो तबला ठीक नहीं मिल सकेगा। और यदि कहीं किनार कट गई, तो पुड़ी बेकार हो जाएगी। दूसरी बात यह है कि जहाँ तक हो, गट्टों पर प्रहार करके तबला मिलाया जाए अन्यथा उतरने का डर रहता है।

बिखरे हुए बाएँ को ठीक करना :

यदि कोई तबला बहुत दिनों से नहीं बजा है, अथवा मिलानेवाले की गलती से उसके घरों में अधिक ऊँचा-नीचा अंतर हो गया है तो ऐसे दाएँ को बिखरा हुआ तबला कहते हैं। इसे स्वर में लाने के लिए तबला के प्रत्येक घर को बड़ी होशियारी से एक ही स्वर में लाकर ऊपर दिए विवरण के अनुसार मिलाना चाहिए।

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 वाद्यों के कितने प्रकार होते हैं?

क) 5

ख) 8

ग) 4

घ) 10

1.2 सितार किस वाद्य के अंतर्गत आता है ?

क) अवनद्ध

ख) तत

ग) घन

घ) संगीत

1.3 सुषिर वाद्यों में कौनसा वाद्य आता है ?

क) तबला

ख) बाँसुरी

ग) जलतरंग

घ) गिटार

1.4 घन वाद्यों में कौनसा वाद्य आता है ?

क) पखावज

ख) तानपूरा

ग) मंजीरा

घ) खँजरी

1.5 तबला किस वाद्य के अंतर्गत आता है ?

क) अवनद्ध

ख) तत

ग) सुषिर

घ) घन

1.6 तबला का दायां किस चिज़ का बना होता है ?

क) पीतल

ख) लोहा

ग) तामबा

घ) लकड़ी

1.7 तबला मिलाने के लिये क्या प्रयोग होता है ?

क) मिजराब

ख) गज़

ग) हथौड़ी

घ) घन

1.4 सारांश

वाद्य शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत और फिल्म संगीत में प्रयोग किये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत में वाद्यों के बारे में जानकारी। अलग-अलग वाद्यों से क्या क्या स्वर उत्पन्न होते हैं। तबला की जानकारी होती है। तबला प्रस्तुतिकरण से पहले तबला मिलाने की प्रक्रिया होती है।

1.5 शब्दावली

- ध्रुपद: एक तरह का गायन का प्रकार।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- अवनद्ध वाद्य: जिस वाद्य के उपर चमड़ा मडा होता है।
- बिजैसार: एक प्रकार की लकड़ी हैं जो तबला बनाने के लिए इस्तेमाल की जाती है।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: ग)

1.2 उत्तर: ख)

1.3 उत्तर: ख)

1.4 उत्तर: ग)

1.5 उत्तर: क)

1.6 उत्तर: घ)

1.7 उत्तर: ग)

1.7 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

1.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. वाद्यों के प्रकार तथा तबले का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. अच्छे तबले की पहचान क्या होती है।

प्रश्न 3. तबले का चित्र बनाइये।

प्रश्न 4. तबले के अंगो को विस्तृत मैं समझाइये।

प्रश्न 5. तबला मिलाने की विधि लिखिए।

इकाई – 2
तबला के अंग
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2 .1	भूमिका
2 .2	उद्देश्य तथा परिणाम
2 .3	तबला के अंग (चित्र सहित)
2 .3.1	दाहिना तबला के अंगों की व्याख्या
2 .3.2	बायाँ तबला के अंगों की व्याख्या
2 .3.3	तबले के रक्षार्थ गद्दियाँ
	स्वयं जांच अभ्यास1
2 .4	सारांश
2 .5	शब्दावली
2 .6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
2 .7	संदर्भ
2 .8	अनुशंसित पठन
2 .9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में तबला के संदर्भ में तबला के अंगों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला वाद्य का प्रयोग विशेष रूप से होता है। परन्तु सबसे पहले तबला के अंगों के बारे में पता होना अति आवश्यक है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला वाद्य को सीखने से पहले उसके अंगों को शुरू से ही बताया जाता है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तबला वादन के संदर्भ में तबला के अंगों की मूलभूत तकनीककी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से तबला वाद्य बजा सकेगें।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तबला वादन के संदर्भ में तबला के अंगों की मूलभूत तकनीककी जानकारी प्रदान करना।
- तबला वादन के संदर्भ में तबला के अंगों की जानने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, तबला वादन के संदर्भ में तबला के अंगों की मूलभूत तकनीक के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, तबला वादन के संदर्भ में तबला के अंगों को जानने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में, तबला वादन के संदर्भ में तबला के बारे में अपनी कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

- विद्यार्थी में वादन के अंतर्गत तबला के अंगों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

2.3 तबला के अंग (चित्र सहित)

तबला :

यह लकड़ी का बना होता है। आम, खैर, शीशम, चंदन, बबूल, कटहल तथा बिजैसार का बनता है। इसके नीचे का भाग प्रायः ८३ इंच, ऊपर का ७ इंच तथा ऊँचाई लगभग एक फुट की होती है। जो दाएँ तबले नीचे स्वर में मिलाए जाते हैं, उनका मुँह बजाय उन तबलों के, जो कि ऊँचे स्वर में मिलाए जाते हैं कुछ बड़ा होता है।

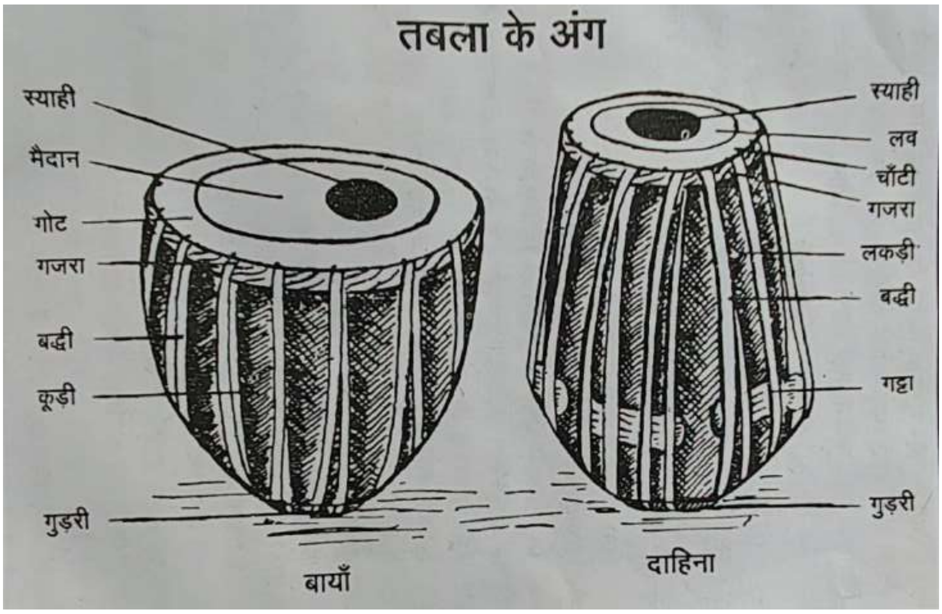

2.3.1 दाहिना तबला के अंगों की व्याख्या

दाहिना तबले के अंग-

(1) लकड़ी, (2) बद्धी, (3) गट्टा, (4) गजरा, (5) गुड़री, (6) घर, (7) पूड़ी, (8) लव,

(9) चाँटी और (10) स्याही।

दाहिना तबला

(1) लकड़ी -

यह खोखली लकड़ी की ढाँचा होती है। इसके ऊपर पूड़ी व बद्धी लगाकर तैयार होने पर इसे दाहिना तबला बोला जाता है। ये कई साइज़ के होते हैं (आकार)। इसकी ऊँचाई दस या बारह इंच होती है। ऊपर की गोलाई लगभग इंच और 6 नीचे की गोलाई लगभग आठ इंच होती है। लकड़ी अन्दरसे खोखली होती है। इसकी लकड़ी आम ,खैर , नीम , शीशम या कटहल की होती है। तबले का मुँह अर्थात् ऊपरी भाग छोटा होने से तबला ऊँचे स्वर से और बड़ा मुँह होने से नीचे स्वर से मिलता है।

(2) बद्धी-

यह चमड़े की पट्टी होती है। यह गजरे के छेदों से होकर गुड़री में जाकर पूड़ी को कसे रहती है।

(3) गट्टा-

यह लकड़ी का होता है और करीब 4 इंच लम्बा होता है और दाहिने में लकडी के ऊपर बद्धी से दबा रहता है।

(4) गजरा-

यह पूड़ी के चारों तरफ चमड़े से गुथी हुई होती है। इसमें 16 छिद्र होते हैं। इनके छेदों से बद्धी निकलती है और नीचे गुड़री से होकर लकड़ी को कसे रहती है। गजरा को श्रृंगार या पगड़ी भी कहते हैं।

(5) गुड़री -

यह चमड़े की बद्धी से बनती है जो तबले के नीचे पेदीं में लगी रहती है। गुड़री से दाहिना तबला जमीन पर टिकता है।

(6) घर - ऊपर के गजरे में जिसमें से होकर बद्धी नीचे जाती है उन सभी 16 छिद्रों को घर कहते हैं।

(7) पूड़ी –

लकड़ी के मुँह पर बकरे की खाल लगी रहती है जिसके बीचो – बीच काली स्याही लगी रहती है। स्याही के बाद लव और चाँटी होती है। गोल आकार की पूड़ी में ये सभी चीजें आती हैं।

(8) लव –

पूड़ी पर स्याही और किनारे लगी हुई चाँटी के बीच की जगह को लव कहते हैं।

(9) चाँटी –

पूड़ी के किनारे चारों ओर गजरे से लगी हुई लगभग एक अंगुल चौड़ी पट्टी को चाँटी कहते हैं।

(10) स्याही-

पूड़ी के बीचो-बीच गोल काले मसाले को स्याही कहते हैं। तबले पर स्याही लगाना भी एक कला है। स्याही निकलनी नहीं चाहिये, नहीं तो तबले की ध्वनि बिगड़ जावेगी।

2.3.2 बायाँ तबला के अंगों की व्याख्या

बाँया तबला

(1) कूड़ी -

यह मिट्टी, लोहा, पीतल, ताँबा या लकड़ी की होती है। इस पर लगे हुए पूड़ी को कसने के लिये बद्धी लगायी जाती है।

(2) बद्धी -

चमड़े की लम्बी पट्टी को बद्धी कहते हैं जिससे गजरा और गुड़री फसी रहती है।

(3) डोरी - बाँया में चमड़े की बद्धी न लगाकर कुछ लोग मोटी डोरी लगाते हैं।

(4) छल्ला -

बाँया को कसने के लिये डोरी में लोहे या पीतल के गोल छल्ले लगे रहते हैं। इनको नीचे करने से बाँया कसता है और ऊपर करने से ढीला होता है।

(5) मैदान -

जिस प्रकार दाहिना में लव होता है, उसी प्रकार बाँया में स्याही और गोट के बीच खाली जगह होती है. उसे मैदान कहा जाता है।

(6) पूड़ी –

दाहिने की तरह इसमें (बाँये में) भी पूड़ी मढ़ी रहती है। इसका मुँह बड़ा होता है और स्याही इसमें बीचो-बीच न होकर ऊपर की ओर लगी रहती है। इसके किनारे जो गोट लगी रहती है। उसे कटौनी या चाँटी कहते हैं।

(7) गोट –

दाहिने में जैसे एक चमड़े की गोट किनारे-किनारे लगी रहती है वैसे ही बाँया में गोट लगी रहती है, उसको चाँटी या गोट कहते हैं।

(8) स्याही -

जैसे दाहिने में बीचो-बीच काला मसाला लगा रहता है उसी तरह का काला मसाला बाँये के बीच में न लगाकर कुछ ऊपर की ओर लगा रहता है, उसे स्याही कहते हैं

(9) गजरा -

पूड़ी के चारों तरफ चमड़े की माला होती है जिसके छेद से डोरी (बद्धी) फसी रहती है, इसको गजरा कहते हैं।

(10) घर -

बाँया में भी नीचे दाहिना की तरह गुड़री में जो छिद्र होते हैं उन्हें घर कहते हैं। इन छिद्रों से बद्धी गुजरती है।

(11) गुड़री -

यह पूड़ी के पेंदे में लगी रहती है जो चमड़े की बद्धी से गूँथकर बनी होती है। बद्धी के सहारे ऊपर पूड़ी और नीचे गुड़री कसी रहती है। गुड़री के सहारे तबला या बाँया जमीन पर टिकता है।

2.3.3 तबला के रक्षार्थ गद्दियाँ

प्रथम - बाई - दाई, दोनों पुड़ियों के लिए हल्की –सी रुई डलवाकर कपड़े की गद्दियाँ बनवानी आवश्यक हैं। जब तबला प्रयोग में न आए तब उन पर गद्दियों का बँधा रहना जरूरी है।

द्वितीय - तबले को ऊँचे स्वर पर तभी तक मिला रखना चाहिए, जब तक कि उसे बजाना है। वादन समाप्त करने के उपरांत उसे कुछ उतारकर और गद्दियों से पुड़ियों को ढँककर रखना चाहिए।

तृतीय - आपको यह समझ लेना चाहिए कि दायाँ अधिक-से-अधिक अमुक ऊँचे स्वर तक जा सकता है। उस स्वर से आगे कभी मिलाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

चतुर्थ - तबला-वादन करते समय कभी-कभी पिसी सेलखड़ी को दाएँ और बाएँ पर बुरकते रहना चाहिए, ताकि बजाते समय हाथों में जो पसीना आ गया है, वह सूख जाए और स्याही को खराब न करे। ध्यान रखिए, सील और

पानी गिर जाने से स्याही के उखड़ जाने का भय रहता है, और यदि आप चाहते हैं कि हर मौसम में आपका तबला बढ़िया बोलता रहे, तो सदैव मुँह पर गद्दी बाँधकर और फिर इन्हें कपड़े में बाँधकर रखिए।

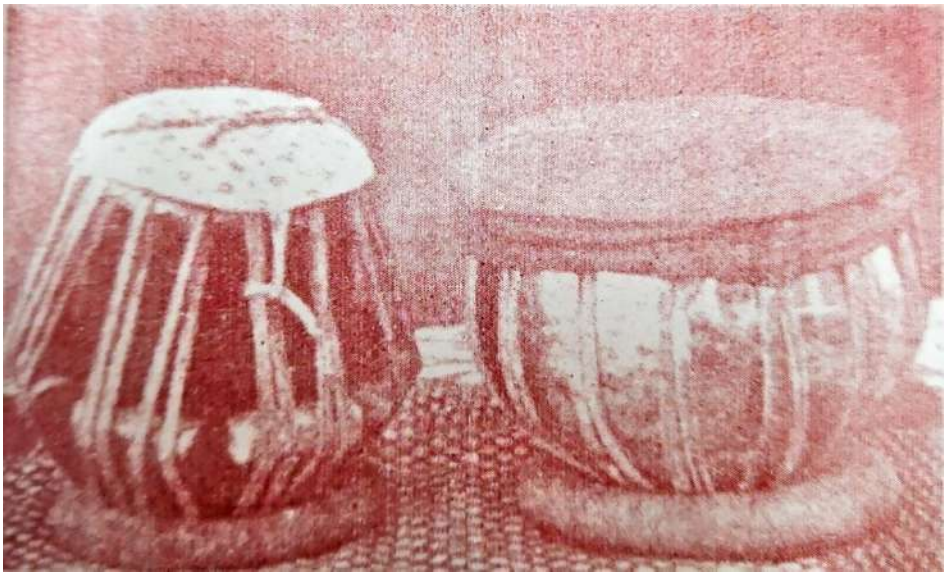

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 तबला का दायाँ किसका बना होता हैं?

क) लकड़ी

ख) ताम्बा

ग) लोहा

घ) इसमें कोई नहीं

2.2 तबला कोसी लकड़ी से बनता हैं?

क) बिजैसार

ख) कटहल

ग) शीशम

घ) उपरोक्त सभी

2.3 पुड़ी किससे कसी जाती है?

क) गट्टा

ख) बद्दी

ग) गुदरी

घ) द्रा

2 .4 गजरा में बद्दी डालने के लिए कितने छेद किये जाते है?

क) 48

ख) 12

ग) 16

घ) 2

10.5 बाँया में चमड़े की बद्धी न लगाकर कुछ लोग मोटी डोरी लगाते हैं ?

क) सही

ख) गलत

2.4 सारांश

तबला वाद्य को अंगुली के अग्र भाग से बजाया जाता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला वाद्य को सीखने से पहले तबला के अंगों को जानने का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इससे यह पत्ता लग जाता है की तबला है क्या।

2.5 शब्दावली

- बिजैसार : एक प्रकार की लकड़ी जिससे तबला बनता है।
- दाहिना तबला : दांये हाथ से बजने वाला तबला हैं।
- बद्दी : यह चमड़े की पट्टी होती हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: घ)

10.3 उत्तर: ख)

10.4 उत्तर: ग)

10.5 उत्तर: क)

2.7 संदर्भ

डॉ.केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अक्टूबर 2024।

श्री विक्रांत शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अगस्त 2024।

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

2.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तबला और तबला के अंगों का चित्र बनाइये।

प्रश्न 2. तबला के अंगों को विस्तारपूर्वक लिखिए।

इकाई-3
(तबला के पारिभाषिक शब्द)
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	नाद, संगीत और ताल का परिचय
3.3.1	सम और मात्रा का परिचय
3.3.2	ताली और खाली का परिचय
3.3.3	विभाग, ठेका, और बोल का परिचय
3.3.4	पेशकार, कायदा पेशकार और तिहाई का परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में, तबला के पारिभाषिक शब्द नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार तालों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। मंच प्रदर्शन से पहले कुछ पारिभाषिक शब्दों को जानना ज़रूरी है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी कुछ पारिभाषिक शब्द जैसे नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई की जानकारी की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखनेकेपरिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई को लिखने में निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 नाद, संगीत और ताल का परिचय

- नाद –

'नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः। जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते'॥

संगीत रत्नाकर में दिए गए नाद की इस जानकारी के अनुसार 'नकार' प्राणवाचक (वायुवाचक) तथा 'दकार' अग्निवाचक है। और, जो वायु तथा अग्नि के संयोग से उत्पन्न होता है, उसे नाद कहते हैं। दूसरे शब्दों में उस मधुर और कर्ण प्रिय ध्वनि को नाद कहा जाता है जो संगीतोपयोगी हो। कुछ लोग ध्वनि मात्र को नाद कहते हैं। वे ध्वनि की विशेषता या उपयोगिता नहीं देखते। लेकिन ऐसा, मानने से उस अव्यवस्थित और अनियन्त्रित ध्वनि को भी नाद के अन्तर्गत रखना पड़ेगा जिसे शोरगुल, कोलाहल या चीख-पुकार कहना ज्यादा उचित होगा, यह विशेष रूप से दृष्टव्य है कि जब भी नाद की चर्चा होती है, तो उसका तात्पर्य संगीतोपयोगी ध्वनि ही होता है।

नाद के 2 प्रकार माने गए हैं - आहत और अनाहत। अनाहत को ही संगीत से जुड़े लोग अनहद नाम से सम्बोधित करते हैं -

'आहतोऽनाहतश्चेति द्विधा नादो निगद्यते। सोऽयं प्रकाशते पिंडे तस्मात् पिंडोऽभिधीयते'॥

(क) आहत नाद-

जब दो वस्तुओं के संघर्षण या टकराहट के फलस्वरूप कोई मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है, तो उसे आहत नाद की संज्ञा दी जाती है। लगभग समस्त संगीत आहत नाद के अन्तर्गत ही सृजित होता है। गायन और वादन की भिन्न-भिन्न धाराएँ इसी आहत नाद की देन हैं। समस्त स्वर, श्रुति, वाद्य यन्त्रों की एवं कंठ ध्वनियाँ आहत नाद के ही अन्तर्गत आती हैं। संगीत दर्पण के लेखक दामोदर पण्डित ने आहत नाद को भव सागर से पार लगाने वाला बताया है -

'स नादस्त्वाहतो लोके रंजको भवभंजकः। श्रुत्यादि द्वारतस्तस्मात्तादुत्पत्तिर्निरूप्यते'॥

(ख) अनाहत नाद –

अन + आहत अनाहत। अर्थात् वह ध्वनि जो किसी घर्षणादि के बगैर उत्पन्न हो। इस नाद को मुक्ति दायक माना गया है, जिसे सुना नहीं – मात्र अनुभव किया जा सकता है। कुछ लोगों के मतानुसार अनाहत नाद संगीतोपयोगी नहीं है। स्थूल रूप से देखने पर तो यह बात सच लगती है। किन्तु श्रेष्ठ संगीतज्ञ वही बन सकता है जिसे अनाहत नाद सुनाई दे, जिसे अनाहत नाद का ज्ञान हो। इस नाद को ऋषि-मुनियों, योगियों और श्रेष्ठ संगीतज्ञों ने अपनी आध्यात्मिक गहराइयों के कारण बार-बार अनुभव किया है... और....किया है इसका बखान... गुणगान। जब भी कोई साधक अपनी साधना की गहरायी में जाकर समाधि की अवस्था में पहुँचता है, तो वहाँ उसके शरीर में स्थित सात यौगिक चक्रों से सात स्वरों की गुंजार, हृदय की गहराइयों में स्पष्ट रूप से सुनाई देती है। अन्तरात्मा की इसी आवाज से प्रेरणा पाकर भिन्न-भिन्न वाद्य यन्त्रों और स्वर लहरियों का जन्म हुआ। इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि अनाहत नाद की संगीत में कोई उपयोगिता नहीं है। क्योंकि स्थूल रूप से अश्रव्य होने के बावजूद उसी की धुरी पर टिके हैं, आहत नाद के समस्त आविष्कार।सन्त संगीतज्ञा मीरा ने इस अनाहत अर्थात् अनहद नाद को किया था। तभी तो उन्होंने लिखा-

होली खेल मना रेफागुन के दिन चार।...

सुना और अनुभव बिन कर ताल पखावज बाजेअनहद की झनकार। ,

बिन सुर राग छत्तीसो गावेफागुन के दिन चार। ...रोम रंगसार-रोम ,

- संगीत -

'संगीत' शब्द की रचना 'गीत' शब्द के पूर्व 'सम्' प्रत्यय जोड़कर की गयी है। सम् का अर्थ होता है सम्यक्-अर्थात् सम्पूर्ण रूप में इसलिए, संगीत को सम्यक् रूपेण सुशोभित गीत भी कहा जाता है। सम्यक् रूप से सुशोभित गीत का अर्थ हुआ – वह गीत-जिसे वादन और नर्त्तन द्वारा सम्पूर्णता प्रदान की गयी हो। इस प्रकार, जब किसी गीत की उपयुक्त ताल वाद्य पर संगति की जाए, और साथ ही उस पर भाव भी प्रदर्शित किया जाए तो उसे संगीत कहा जाता है।

इसी को आचार्य भरत ने भरत नाट्य शास्त्र में

'गीतम् वाद्यम् तथा नृत्तम् त्रयम् संगीत मुच्यतेः' कहकर स्पष्ट किया है। बाद में शारंगदेव ने भी 'संगीत रत्नाकर' में संगीत की परिभाषा इस प्रकार दी –

'गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं त्रयम् संगीत मुच्यतेः' अर्थात् गायन, वादन और नृत्य के मेल को संगीत कहते हैं।

ऊपर वर्णित 'संगीत' की दोनों ही परिभाषाएँ-सम्यक् रूपेण सुशोभित गीत और गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं संगीत त्रयम् मुच्यते-मूलतः समानार्थी हैं, और ये दोनों एक ही भावना को सुदृढ़ करते हैं कि संगीत में गायन, वादन और नर्त्तन-तीनों ही धाराओं का समावेश होता है। इन दिनों-संगीत-नृत्य जैसा एक शब्द सांगीतिक केन्द्रों में तेजी से प्रचलित हो रहा है, जो इस ओर संकेत करता है कि संगीत के अन्तर्गत केवल गायन और वादन आता है, और नर्तन की कला इनसे पृथक है। लेकिन, यह उचित नहीं है। संगीत को पूर्णता तभी प्राप्त होती है, जब उसमें तीनों ही तत्वों का समावेश होता है।

- ताल -

जिस प्रकार अनुशासन और सामाजिक नियमों, प्रतिबन्धों का हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, उसी तरह ताल का संगीत में। ताल संगीत को अनियन्त्रित होने से रोककर उसे एक निश्चित समय सीमा में बाँधता है। संगीत रूपी मदमस्त हाथी को नियन्त्रित करने के लिए ताल अंकुश की भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से ही संगीत को एक निश्चित समय सीमा, परिधि में बाँध पाना सम्भव हो पाता है। यह संगीत में व्यतीत हो रहे समय को मापने का वह महत्त्वपूर्ण साधन है, जो भिन्न-भिन्न मात्राओं, विभागों, तालियों और खालियों के योग से बनता है।

ताल शब्द की उत्पत्ति तल धातु से हुई है-जिसे आधार और भित्ति भी कहा जाता है, इसीलिए ताल की गणना संगीत के आधार भूत तत्वों में होती है।

ताल शब्दस्यनिष्पत्तिःप्रतिष्ठार्थेनधातुना।

\- गीतं, वाद्यं च नृत्यं च भाति ताले प्रतिष्ठितम्।

\- और, तालस्तल प्रतिष्ठायामिति धातोधञि स्मृतः

\- गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।

संगीत का मुख्य उद्देश्य आनन्द है, और इस आनन्द की सृष्टि ताल के विनाअसम्भव है, क्योंकि ताल प्रमाण में बँधकर ही संगीत श्रवण प्रिय हो पाता है। स्वर रूपी पुष्पों को जब ताल रूपी धागे में पिरोया जाता है तो उसकी शोभा द्विगुणित हो जाती है। उसमें चार चाँद लग जाते हैं। तबला और पखावज जैसे ताल वाद्यों का तो निर्माण ही ताल की रक्षा के लिए हुआ है। इसमें प्रयुक्त सभी बोल, रचनाएँ किसी-न-किसी ताल में निबद्ध होते हैं, चाहे वह कायदा, रेला, टुकड़ा, तिहाई, गत, फ़र्द कुछ भी क्यों न हो ? और न केवल तबला, पखावज जैसे ताल वाद्य बल्कि गायन, तन्त्र एवं सुषिर वाद्य और नृत्य सभी ताल की बुनियाद पर टिके होते हैं। इनके अनेक महत्त्वपूर्ण अंश ताल प्रधान होते हैं। इसीलिए कहा गया है कि-

यस्तु ताल न जानाति, गायको न च वादकः

\- तस्मात् सवपयतनेन कार्यम्तालावधारणम्

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि न केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत बल्कि सुगम, लोक और फिल्म संगीत में भी ताल की प्रधानता होती है। यह भी ध्यातव्य है कि भारतीय संगीत में शुरू से ही तालों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, जबकि पाश्चात्य संगीत में तालों की नहीं, लय प्रकारों की भूमिका होती है। भारतीय संगीत मनीषियों की दृष्टि से ताल विहीन अनिबद्ध संगीत आरण्यक संगीत है, तथा तालबद्ध संगीत सामाजिक संगीत। संगीत में व्यक्त किए जा रहे भिन्न-भिन्न भावों और रसों की निष्पत्ति में ताल एवं उसके गतियों की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण होती है। संगीत रत्नाकर, और नारदार्थरागमाला के अनुसार, जिस प्रकार शरीर में मुख और मुख में नासिका की प्रधानता होती है, उसी प्रकार संगीत में ताल की प्रधानता होती है।

'मुख- प्रधान –देहस्य नासिका मुख-मध्य के,

\- तालहीनं तथा गीतंनासाहीनं मुख यथा'।

'भक्ति रत्नाकर' के रचनाकार श्री नरहरि चक्रवर्ती की दृष्टि में ताल विहीन संगीत अशुद्ध और बिना पतवार के नाव जैसी होती है-

गीतेतालयुक्त ताल बिना शुद्धि नय।

\- जैसे कर्णधार बिना नौका तैछे हय।

किसी भी ताल का निर्माण अनेक मात्राओं, ताली, खाली एवं विभागों के संयोग से होता है। लय रक्त की तरह है, मात्रा नाड़ी और ताली, खाली अंगों की तरह होता है। लय रक्त की तरह है , मात्रा नाड़ी, और ताली, खाली अंगो कि तरह

लय शोणित रूपेण, मात्रा नाड़ी स्वरूपतः

\- घाता अवयवाश्चैव तालों वै पुरुषाकृतिः

संगीत विषयक प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख है कि ब्रह्मादि देवताओं एवं ऋषि भरत और उनके 100 पुत्रों आदि ने भगवान शंकर के समक्ष जिस संगीत का प्रदर्शन किया, उसे 'मार्ग संगीत' कहा गया, एवं उसमें 'पंच मार्ग तालों' के प्रयोग हुए थे। मार्ग तालों से बाद में देशी तालों की रचना हुई। मार्ग और देशी तालों के अन्तर को इस प्रकार समझा जा सकता है -

स्वर्गेमार्गाश्रितंदेश्याश्रितंभूतलरंजकम्

अर्थात् मार्ग तालों की रचना स्वर्ग एवं देशी तालों की भूतल के निवासियों के रंजन हेतु की गयी है। देश की भिन्न-भिन्न ऋतुओं और अलग-अलग प्रदेशों की स्थानीय संस्कृति के आधार पर जिस संगीत का प्रचार-प्रसार हुआ, उसे देशी संगीत कहा गया। मार्ग तालों के आधार पर रचित देशी तालों की 3 जातियाँ मानी गयी हैं –

शुद्ध ताल – जिसमें किसी भी अन्य ताल का प्रभाव न हो।

सालग ताल - वह ताल जिसकी रचना दो भिन्न तालों के आधार पर हुई हो।

संकीर्ण ताल - वे ताल जो कई तालों के संयोग से बने हों, और जिनमें कई तालों की छाया दिखलाई पड़ती हो।

उदाहरण के लिए हिन्दुस्तानी संगीत के सर्वाधिक प्रचलित तीनताल (त्रिताल) को नीचे लिखा जा रहा है-

धा	धिं	धिं	धा	।	धा	धिं	धिं	धा	।	धा	तिं	तिं	ता	।	ता	धिं	धिं	धा	।	धा
X					2					0					3					X

3.3.1 सम और मात्रा का परिचय

- सम -

'सम' किसी भी ताल का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थल होता है। यही वह स्थान है, जहाँ गायक, वादक और नर्त्तक अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने के बाद प्रायः आपस में आकर मिलते हैं, और फिर अपनी अगली रचना प्रस्तुत करने के लिए अलग हो जाते हैं। यद्यपि यह अनिवार्य नहीं है। फिर भी सांगीतिक विधाओं की अधिकांश रचनाएँ सम से ही आरम्भ होती हैं, और सम पर ही समाप्त होती हैं। अपवाद स्वरूप कुछ रचनाएँ मुखड़े से भी आरम्भ और मुखड़े पर भी समाप्त होती हैं।

सम किसी भी ताल के प्रथम मात्रा को कहते हैं, और अपवाद स्वरूप रूपक ताल को छोड़ दें तो सम पर प्रायः ताली ही होती है। और, इसीलिए ताल की अन्य मात्राओं की अपेक्षा इस मात्रा पर अधिक बल दिया जाता है। इसे अधिक जोर से बजाया जाता है। वैसे तो सम ताल की प्रथम मात्रा पर ही होता है, किन्तु संगीत में चमत्कार उत्पन्न करने की दृष्टि से मूल सम (पहली मात्रा) से कुछ पहले और कुछ बाद भी यदा-कदा सम का भ्रम उत्पन्न किया जाता है। इन दोनों को सम न कहकर विषम कहा जाता है। मूल सम के पूर्व जब सम का भ्रम उत्पन्न किया जाता है तो उसे अनागत (अनाघात) सम कहते हैं, और मूल सम के बाद जब सम का भ्रम उत्पन्न किया जाता है, तो उसे अतीत सम कहते हैं, ऐसे सम एक मात्रे से कम के अन्तराल पर होते हैं। सम के अतीत और अनागत प्रकारों की संगीत शास्त्रों में चर्चा करते हुए इन्हें शास्त्रीय मान्यता दी गयी है।

किन्तु चमत्कार के लोभ में पड़कर कुछ कलाकार सम की अवहेलना भी कर जाते हैं। ये कलाकार अपने साथी कलाकार के साथ नोंक-झोंक करते हुए उसे भ्रम में डालने हेतु मूल सम-अर्थात् प्रथम मात्रा को छुपाकर, दूसरी जगहों पर जोर देकर, वहाँ सम का भ्रम उत्पन्न करने का प्रयास उत्पन्न करते हैं। यद्यपि शास्त्रीय दृष्टि से यह उचित नहीं है, फिर भी मंचीय चमत्कार की दृष्टि से यदा-कदा इसे स्वीकार किया जा सकता है। किन्तु बार-बार सम की हत्या निश्चय ही उचित नहीं है। सम का अपना विशेष महत्त्व होता है, और उस महत्त्व को महत्त्व न देना, अनदेखा करना उचित नहीं होगा। गायक, वादक और नर्त्तक अपनी रचनाओं के प्रदर्शन के समय भी आने वाले सम के प्रति सचेत रहते हैं। क्योंकि उन्हें वहीं दूसरे साथी कलाकारों से मिलना होता है। ऐसे में अगर बार-बार सम छिपा लिया जाए तो कलाकार के लिए असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। फलस्वरूप उसका सारा ध्यान असली सम की खोज पर केन्द्रित हो जाता है, और वह अपनी रचनागत प्रतिभा का पूरा परिचय नहीं दे पाता है।

उल्लेखनीय है कि अतीत और अनागत का अपना महत्त्व होता है। ऐसी रचनाओं का निर्माण आसान नहीं है, जो 2 मात्राओं के बीच में भी अलग-अलग स्थानों पर समाप्त हों। अतः सम की हत्या अलग बात है, और अतीत तथा अनागत का प्रदर्शन अलग। तीन ताल में अनागत रचनाओं का निर्माण करने हेतु सोलह और एक मात्रे के बीच सवा सोलह, साढ़े सोलह और पौने सत्रह की रचनाएँ बनानी होंगी। विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा रचित ताल पद्धति में सम के लिए + या × का प्रयोग किया जाता है, जबकि विष्णु दिगंबर पलुस्कर ताल पद्धति में सम स्थान के नीचे मात्रा संख्या लिखा जाता है, जो निश्चित रूप से 1 होती है।

उदाहरण के लिए झपताल को दोनों ताल पद्धतियों में लिखकर सम दिखलाया जा रहा है –

भातखंडे पद्धति

1	2		3	4	5		6	7		8	9	10		
धि	ना	1	धि	धि	ना	1	ति	ना	1	धि	धि	ना	1	धि
X			2				0			3				X

पलुस्कर पद्धति

1	2		3	4	5		6	7		8	9	10		
धि	ना	1	धि	धि	ना	1	ति	ना	1	धि	धि	ना	1	धि
1			3				+			8				1

- मात्रा –

संगीत में व्यतीत हो रहे समय को मापने का साधन ताल है, और मात्रा उसकी सबसे छोटी इकाई अथवा पैमाना। इस प्रकार कहा जा सकता है कि संगीत में व्यतीत हो रहे समय को मापने की सबसे छोटी इकाई अथवा पैमाने को मात्रा कहा जाता है। जिस प्रकार रुपए में पैसा, घण्टे में मिनट में और मीटर में सेण्टीमीटर होते हैं, उसी प्रकार ताल में मात्रा।

एक मात्रा काल की अवधि कितनी होती है-इस विषय में अलग-अलग विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। प्राचीन संगीत मनीषियों के अनुसार एक-दूसरे के ऊपर रखे हुए सौ कमल पत्रों में एक सुई से छिद्र करने में जितना समय लगता है-वह एक मात्रा होता है। भरत नाट्य शास्त्र के अनुसार मनुष्य की पाँच बार पलक गिरने की अवधि (पंच निमेष) एक मात्रा काल कहलाती है। पक्षियों की आवाज से भी प्राचीन काल में मात्रा काल का अनुमान लगाया जाता था-

चाषस्तु वदते मात्राम् द्विमात्रां वायसोऽव्रतीत।
शिखी त्रिमात्री विज्ञेय एष मात्रा परिग्रहः।

अर्थात्-नीलकंठ पक्षी का शब्द एक मात्रा, कौवे का दो मात्रा तथा मयूर का तीन मात्रे के बराबर माना जाता है-मात्राओं पर विचार करते समय लय को ध्यान में रखना जरूरी है। भिन्न-भिन्न लयों में मात्रा की अवधि अलग-अलग होती है। उत्तर भारतीय संगीत में मात्राओं की अवधि के विषय में कोई सर्वमान्य नियम नहीं। फिर भी मध्य लय की एक मात्रा सामान्यतः एक सेकेण्ड के बराबर होती है।

उत्तर भारत के भातखंडे ताल पद्धति में एक मात्रे का संकेत (अर्द्धचंद्र) होता है। एक मात्रे में जितने बोल या वर्ण होते हैं। उन्हें एक अर्द्धचंद्र में घेर देते हैं। जैसे धागे, नगीन तिरकिट आदि।

लेकिन, विष्णुदिगंबर पलुस्कर ताल पद्धति में द्रुत (आधा मात्रा) और अणु द्रुत (चौथायी मात्रा) के भी संकेत चिन्ह उपलब्ध हैं। यद्यपि इसका प्रचार अपेक्षाकृत कम है। द्रुत के लिए बोल के नीचे 0 प्रयोग होता है। जैसे धा गे। अर्थात् दोनों ही आधी-आधी मात्रा के बोल हैं। इसी प्रकार अणु द्रुत अर्थात् चौथाई मात्रा के लिए बोल के नीचे दो अर्द्धचंद्र का प्रयोग होता है। जैसे -ति र कि ट।

विष्णु दिगंबर ताल पद्धति में मात्रा और उसके छोटे अंशों के चिन्ह इस प्रकार हैं –

1 मात्रे का चिह्न	जैसे धा
2 मात्रे का चिह्न	जैसे धाधा
½ मात्रे का चिह्न	जैसे ते टे
¼ मात्रे का चिह्न	जैसे ति र कि ट
1/8 मात्रे का चिह	जैसे ते टे क त ग दि ग न
1/3 मात्रे का चिह्न	जैसे धा गी न
1/6 मात्रे का चिह्न	जैसे त कि ट धी कि ट आदि।

3.3.2 ताली और खाली का परिचय

- ताली -

जब किसी ताल को अलग-अलग विभागों में बाँट दिया जाता है, तो उन विभागों की पहचान के लिए दो अलग-अलग क्रियाओं का सहारा लिया जाता है, इसमें सशब्द क्रिया को साधारण बोलचाल की भाषा में ताली या आघात कहते हैं। बोलों का पढ़न्त करते समय ताली के स्थानों पर दोनों हथेलियों के संयोग से एक ध्वनि उत्पन्न की जाती है, इसीलिए इसका नामकरण सशब्द क्रिया, ताली या आघात हुआ। ताली वाले स्थानों पर प्रायः सबल बोलों (धा, धीं) आदि का ही प्रयोग होता है, किन्तु कुछ अपवाद भी निश्चित रूप से हैं-जैसे धमार और रूपक आदि।

भातखंडे ताल पद्धति में ताल की पहली मात्रा - जिसे सम कहते हैं, और जिस पर अनिवार्य रूप से ताली होती है (अपवाद-रूपक) के संकेत के लिए + या × चिह्न का प्रयोग होता है, शेष तालियों के लिए ताली संख्या 2, 3, 4, 5 आदि लिखा जाता है, जबकि विष्णु दिगंबर ताल पद्धति में जिस मात्रा पर ताली होती है, वहां मात्रा संख्या लिखी जाती है। उदाहरण के लिए तीनताल को दोनों ताल लिपियों में क्रमशः इस प्रकार लिखा जाएगा।

भातखंडेताललिपि पद्धति में तीनताल –

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	।	धा	धिं	धिं	धा	।	धा	तिं	तिं	ता	।	धा	धिं	धिं	धा
X					2					0					3			

तीनताल-पलुस्कर ताल पद्धति में -

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16		
धा	धिं	धिं	धा	।	धा	धिं	धिं	धा	।	धा	तिं	तिं	ता	।	ता	धिं	धिं	धा	।	धा
1					5					+					13					X

भरत नाट्य शास्त्र में सशब्द क्रिया कि 4 प्रकारों का उल्लेख किया गया है। यद्यपि इन प्रकारों का प्रचलन आज नहीं है, फिर भी संगीत के विद्यार्थियों के लिए इन्हें जान लेना उचित होगा। इनके नाम इस प्रकार है-ध्रुव, शम्पा, ताल और सन्निपात। ये अलग-अलग ताल विभागों को स्पष्ट करते थे कि यह पहली, यह दूसरी, यह तीसरी और यह चौथी ताली है।

- खाली –

खाली अर्थात् रिक्त। ताल के भिन्न-भिन्न मात्राओं की पहचान हेतु उन्हें अलग-अलग विभागों में बाँटकर उन पर ताली और खाली प्रदर्शित की जाती है। खाली का भाव प्रदर्शित करने हेतु दोनों हाथों को हिलाकर शून्य का भाव बोध कराया जाता है। यह प्रायः ताल के मध्य में होती है। जैसे तीनताल में 9वीं, झपताल में 6वीं और कहरवा में 5वीं मात्रा पर। लेकिन, कुछ तालों में ऐसा नहीं भी होता है।

किसी भी ताल के जिस मात्रा या विभाग में खाली होती है, वहाँ प्रायः बन्द और इकहरे बोल प्रयुक्त होते हैं। जैसे तीनताल में धा तिं तिं ता, दादरा में धा तू ना, कहरवा में न क धे न, झपताल में ती ना, धमार में ग ते टे और झूमरा में तिं ऽता तिरकिट आदि। फिर भी इस नियम का बहुत कठोरता से पालन नहीं होता आधुनिक तालों में।
खाली को निःशब्द क्रिया भी कहते हैं। दक्षिण भारतीय ताल पद्धति में इसके लिए विसर्जितम् शब्द का प्रयोग किया जाता है, किन्तु उत्तर भारतीय तालों की तरह वहाँ खाली का कोई पृथक विभाग नहीं होता, बल्कि जिन मात्राओं पर तालियाँ नहीं होती हैं, उन सबको खाली अर्थात् विसर्जितम् के अन्तर्गत रखते हैं।
भातखंडे ताल पद्धति में खाली का चिन्ह 0 है, जबकि पलुस्कर ताल पद्धति में + या X

झपताल–पलुस्कर ताल पद्धति में-

1	2		3	4	5		6	7		8	9	10		
धि	ना	।	धि	धि	ना	।	ती	ना	।	धि	धि	ना	।	धि
1			3				+			8				1

तीनताल- भातखंडे ताल पद्धति में-

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	।	धा	धिं	धिं	धा	।	धा	तिं	तिं	ता	।	धा	धिं	धिं	धा
X					2					0					3			

खाली के सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में खाली के दो लगातार विभाग नहीं होते।

3.3.3 विभाग, ठेका और बोल का परिचय

- विभाग (खण्ड) –

किसी भी ताल की मात्रा और स्थान विशेष को पहचानने की सुविधा के लिए उसे अलग-अलग खण्डों, विभागों में बाँट दिया जाता है। किसी भी ताल के कुल तालियों, खालियों के योग के बराबर उस ताल के विभागों की संख्या होती है। अर्थात् हर विभाग एक नए ताली, खाली का सूचक होता है। उदाहरण के लिए तीनताल में 3 तालियाँ और 1 खाली है, अतः उसमें 4 विभाग हुए। इसी प्रकार एकताल में 4 तालियाँ और 2 खालियाँ हैं, अतः इसके विभागों की संख्या 6 है।

विभागों के मुख्यतः 4 प्रकार माने गए हैं, जिन्हें 'अंग चतुष्टय' कहा जाता है। इसमें 2, 3, 4 और 5 मात्राओं के विभाग होते हैं। आजकल कई ऐसे ताल भी प्रचार में हैं जिसमें 1-1 मात्राओं के विभाग हैं। लेकिन, विद्वानों की मान्यता है। कि कम-से-कम 2 मात्रा और अधिक-से-अधिक 5 मात्राओं के विभाग होने चाहिए। 5 मात्राओं के विभाग वाला सिर्फ धमार ताल प्रचार में है। जिसका प्रथम विभाग 5 मात्राओं का है। 2 मात्राओं के विभाग के एकताल, चौताल, सूलताल, आड़ा चारताल जैसे अनेक ताल प्रचार में हैं। 3 मात्राओं के विभाग वाले तालों में दादरा की और 4 मात्राओं के विभागों वाले तालों में कहरवा और त्रिताल आदि की गणना की जा सकती है। झपताल, रूपक, धमार, गजझंपा, पंचम सवारी और शिखर आदि कई ऐसे ताल भी हैं, जिनके विभाग अलग-अलग मात्राओं के हैं। जैसे झपताल का विभाग 2/3/2/3 मात्राओं का है, रूपक 3/2/2 मात्राओं का, धमार का 5/2/3/4 मात्राओं का, गजझंपा का 4/4/3/4 मात्राओं का, पंचम सवारी का 3/4/4/4 मात्राओं का और शिखर का 4/4/3/2/4 मात्राओं का।

अंग चतुष्टय अर्थात् विभागों के इन चारों प्रकारों का संकेत निम्नवत हैं –

(1) गुरु = = 2 मात्रा,

(2) तिस्र = = 3 मात्रा,

(3) चतस्त्र X = 4 मात्रा, और

(4) खण्ड 'X' 5 मात्रा।

- ठेका –

संगीत को एक निश्चित स्वरूप देने में ताल की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, और इन तालों को उनके ठेका द्वारा पहचाना जाता है। ठेका उत्तर भारतीय संगीत की वह विशेषता है, जो अन्य संगीत शैलियों में लगभग नहीं के बराबर पायी जाती है। किसी भी ताल का वह मूल बोल जिसके द्वारा उस ताल को पहचाना जाता है, उस ताल का ठेका कहलाता है। उल्लेखनीय है कि पाश्चात्य या दक्षिण भारतीय संगीत शैलियों में भिन्न-भिन्न तालों को उनकी मात्रा संख्या और गति प्रकार के द्वारा पहचाना जाता है। किन्तु मात्रा और गति प्रकार के अलावा उत्तर भारतीय संगीत की एक प्रमुख विशेषता उस ताल का ठेका भी होता है। इस ठेके की रचना उस ताल की प्रकृति, गति प्रकार और ताली, खाली, विभाग आदि को ध्यान में रखकर की जाती है।

जैसे झपताल की गति क्रमशः 2/3/2/3 की है, तो इसका ठेका है –

1	2		3	4	5		6	7		8	9	10		
धि	ना	1	धि	धि	ना	1	ति	ना	1	धि	धि	ना	1	धि
X			2				0			3				X

लेकिन, 10 मात्रे का ही एक अन्य ताल है - सूलताल - जिसका खंड क्रमशः 2/2/2/2/2 का है, इसलिए इसका ठेका इस प्रकार है-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	
धा	धा ।	दीं	ता ।	किट	धा ।	तिट	कत ।	गदि	गन ।	धा
X		0		2		3		0		X

और, दादरा का ठेका –

1	2	3		4	5	6		
धा	धी	ना	।	धा	ती	ना	।	धा
X				0				X

तात्पर्य यह कि ताल का ठेका इस प्रकार का हो कि वह ताल के विभाग और ताली, खाली को स्पष्ट रूप से निरूपित करे, जिस स्थान पर खाली हो, वहाँ बन्द या निर्बल बोल प्रयुक्त हों। खाली के मात्रे पर नहीं, तो उस विभाग में बन्द बोलों का प्रयोग आवश्यक रूप से होना चाहिए। जैसे झपताल में 6वीं मात्रा पर खाली है तो वहाँ ती वर्ण का प्रयोग हुआ है। धमार की 8वीं मात्रा पर खाली है, और वहाँ ग वर्ण प्रयुक्त हुआ है। यद्यपि एकताल की प्रथम खाली तीसरी मात्रा पर है, और वहाँ धा वर्ण का प्रयोग हुआ है जो सबल वर्ण है किन्तु उसके बाद ग और तिरकिट वर्ण प्रयुक्त हुआ है जो निर्बल वर्ण है। और अगली खाली पर कत्ता वर्ण प्रयुक्त हुआ है, जो स्पष्टतया निर्बल वर्ण है।

ठेकों के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी उल्लेखनीय है कि इसका प्रचलन सम्भवतः मध्य युग में आरम्भ हुआ। प्राचीन काल में मात्र गति प्रकारों (छन्द) के आधार पर संगति की जाती थी। अभी तक प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पुष्कर वाद्य के निर्माण के साथ ही ठेके का प्रचलन शुरू हुआ होगा। क्योंकि यह पहला वाद्य था, जिसमें भिन्न-भिन्न वर्गों के निकास की स्पष्ट व्यवस्था थी, क्योंकि इसे हाथ से बजाया जाता था। यद्यपि उत्तर भारतीय तालों के ठेकों में कुछ विरोधाभास स्पष्ट रूप से दिखते हैं। कुछ अति प्रमुख और प्रचलित तालों को छोड़ दिया जाए तो कई तालों के कई-कई ठेके प्रचार में हैं। और, इससे नव संगीतार्थियों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बेहतर होगा कि संगीतज्ञों की एक विशेषज्ञ समिति बैठकर इन तालों का एक निश्चित ठेका सुनिश्चित करे।

प्रस्तुत है तीवरा ताल का ठेका –

1	2	3		4	5		6	7		
धा	दीं	ता	।	तिट	कत	।	गदि	गन	।	धा
X				2			3			X

- बोल –

तबला या पखावज पर बजाए जाने वाले किसी भी वर्ण समूह को बोल कहते हैं। टुकड़ा परण कायदा पलटा या तिहाई सभी बोल कहलाते हैं। वर्ण समूह चाहे जोरदार हो या मुलायम सभी बोल हैं, किसी भी ताल का ठेका भी बोल कहलाएगा। यह बहुत प्रचलित शब्द है।

3.3.4 पेशकार, कायदा पेशकार और तिहाई का परिचय

पेशकार – –

जिस प्रकार अदालतों में मुकदमों के कागजों को रखने और समय पर हाकिम के सामने पेश करनेवाले को पेशकार कहते हैं, ठीक उसी प्रकार जब आप कोई ताल बजाना चाहते हैं, तो उसी के ठेके के रूप के बोलों के अनुसार एक कठिन कायदे की रचना की जाती है। यह रचना बढ़ी हुई लय में नहीं बजाई जाती। इसकी चाल प्रायः डगमगाती हुई रखते हैं। इसी लिए मध्य लय में ही इस चाल का विशेष आनंद है। इस कायदे के पलटे भी बनाए जाते हैं। परन्तु कायदे की भाँति इनमें अधिक बन्धन नहीं होता। इस प्रकार ठेके के विभागों का ध्यान रखते हुए जब यह प्रदर्शित

किया जाता है कि हम अमुक ताल बजा रहे हैं और हाथ की सफाई, लयकारी, तैयारी दिखाना चाहते हैं, तो इस क्रिया को 'पेशकार' कहते हैं। संक्षेप में यों समझिए कि जिस प्रकार गायक गीत से पूर्व राग का आलाप करते हैं, उसी प्रकार तबला वादन में यह क्रम सर्वप्रथम आता है। इसे बजाने के उपरांत ही कायदे, रेले, गर्तें, परने आदि बजाए जाते हैं। इस वादन का सुन्दरतम रूप दिल्ली और अजराड़ा घरानों में बहुतायत से मिलता है। यों तो कुछ लोग पूरव बाज में भी पेश- कार बजाते हैं, परंतु वह दिल्ली और अजराड़ा की भाँति सुन्दर नहीं लगता। बनारस के तबला वादक तो प्रायः उठान से और फिर चाला सो ही तबला वादन प्रारंभ करते हैं।

पेशकार में प्रायः 'धीकृ धिंता' बोल की बहुतायत रहती है ;

जैसे -

धीकृ धिंधा धा धिंधा। धाती धाती धाधा धिंधा। तीकृ तिंता ता तिंता। धाती धाती धाधा धिंधा।

अथवा - धाग धाती धाधा धिंधा। धाती धाती धाधा तिंता। ताग ताती ताता तिंता। धाती धाती धाधा धिंधा।

अथवा - धीकृ धिंधा तिरकिट धिंधा। धाती धाती धाधा धिंधा। तीकृ तिंता तिरकिट तिंता। धाती धाती धाधा धिंधा।

– कायदा-पेशकार –

जब पेशकार में कायदे की भाँति के बोल आएँ और उनकी बढ़त भी हो सके, तो ऐसी रचना को 'कायदा - पेशकार' कहते हैं; जैसे :-

धाती धाधा तीना धाती। धाकिड़ धाती धाधा तीना। ताती ताता तीना ताती। धाकिड़ धाती धाधा तीना

अब कायदे के अनुसार इसकी बढ़त देखिए :-

धाती धाधा तीना धाती। धाकड़ धाती धाधा तीना । तीना किड़धा तीना धाती। धाकिड़ धाती तीना। तीना। धाधा तीना। धाधा तीना। ताती ताता तीना ताती। ताकिड़ ताती ताता तीना। तीधा कडधा तीना धाती। धाकिड धाती धाधा तीना।

– तिहाई –

कुछ बोलो कि वह समूह जिसे तीन बार बराबर बराबर बजाकर सम पर आते हैं उसे तिहाई कहते हैं। तिहा या तिहाई दो प्रकार की होती है। 1 दमदार जिसके बीच में दम हो। 2 बेदम जिसके बीच में दम ना हो। तिहाई से गायन वादन अथवा नृत्य में खूबसूरती आती है सुनने वालों को भी तिहाई से बड़ा आनंद मिलता है लगभग हर कायदा तिहाई से समाप्त होता है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 नाद के कितने प्रकार माने गए है?

क) 2

ख) 8

ग) 5

घ) 16

3.2 'गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं त्रयम् संगीत मुच्यतेः' किसने कहा है ?

क) कोलाहल

ख) आचार्य भरत

ग) दलितं

घ) डॉ. राजीव शर्मा

3.3 संगीत में कितनी धाराओं का समावेश होता है?

क)8

ख) 11

ग) 3

घ) 1

3.4 संगीत में व्यतीत हो रहे समय को मापने का महत्त्वपूर्ण साधन है?

क) टुकडा

ख) मोहरा

ग) गन

घ) ताल

3.5 ताल शब्द की उत्पत्ति किस धातु से हुई है है?

क) तल

ख) सोना

ग) पीतल

घ) जल

3.6 ताल की रक्षा के लिए किस वाद्य हुआ है ?

क) बांसुरी

ख) पखावज

ग) सितार

घ) वायोलिन

3.7 किसी भी ताल का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थल होता है?

क) ताली

ख) टुकड़ा

ग) सम

घ) तबला

3.8 सम कोंसी मात्रा पे होता है ?

क) खाली

ख) दूसरी

ग) आखरी

घ) पहली

3.9 भातखंडे ताल पद्धति में खाली का चिन्ह है ?

क) 2

ख) X

ग) +

घ) 0

3.10 कुछ बोलो कि वह समूह जिसे तीन बार बराबर बराबर बजाकर सम पर आते हैं उसे तिहाई कहते हैं ?

क) सही

ख) गलत

3.4 सारांश

शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत वादन के संदर्भ में, तबला के पारिभाषिक शब्द नाद, संगीत, ताल, सम, मात्रा,ताली, खाली, विभाग, ठेका, बोल, पेशकार, कायदा पेशकार, और तिहाई के बारे में जाना जाता है । शास्त्रीय संगीत में तालों के प्रस्तुतिकरण से पहले इन पारिभाषिक शब्दों की जानकारी से प्रस्तुतिकरण में सहायता मिलती है l

3.5 शब्दावली

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: क)

3.2 उत्तर: ख)

3.3 उत्तर: ग)

3.4 उत्तर: घ)

3.5 उत्तर: क)

3.6 उत्तर: ख)

3.7 उत्तर: ग)

3.8 उतर: घ)

3.9 उत्तर: घ)

3.10 उत्तर: क)

3.7 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

3.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. नाद क्या है संक्षिप्त में लिखिए ?

प्रश्न 2. संगीत क्या है संक्षिप्त में लिखिए ?

प्रश्न 3. सम और मात्रा क्या है विस्तार से समझाइये ?

प्रश्न 4. ताली और खाली में अंतर समझाइए?

प्रशन 5. पेशकार और कायदा पेशकार में अंतर समझाइये ?

इकाई -4
ताललिपि पद्धति
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	तालिलिपि पद्धति
4.3.1	भातखण्डे तालिलिपि-पद्धति
4.3.2	विष्णु दिगम्बर तालिलिपि-पद्धति
	स्वयं जांच अभ्यास1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में काललिपि पद्धति को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में काललिपि पद्धति विशेष रूप से होता है, । आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार भाथ्खंडे काललिपि पद्धतिका प्रयोग करते हैं। प्रस्तुत काललिपि पद्धति का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी काललिपि पद्धति को लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तालिपि पद्धति की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भातखंडे तालिपि पद्धति कि जानकारी देना।
- विष्णु दिगंबर पद्धति की जानकारी प्रदान करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकीपहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
-ताललिपि पद्धति को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भातखंडे तालिपि पद्धति को समझने में सक्षम होंगे।
- विष्णु दिगम्बर तालिपि पद्धति को लिखने और समझने में सक्षम होंगे
- तालिपि पद्धति के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 ताललिपि पद्धति

संगीत एक क्रिया प्रधान कला है। गायन, वादन और नृत्य संगीत के ये तीन अंग हैं। इन तीनों के कई प्रकार हैं। वादन में कुछ वाद्य स्वर-प्रधान हैं, जैसे सितार, सारंगी, हारमोनियम और कुछ वाद्य लय-ताल प्रधान हैं, जैसे तबला, पखावज, ढोलक, नगाड़ा आदि। इनके बोलों को लिखने की विधि को ताललिपि पद्धति कहते हैं। संगीत के इतिहास में अनेक ताल-लिपियों की रचना हुई और वे समाप्त हो गई; किन्तु वर्तमान समय में मुख्य दो ताललिपि पद्धतियाँ प्रचलित हैं। उनके नाम और विवरण नीचे दे रहे हैं :-

1. भातखण्डे ताललिपि-पद्धति।

2. विष्णु दिगम्बर ताललिपि-पद्धति।

4.3.1 भातखंडे काललिपि पद्धति

भातखण्डे काललिपिपद्धति-

इस काललिपि के रचयिता पंविष्णु नारायण भातखण्डे थे। यह पद्धति विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर . इसलिए इसका प्रचार दूसरी ,बनाई गई है पद्धति की तुलना में अधिक है। छपाई में भी यह पद्धति दूसरी की तुलना में सरल है। इसलिये वर्तमान समय में अधिकांश पुस्तकें भातखण्डे काललिपि में प्रकाशित हुई हैं। नीचे इसके चिन्ह दिये जा रहे हैं -

सम के लिये X

खाली के लिये 0

विभाग के लिये ।

ताली के लिये ,4 ,3 ,2आदि (ताली की संख्या)

एक मात्रा के लिये धा धा (कोई चिन्ह नहीं)

आधी मात्रा के लिये धाधा (एक चन्द्राकार में दो वर्ण)

चौथाई मात्रा के लिये तिरकिट (एक चन्द्राकार में चार वर्ण)

इसी तरह चन्द्राकार के सहारे कई वर्णों को एक मात्रा में लिखा जा सकता है।

दो या दो से अधिक मात्रा के लिये डैश लगाते हैं ,जैसे-

दो मात्रा धा -

तीन मात्रा धा- -

चार मात्रा धा- - -

भातखण्डेताललिपि में एकताल

धिं धिं । धागे तिरकिट । तू ना । क त्ता । धागे तिरकिट । धी ना ।

X 0 2 0 3 4

4.3.2 विष्णु दिगंबर ताललिपि पद्धति

विष्णु दिगम्बर ताललिपि पद्धति-

इस ताललिपि-पद्धति का नाम इसके रचयिता पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के नाम पर पड़ा। पं. विष्णु दिगम्बर अपने समय के बहुत अच्छे गायक थे। उन्होंने अनेक शिष्य तैयार किये। उनका ध्यान शुद्धता और वैज्ञानिकता पर अधिक था। उनकी ताललिपि पद्धति भी भातखण्डे ताललिपि की तुलना में अधिक विस्तृत, वैज्ञानिक, किन्तु क्लिष्ट है। इसलिये यह ताललिपि उच्च विद्यार्थियों के लिये अधिक उपयोगी है। आगे इसके चिन्ह दिये जा रहे हैं -

विष्णु दिगम्बर पद्धति के कुछ चिन्ह

1	सम	0	½ मात्रा
+	खाली	◡	¼ मात्रा
ऽ	दो मात्रा	◡◡	1/8 मात्रा
—	एक मात्रा	◡◡◡	1/16 मात्रा

ताली के लिये मात्रा की संख्या जैसे- 3, 8 आदि

इन चिन्हों को देखने से यह स्पष्ट है कि विष्णु दिगम्बर ताललिपि में प्रत्येक मारा और मात्रा-खंड के लिये चिन्ह दिये गये हैं, किन्तु विभाग का चिन्ह नहीं दिया गया है। एक आवर्तन समाप्त होने पर एक खड़ी रेखा खींचते हैं।

विष्णु दिगम्बर ताललिपि में झपताल

धी ना धी धी ना ती ना धी धी ना |

1 3 + 8

विष्णु दिगम्बर ताललिपि में एकताल

धिं धिं धा गे तिरकिट तू ना क त्ता धा गे तिरकिट धी ना ।

1 + 5 + 9 11 ।

तालस्तल प्रतिष्ठायामिति धातोर्धत्रि स्मृतः।

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम ॥

शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर -

अर्थात ताल शब्द की उत्पत्ति 'तल' धातु से हुई है जिसका अर्थप्रतिष्ठा धारण व स्थापना है। गायन, वादन और नर्तन ताल पर ही प्रतिष्ठित हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 वर्तमान समय में ताल की कितनी पध्तियाँ है?

क) 2

ख) 4

ग) 8

घ) 1

4.2 भातखंडेताललिपि पद्धति में सम का क्या चिन्ह है?

क)म

ख) x

ग) +

घ) 0

4.3 विष्णु दिगम्बर ताललिपि पढ़ती में खाली का क्या चिन्ह है?

क)1

ख) s

ग) x

घ) +

4.4 भातखंडे ताललिपि पद्धति में खाली का क्या चिन्ह है?

क)+

ख) I

ग) s

घ)कोई भी नहीं

4.4 सारांश

गायन, वादन और नृत्य संगीत के ये तीन अंग हैं। तबला के बोलों को लिखने की विधि को ताललिपि पद्धति कहते हैं। दो प्रचलित पद्धतियां भातखंडे ताललिपि पद्धति और विष्णु दिगम्बर ताललिपि पद्धति में प्रयोग होने वाले चिन्ह के माध्यम से लिखना ।

4.5 शब्दावली

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: क)

4.2 उत्तर: ख)

4.3 उत्तर: घ)

4.4 उत्तर: घ)

4.7 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

4.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्राव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. काललिपि पद्धति लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2भातखंडे काललिपि पद्धति को लिखकर समझाइये।

प्रश्न 3. विष्णु दिगम्बर काललिपि पद्धति को लिख कर समझाइये।

प्रश्न 4. भातखंडे और विष्णु दिगम्बर काललिपि पद्धति के चिन्ह में भिन्नता को लिखिए।

इकाई -5
तबले में लय और लयकारी
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	लय और लयकारी की परिभाषा
5.3.1	सीधी लय और टेढ़ि लय की जानकारी
5.3.2	आड़ लय की जानकारी
5.3.3	कुआड़ लय की जानकारी
5.3.4	बिआड़ की जानकारी
	स्वयं जांच अभ्यास1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में, लय और लयकारी को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में लय का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार लयकारी को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। लय और लकारी का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई गतें , परने ,टुकड़े इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लय और लयकारी को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से लयकारी से बने टुकड़े ,परने आदि बजा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- लय और लयकारी की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- आड़ , कुआड़ , बिआड़ लय को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- आड़, कुआड़ ,बिआड़ को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- लय और लयकारी के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- आड़ ,कुआड़ ,बिआड़ को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- आड़ ,कुआड़ ,बिआड़ को बजाने में सक्षम होंगे।
- लय और लयकारी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 लय और लयकारी की परिभाषा

-लय-

गाने-बजाने तथा नृत्य की गति अथवा चाल को लय कहते हैं। संगीत संसार में लय बहुत प्रकार की है, बल्कि लय पर पूरी सृष्टि कायम है। अगर लय पर पृथ्वी न रहे तो विनष्ट होने में जरा भी देरी न लगे, क्योंकि पृथ्वी की गति जरा भी बेलय हो जाय तो हो सकता है कि भूचाल आ जाय या दुनियाँ का कोई भाग या पूरा भाग नष्ट हो जाय। संगीत में मोटे तौर से लय के दो प्रकार हैं –

(१) सीधी लय और

(२) टेढ़ी लय।

-लयकारी-

थोड़ी देर तक एक लय में गाने-बजाने के बाद दुगुन, चौगुन, आड़ की लय दिखाने को लयकारी कहते हैं। इसका अर्थ है, पूर्व स्थापित लय से सबन्धित अन्य लय दिखाना।

5.3.1 सीधी लय और टेढ़ि लय की जानकारी

सीधी लय के अन्तर्गत लय तीन प्रकार की होती है –

(अ) विलम्बित लय

(ब) मध्य लय

(स) द्रुत लय।

विलम्बित लय-

उसे कहते हैं जिसकी चाल बहुत धीमी हो अर्थात् जिसमें एक मात्रा के बाद से दूसरी मात्रा के आने में काफी समय लगे।

मध्य लय-

वह है जो विलम्बित लय से तेज और द्रुत से धीमी हो अर्थात बीच की लय हो।

द्रुत लय-

वह है जिसकी चाल मध्य से तेज हो। लय चाहे जितनी भी तेज हो वह द्रुत लय कहलायेगी।

टेढ़ी लय के अन्तर्गत भी लय के मुख्य तीन प्रकार है –

(अ) आड़

(ब) कुआड़

(स) बिआड़

5.3.2 आड़ लय

आड़ या आड़ी–

यह दोनों समानार्थक हैं। यह लयकारी का एक प्रकार है। आड़ शब्द का अर्थ है वक्र, टेढ़ा या तिरछा और उसी से संगीत में आड़ी शब्द का प्रयोग हुआ है। आड़ी लय अपने में स्वतन्त्र नहीं है। यह दूसरी लय पर आधारित है। चतुर्मात्रिक छन्द को त्रिमात्रिक करने से छन्द वक्र हो जाता है और इसी से आड़ या आड़ी लय बनती है। अतः यह सापेक्ष है, क्योंकि चतुर्मात्रिक छन्द को स्वीकार करने के पश्चात् ही आड़ी छन्द का अस्तित्व होता है। दूसरे शब्दों में एक मात्रा में डेढ़ मात्रा, दो मात्रा में तीन मात्रा या चार मात्रा में 6 मात्रा करना आड़ी लय है, जिसे अंकों द्वारा हम इस प्रकार लिखेंगे -

1S2S3S 4S5 S6S

व्यापक अर्थ में किसी वक्र लयकारी को आड़ी लय कहा जा सकता है। अतः इसके अन्तर्गत कुआड़ी, बिआड़ी आदि की लयकारियाँ भी आती हैं। परन्तु विशेष प्रायोगिक अर्थ में डेढ़गुन को ही आड़ या आड़ी लय कहते हैं। सोलह मात्रा में बारह मात्रा करना पौनगुन, तो सोलह मात्रा में चौबीस मात्रा करना डेढ़ गुना या आड़ कहा जाता है।

रूपक ताल में आड़ –

1	2	3		4	5		6	7
ती	ती	SतीS	I	तीSना	SधीS	I	नाSधी	SनाS
0				2			3	

तीनताल की आड़ –

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12	
धा	धिं	धिं	धा	1	धा	SधाS	धिंSधिं	SधाS	1	धाSधिं	SधिंS	धाSधा	StिंS	1
X					2					0				

13	14	15	16
तिंSता	SताS	धिंSधिं	SधाS
3			

5.3.3 कुआड़ लय

कुआड़ अथवा कुआड़ी–

इन दोनों शब्दों में कोई अन्तर नहीं है। यह एक विशेष प्रकार की वक्र लयकारी है। इसके विषय में दो मत प्रचलित हैं।

एक- जब एक मात्रा काल में सवा मात्रा किया जाता है।

दो-जब एक मात्रा काल में सवा दो 2 से 1 / 4 किया जाता है, तो उसे कुआड़ या कुआड़ी की लयकारी कहते हैं। इन दोनों मतों को नीचे स्पष्ट किया जा रहा है।

प्रथम मत के अनुसार सवागुन अर्थात् 1 से ¼ या 5/4 गुन की लयकारी को कुआड़ की लयकारी कहते हैं। इसे अंकों द्वारा निम्न प्रकार से लिखेंगे-

S1SSS 2SSS3 SSS4S SS5SS S6SSS

S1SSS 2SSS3 SSS4S SS5SS S6SSS

दूसरे मत के अनुसार आड़ की आड़ अर्थात् सवा दो गुन 2 से ¼ या 9/4 की लयकारी को कुबाड़ की लयकारी कहते हैं। इसे अंकों द्वारा निम्न विधि से लिखेंगे-

1SSS2SSS3 SSS4SSS5S

SS6SSS7SS S8SSS9SSS

दादरा ताल की कुआड़ –

1	2	3		4	5	6
धा	Sधाsss	धीsssना	1	sssधाs	ssतीss	sनाsss
X				0		

5.3.4 विआड़ लय

बिआड़ की लयकारी–

इसे बिआड़ी भी कहते हैं। यह तिरछी या आड़ की लयकारी का एक विशेष प्रकार है। इस लयकारी के विषय में दो मत प्रचलित हैं

एक मत के अनुसार कुआड़ की आड़ को बिआड़ कहते हैं। अर्थात् 27/8

दो-पौने दो गुन की लयकारी अर्थात् 7/4 की लयकारी को बिआड़ की लयकारी कहते हैं। दोनों को क्रमशः अंकों द्वारा निम्न रीति से लिखा जायेगा-

ऽ1ऽऽऽऽऽऽऽ 2ऽऽऽऽऽऽऽ 3ऽऽऽऽऽऽऽ 4ऽऽ , ऽऽऽऽऽ 5ऽऽऽऽऽऽऽ 6ऽऽऽऽऽऽऽ 7ऽऽऽऽऽ ,
ऽऽ8ऽऽऽऽऽऽऽ9ऽऽऽऽऽऽऽ 10ऽऽऽऽऽऽऽ11 , ऽऽऽऽऽऽऽ 12ऽऽऽऽऽऽऽ 13ऽऽऽऽऽऽऽ 14ऽऽऽ ,
ऽऽऽऽ 15ऽऽऽऽऽऽऽ 16ऽऽऽऽऽऽऽ 17ऽऽऽऽऽऽ , ऽ18ऽऽऽऽऽऽऽ 19ऽऽऽऽऽऽऽ 20ऽऽऽऽऽऽऽ 21ऽ ,
ऽऽऽऽऽऽ22ऽऽऽऽऽऽऽ23ऽऽऽऽऽऽऽ24ऽऽऽऽ , ऽऽऽ 25ऽऽऽऽऽऽऽ 26ऽऽऽऽऽऽऽ 27 ऽऽऽऽऽऽऽ I

दूसरे मतानुसार-

1ऽऽऽ2ऽऽ ऽ3ऽऽऽ4ऽ

ऽऽ5ऽऽऽ6 ऽऽऽ7ऽऽऽ 1

दादरा ताल की बिआड़ –

1	2	3		4	5	6
धा	धी	SSSSधाSS	1	Sधी SSSनाS	SSधाSSSती	SSSनाSSS
X				0		

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 लय कितने प्रकार की होती है?

क) 2

ख) 3

ग) 5

घ) 7

5.2 सीधी लय के कितने प्रकार है?

क) 2

ख) 3

ग) 5

घ) 1

5.3 टेढ़ि लय के कितने प्रकार है?

क) 1

ख) 4

ग) 3

घ) 6

5.4 आड़ि लय किस लय पे आधारित है?

क) अपनी लय पे

ख) दूसरी लय पे

5.5 आड़ का मात्र काल क्या है?

क) 1 में 4

ख) 1 में 2

ग) 1 में 6

घ) 1 में डेढ़

5.6 कुआड़ में कोंसी लयकारी है?

क) सवागुन की

ख) आधगुन

ग) पौणगुन

घ) सवादोगुन

5.7 5/4 की लयकारी को कुआड़ कहते है?

क)हाँ

ख) नहीं

5.8 7/4 की लयकारी को बिआड़ कहते है?

क)नहीं

ख) हाँ

ग) इसमें कोई नहीं

5.9 कुआड़ की आड़ को बिआड़ कहते है।

क)हां

ख) नहीं

5.10 आड़ की आड़ को कुआड़ कहते है।

क)सही

ख) गलत

5.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में लय काफी प्रचलित है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत लय और लयकारी को प्रदर्शित किया जाता है। शास्त्रीय संगीत में ताल के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा लय के अभ्यास के लिए लयकारी काअभ्यास शुरू से ही किया जाता है। लय और लयकारी ताल में रहकर होता है। आड़, कुआड़, और बिआड़, को विलंबित , मध्य तथा तेज लय में बजाया जाता है। ताल में लयकारी का अपना महत्व है और लय को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: क)

5.2 उत्तर: ख)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: ख)

5.5 उत्तर: घ)

5.6 उत्तर: क)

5.7 उत्तर: क)

5.8 उत्तर: ख)

5.9 उत्तर: क)

5.10 उत्तर: क)

5.7 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

श्री विक्रांत शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

5.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. लय और लयकारी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. आड़ की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 3. कुआड़ की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 4. बिआड़ की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न 5 . दादरा ताल की आड़, कुआड़ और बिआड़ लिखकर समझाइये।

इकाई -6
तबला के क्षेत्र में विद्वानों का योगदान
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्यतथा परिणाम
6.3	पंडित विष्णु नारायण भातखंडे का परिचय
6.3.1	पंडित विष्णु दिगम्बर पलुष्कर का परिचय
6.3.2	अमीर खुसरो का परिचय
6.3.3	पंडित राम सहाय का परिचय
	स्वयं जांच अभ्यास1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक केक्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीतके संदर्भ में, पंडित विष्णु नारायण भातखंडे , पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर , अमीर खुसरो , पंडित राम सहाय जी का जीवन परिचय विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों और वादन का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। विद्वानों द्वारा किये गए प्रयासों से कई तालें बनायी गयी और कुछ मधुर गीतों, भजनों,गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी विद्वानों का परिचय लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्वानों के परिचय की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- संगीत के क्षेत्र में विद्वानों द्वारा किये गए कार्यों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्वानों द्वारा लिखी गई पुस्तकें और उनके शिष्यों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के विद्वानों से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- विद्यार्थी गुरु शिष्य परम्परा को जान पायेगा।
- विद्वानों के द्वारा संगीत के क्षेत्र में किये गए कामों को समझने में सक्षम होंगे।

6.3 पंडित विष्णु नारायण भातखंडे का परिचय

पं० विष्णु नारायण भातखण्डे

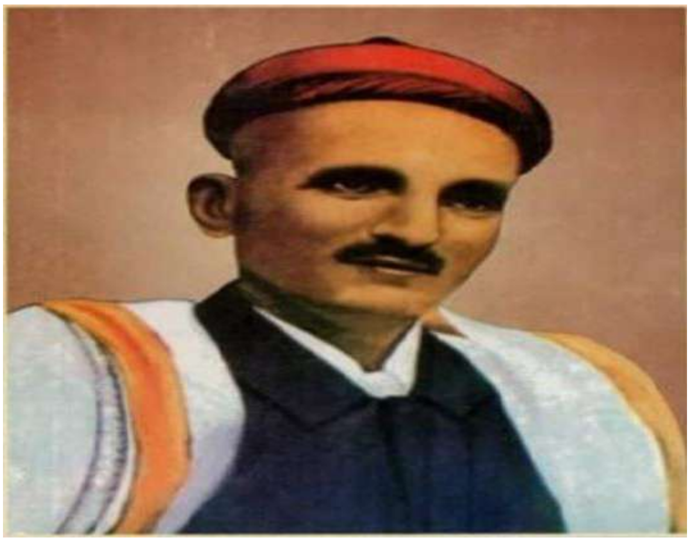

पं० विष्णु नारायण भातखण्डे जी का जन्म 10 अगस्त 1860 को महाराष्ट्र के बालकेश्वर नामक ग्राम में हुआ था। वह शुभ दिन श्री कृष्ण जन्माष्टमी थी जिस दिन संगीत-क्षेत्र में मानों एक कृष्ण का अवतार हुआ। आपके पिता जी संगीत के बड़े प्रेमी थी, अतः संगीत के प्रति आपका अनुराग पैत्रिक था। विद्याध्यन तथा अन्य शैक्षिक योग्यताओं के साथ-साथ आपने संगीत की भी शिक्षा प्राप्त की। बी.ए., एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् कुछ दिनों तक वकालत करते रहे। साथ ही साथ संगीत का अध्ययन, मनन व अभ्यास भी करते रहे। विभिन्न विद्वानों से सितार, गायन व बाँसुरी की शिक्षा प्राप्त की और उनका अभ्यास किया। संगीत के प्रति विशेष लगाव तथा अभिरूचि होने के कारण आपका मन वकालत पेशा में नहीं लगा, अतः उसे छोड़ दिया। वकालत छोड़ने के पश्चात् संगीत-जिज्ञासु के रूप में आप भ्रमण के लिये निकल पड़े तथा विभिन्न विद्वानों से विचार-विनिमय तथा शास्त्रार्थ किया। इस क्रिया में आपके संगीत-शास्त्र का ज्ञान तथा वकालत के संस्कार ने अच्छा प्रभाव स्थापित किया। देश के कोने-कोने में जाकर कठिनाइयों को सामना करते हुए जहाँ-जहाँ भी संगीत के जानकार मिले, उन्हें धन देकर या उनकी सेवा कर उनसे संगीत शिक्षा प्राप्त की। वह समय विद्या प्राप्त करने का बड़ा कठिन समय था। उस्ताद लोग जल्दी किसी को शिक्षा नहीं देते थे और देते भी तो मात्र एक राग की एक-दो बंदिशे सीखने के लिये काफी समय व्यतीत होता था और शिष्य को गुरू की धन तथा शरीर से बहुत सेवा करनी पड़ती थी। ऐसे अंधकार समय में भातखण्डे जी ने रागों की खानदानी बंदिशों को एकत्र करने का संकल्प किया और बड़ी कठिनाइयों को झेलते हुए विभिन्न रागों की बहुत सी बंदिशें इक्कठी की अपनी एक विशेष स्वर-लिपि में जिसे भातखण्डे स्वर-लिपि कहते हैं,

'क्रमिक पुस्तक मालिका' में जो छः भागों में है, प्रकाशित की। इस पुस्तक-मालिका ने संगीतक्षेत्र में संगीत की बहुत बड़ी समस्या हल कर दी जो 'भातखण्डे' जी की अमूल्य देन सिद्ध हुई।

ख्याति प्राप्त करने पर उनकी प्रतिभा व अन्य मौलिकतायें जागृत होने लगीं और उन्होंने अपने समय में प्रचलित 'राग-रागिनी पद्धति' के मार्मिक स्थलों का स्पर्श तथा चिन्तन किया। उस पद्धति में उन्हें कुछ कमियाँ प्रतीत हुई। उन्होंने उसके स्थान पर थाट-राग पद्धति का निर्माण किया तथा उसका प्रचार करने लगे। धीरे-धीरे यह पद्धति प्रचार में आ गई। उस समय रेडियो आदि श्रव्य-साधन नहीं था, अतः आपने बड़े-बड़े संगीत सम्मेलन तत्कालीन राजाओं की सहायता से किये। इस प्रकार उन्होंने अपना सारा समय संगीत के लिये अर्पण कर दिया और संगीत जगत में महत्वपूर्ण काम किया। उनकी अमूल्य कृतियाँ-

(1) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (क्रमिक पुस्तक मालिका) 6 भागों में

(2) भातखण्डे संगीत शास्त्र 4 भागों में

(3) अभिनव राग मंजरी

(4) लक्ष्य संगीत

(5) स्वर मालिका इत्यादि।

'भातखण्डे संगीत महाविद्यालय' लखनऊ का नाम आपके नाम पर पड़ा। इसका पूर्व नाम 'मैरिस म्यूजिक कॉलेज' था। इस संगीत विद्यालय की स्थापना आपने ही की थी तथा इसके भूतपूर्व प्रधानाचार्य स्व. पं. श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर आपके प्रमुख शिष्यों में से थे। 19 सितम्बर 1936 को आप सर्वदा के लिये नादब्रह्म में लीन हो गये। आपके कार्यों से संगीत के प्रेमियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों को बड़ा लाभ पहुँचा। संगीत के उच्च विद्यार्थियों विशेषकर शोध के विद्यार्थियों को मानों संगीत का खजाना मिल गया।

6.3.1 पंडित विष्णु दिगम्बर पलुष्कर कापरिचय

पं० विष्णु दिगम्बर पलुष्कर

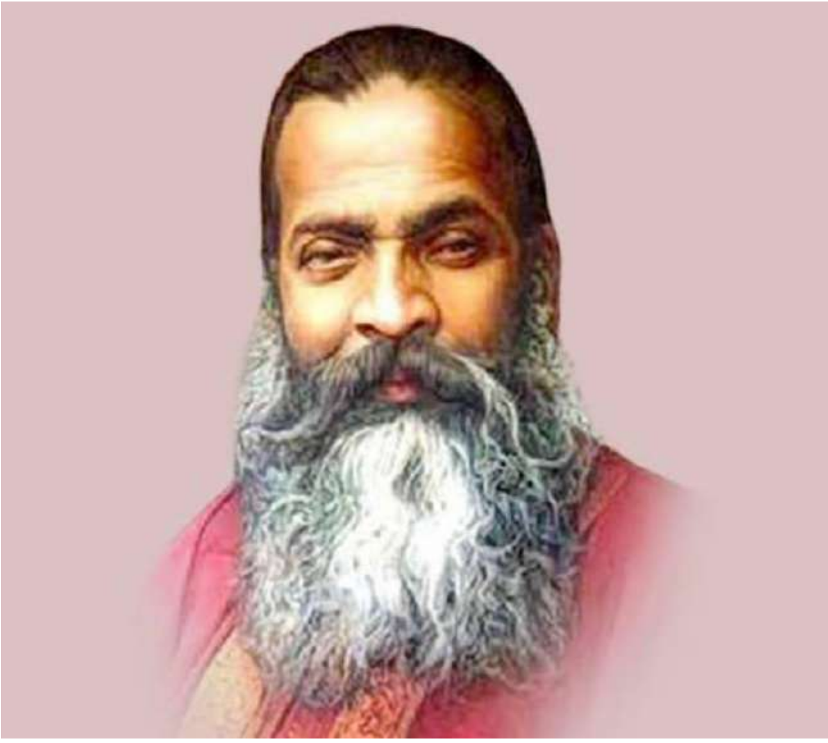

काल के आधुनिक नादब्रह्मयोगी, संगीत-कला के प्रवर्तक, प्रातः स्मरणीय पं. विष्णु दिगम्बर पलुष्कर जी का जन्म श्रावण पूर्णिमा 1 अगस्त सन् 1872 को महाराष्ट्र के तत्कालीन कुरून्दवाड़ रियासत के बेलगाँव नामक ग्राम में हुआ। आपके पिता पं. दिगम्बर गोपाल अपने समय के अच्छे भक्त-कीर्तनकार थे। अतः स्वाभाविक है कि आपकी धमनियों में भी भक्ति तथा संगीत का परम्परागत संस्कार था। किशारावस्था में आतिशबाजी से खेलने में चक्षु-दुर्घटना हो गई और नैनों की ज्योति क्षीण हो गई। इसलिये स्कूली शिक्षाओं से वंचित रहे। आपके पिता ने विवश होकर आपको संगीत-शिक्षा के लिये मिरज. के तत्कालीन गवैये पं. बाल कृष्ण बुआ इचलकरंजीकर के पास भेज दिया। वहाँ आपको संगीत की उचित शिक्षा प्राप्त हुई। मिरज रियासत के तत्कालीन महाराजा ने आप में संगीत-प्रतिभा देखकर आपको अपने यहाँ राजाश्रय दिया तथा विशेष सुविधायें प्रदान की।

उस समय का जन-साधारण संगीत से अवगत नहीं था तथा संगीत एवम् संगीतकार को हेय दृष्टि से देखा करता था। एक बार मिरज की एक सर्वाजनिक सभा में अन्य लोगों को तथा आपको निमन्त्रित किया गया, लेकिन आपके गुरू जी को गवैया होने के कारण नहीं निमन्त्रित किया गया। इस घटना से इस प्रतिभावान कलाकार को, जिसकी नैनों की ज्योति अवश्य क्षीण थी, किन्तु अन्तरमन प्रकाशित था, बड़ा क्लेश पहुँचा। आपने जन-साधारण में संगीत के प्रचार का वीणा उठाया और देशाटन के लिये निकल पड़े।

उत्तर भारत के सभी प्रमुख नगरों में भ्रमण किया तथा संगीत की यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। आपने देश के कुछ भागों में संगीत-विद्यालय खोले जहाँ उचित व नियमित ढंग से संगीत शिक्षण हो सके। सर्वप्रथम लाहौर में सन् 1901 में गांधर्व महाविद्यालय की स्थापना की तथा अन्य स्थानों पर उसकी कई शाखायें खोलीं।

बम्बई का विद्यालय बन्द हो जाने से आपको संसार से विरक्ति हो गई। आप गेरुवा वस्त्र धारण करके हाथ में एकतारा लिये हुए सदैव 'रघुपति राघव राजा राम' की धुन गाया करते। भागवत मस्ती में आपने नासिक में 'रामनाम आश्रम' की स्थापना की। वैदिक काल में प्रचलित आश्रम प्रणाली के आधार पर पंडित जी ने कई शिष्यों को संगीत का शिक्षण प्रदान किया। उनके अधिकांश शिष्य उनके साथ रहते और उनका पूरा खर्च वह स्वयं वहन करते। उनमें से कुछ उल्लेखनीय शिष्यों के नाम हैं:-

(1) पं. वी. ए. कशालकर

(2) पं. ओमकार नाथ ठाकुर

(3) पं. नारायण राव व्यास

(4) पं. वी. आर. देवधर

(5) पं. वी. एन. ठकार

(6) पं. वी. एन. पटवर्धन इत्यादि

इन शिष्यों ने अपने पूज्य गुरू द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर संगीत के प्रचार में बहुत हाथ बटाया। अब ये स्वर्गवासी हो चुके हैं किन्तु इनके शिष्य संगीत-सेवा में लगे हैं।

पंडित जी ने संगीत की बहुत सी पुस्तकें लिखीं जो वर्तमान समय में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। उन्होंने संगीत क्षेत्र में स्वरलिपि की एक नई पद्धति का आविष्कार किया जो उन्हीं के नाम पर विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धति' कही जाती है। उनके पुत्रों में से एकमात्र पुत्र डी.वी. पलुष्कर, जो अपने समय में भारतवर्ष के चोटी के कलाकारों में गिने जाते थे, 35 वर्ष की युवावस्था में ही परलोकवासी हो गये। सन् 1930 में पंडित जी को लकवा मार गया और 21 अगस्त सन् 1931 को वे परलोक सिधार गये।

6.3.2 अमीर खुसरो का परिचय

अमीर खुसरो

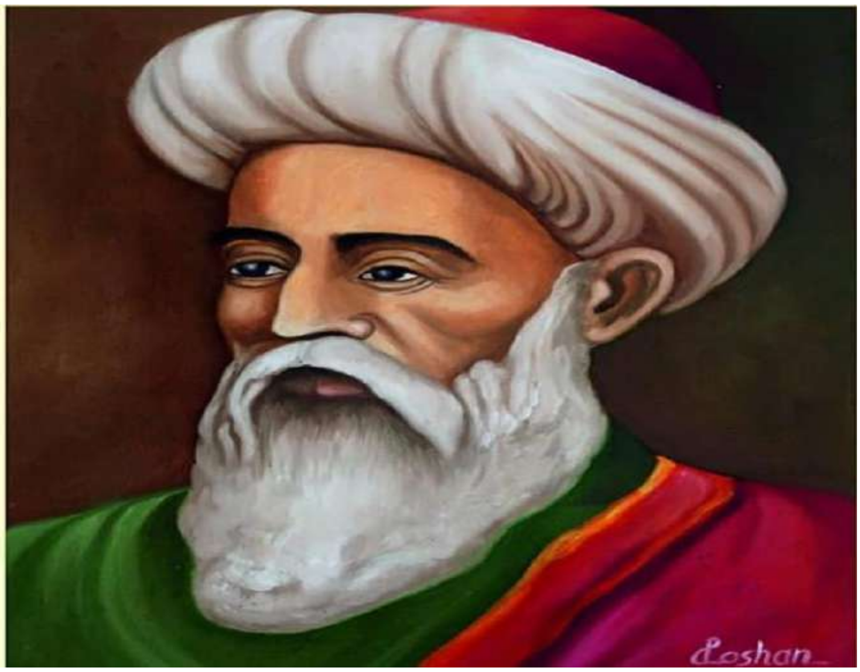

अमीर खुसरो का जन्म सन् 1253 में एटा जिले के पटियाली नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम अमीर मुहम्मद सैफुद्दीन था। उनके पिता पहले बलवन के निवासी थे, परन्तु बाद में पटियाली आकर बस गये थे। अमीर खुसरो का नाम संगीत-क्षेत्र में नये आविष्कारों के लिये बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आप बाल्यावस्था से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। आपमें प्रारम्भ से ही के साहित्य तथा संगीत के प्रति विशेष रुचि थी। पिता की मृत्यु पश्चात् आपको तत्कालीन गुलाम वंश के राजा गयासुद्दीन बलवन का राजाश्रय प्राप्त हो गया। इसके अलावा आपने कई राज्यों में सेवायें कीं। अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में भी राज्य-गायक के पद पर नियुक्त हुये। संगीत तथा साहित्य दोनों में अभिरुचि रखने के कारण आपका काव्य-प्रेमी होना स्वाभाविक था। उर्दू भाषी तथा उर्दू के विद्वान होने के कारण आपमें उर्दू में कवितायें लिखने की बड़ी प्रतिभा थी। किंवदन्ती है कि वे प्रतिदिन अलाउद्दीन खिलजी के साथ उर्दू में काव्य-विनोद (शायरी) भी किया करते थे।

सन् 1294 में जब अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिणी भारत के देवगिरी राज्य पर आक्रमण करके विजय प्राप्त किया तो अमीर खुसरो भी उनके साथ थे। वहाँ उनका देवगिरी के राज्य-गायक गोपाल नायक से साक्षात्कार हुआ। वहाँ के राजा की आज्ञा से दोनों संगीतज्ञों में संगीत-प्रतियोगिता हुई। उसने गोपाल नायक को छल से पराजित तो कर दिया, लेकिन उनकी योग्यता देखकर वह हृदय से बहुत प्रभावित हुये। कुछ समय पश्चात् जब अमीर खुसरो दिल्ली गये तो

अमीर खुसरो गोपाल नायक को भी अपने साथ ले गये। वहाँ अमीर खुसरो ने जन-सम्पर्क स्थापित कर संगीत के प्रति जनरूचि का अध्ययन किया तथा संगीत के क्षेत्र में निम्नलिखित आविष्कार किये जो अविस्मरणीय हैं –

गीत के प्रकारों जैसे- छोटा ख्याल,

(1) जनरुचि के अनुसार कौव्वाली, तराना आदि की रचना की।

(2) जनरुचि के अनुसार संगीत –
शैलियों के उपयुक्त पखावज वाद्य को दो भागों में बाँट कर तबले की रचना की तथा सहतार वाद्य (दक्षिणी वीणा के आधार पर) की रचना की जिसमें उस समय केवल तीन तारों का उपयोग होता था। सहतार धीरे-धीरे बिगड़ता-बिगड़ता सितार हो गया।

(3) नये राग- पूरिया, साजगिरी, पूर्वी, जिला तथा शहाना आदि की रचना की।

(4) तबले के नये तथा बन्द बोलों के तालों की कल्पना करके उसमें वादन की नयी शैली प्रस्तुत की, जैसे झूमरा, तीनताल, आड़ा चारताल, पश्तो तथा सूलफाक आदि। सन् 1324 में उनके उस्ताद निजामुद्दीन औलिया का देहान्त हो गया। कहते हैं कि गुरू के मरने की बिरह-व्यथा वह भावुक संगीतज्ञ सहन न कर सका। उसके बाद से वे अत्यन्त दुखी रहने लगे। सन् 1325 में 72 वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो गये। संगीत क्षेत्र में अमीर खुसरो का नाम एक अच्छे कला-मर्मज्ञ, आविष्कारक तथा सुधारक के रूप में सदियों तक आदर के साथ लिया जायेगा।

6.3.3 पंडित राम सहाय का परिचय

पंडित राम सहाय जी

बनारस-बाज के प्रवर्तक स्वर्गीय रामसहाय के पूर्वज मूल रूप से जिला जौनपुर के अंतर्गत गोपालपुर ग्राम के निवासी थे। बाद में इनके पिता बनारस आकर बस गए।

रामसहाय जी का जन्म बनारस में सन् १८३० ई० के लगभग हुआ। जब ये केवल दो वर्ष के शिशु थे, तब अपने चाचा का रखा हुआ तबला घंटों पीटते रहते और इसी छोटी-सी आयु में तबले का सर्वप्रथम पाठ 'धा धा तिट्टी धा धा तिन्ना' ठीक तरह से बोलने लगे थे। त्रिताल का ठेका भी इन्हें याद हो गया था। घरवाले इतनी छोटी अवस्था में तबले के प्रति इनकी ऐसी रुचि देखकर आश्चर्यचकित रह गए। जब ये ५ वर्ष के हुए, तब अपने चाचा के शिष्य बनाए गए और तबले की शिक्षा बाकायदे प्रारंभ हो गई।

६ वर्ष की अवस्था में रामसहाय इतना अच्छा तबला बजाने लगे, मानो कोई तबले का उस्ताद बजा रहा हो। ये तबले के अभ्यास में लीन रहते थे। अपने परिश्रम और लगन के फलस्वरूप रामसहाय शीघ्र ही काशी के श्रेष्ठ तबला वादक समझे जाने लगे। लखनऊ में एक बार तबला के खलीफा उस्ताद मोदू खाँ ने जब इनका तबला वादन सुना तो वे इनकी ओर बहुत आकर्षित हुए और रामसहाय के पिता से विशेष आग्रह करके इन्हें माँग लिया। फिर शुभ मुहूर्त देखकर उस्ताद मोदू खाँ ने रामसहाय को अपना शिष्य बना लिया। लखनऊ में शोर हो गया कि एक हिंदू लड़के को उस्ताद मोदू खाँ तबले की तालीम दे रहे हैं ; इस प्रकार वर्षों बीत गए। जब उस्ताद मोदू खाँ किसी

कार्यवश अपनी ससुराल चले गए, तब रामसहाय अपने उस्ताद की बैठक में अकेले बैठे-बैठे रोने लगे। उस्ताद की बीवी ने उनसे रोने का कारण पूछा, तो कहने लगे – “अब मुझे तबला कौन सिखाएगा ?" यह सुनकर वे हँसने लगीं। रामसहाय को धैर्य देते हुए उन्होंने कहा –

"तुम चिंता न करो, मेरे वालिद ने मुझे पाँचसौ गतें बताई थीं सो मैं तुम्हें बतला दूंगी।"

तब चार महीने में ५०० पंजाबी गतें बीवी जी ने रामसहाय को सिखाईं। इस बीच उस्ताद मोदू खाँ भी पंजाब से आ गए और उनका शिक्षा क्रम पुनः चालू हो गया। इस प्रकार लगभग १२ वर्ष तक रामसहाय जी ने मोदू खाँ से शिक्षा प्राप्त की और बीस-बीस घंटे तक दैनिक रियाज करते रहे।

लखनऊ में नवाब शुजातुद्दौला की मृत्यु के पश्चात् वहाँ की नवावी जब वाजिदअली शाह को प्राप्त हुई, तो इस खुशी में संगीत का एक बड़ा जल्सा किया गया और उसमें अनेक गायक, नर्तक तथा वादक इकट्ठे हुए। इस जल्से में रामसहाय ने अपना कला- कौशल दिखाकर श्रोताओं को आनंदविभोर कर दिया। यह जल्सा सात दिन तक चला और सातों दिन रामसहाय जी का तबला- वादन इसमें हुआ।

दूसरे दिन दरबार में कलाकारों की भीड़ लग गई। सभी को यह उत्सुकता थी कि देखें नवाब साहब क्या इनाम देते हैं ? कहा जाता है कि इन्हें मोतियों की दो मालाएँ, ४ हाथी तथा बहुत-सा रुपया पुरस्कार में मिला। दूसरे दिन रामसहाय जी उ० मोद खाँ साहब के साथ काशी के लिए रवाना हो गए और हिफाजत के लिए नवाब साहब ने अपने तिलंग (घुड़सवार) साथ कर दिए। रामसहाय जी ने अपने अनुज जानकीसहाय का नृत्य छुड़वाकर उन्हें तबले का शिष्य बनाया तथा अन्य भी कई शिष्य बनाए एवं तबले पर एक ग्रंथ भी तैयार किया। उस ग्रंथ का नाम उन्होंने 'बनारस-बाज' रखा, जो आज उपलब्ध नहीं है। रामसहाय जी ने अपने चचा से कहा कि अब हमारे घराने का नया बाज 'बनारस- बाज' के नाम से प्रसिद्ध होगा। इस बाज को बजानेवाला ध्रुवपद, खयाल, ठुमरी, टप्पा, नृत्य, सितार आदि सबके साथ उत्तमता से संगति करने के अतिरिक्त स्वतंत्र वादन करके भी यश का भागी बनेगा। तभी से 'बनारस-बाज' की नीव पड़ी।

अपने चचा और पिताजी की मृत्यु के उपरांत रामसहाय जी साधु-वेष में रहकर शिष्यों को विद्या दान करते रहे। अपने भाई गौरीसहाय जी के पुत्र भैरवसहाय को उन्होंने ६ वर्ष तक स्वयं शिक्षा दी। लगभग ४६ वर्ष की आयु में रामसहाय जी का स्वर्ग- वास हो गया। आपके शिष्यों में - जानकीसहाय, प्रताप और भगतशरण, रघुनंदन, यदुनंदन और बैजू के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्री रामसहाय जी को गुणी लोगों से जो अलभ्य चीजें प्राप्त हुई थीं, उनमें सिद्ध परन, गज परन, चक्रदार परन, पावस परन, कृष्ण परन, रासलीला परन, दुर्गा परन, हनुमान परन, काली परन, शंकर परन, गणेश परन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। समा परन द्वारा नारियल अपने-आप सम पर आते ही टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता था। गज परन द्वारा पागल हाथी को वश में किया जा सकता था और सुलभ का टुकड़ा तो ऐसा था, जो संसार की किसी लय से नहीं मिलता था। बीच में कुछ समय के लिए ऐसी स्थिति भी आ गई थी, जब एक तबला वादक की अनुचित आवाजकशी के कारण आपने तबला बजाना छोड़ दिया था, किंतु लोगों के बहुत समझाने-बुझाने पर आपने केवल कुछ शिष्यों को शिक्षा देना स्वीकार किया था, जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 पं०विष्णु नारायण भातखण्डे जी का जन्म कहाँ हुआ था ?

क)महाराष्ट्र

ख) दिल्ली

ग) शिमला

घ) लखनऊ

6.2 पं०विष्णु नारायण भातखण्डे जी का जन्म साल क्या है ?

क) 1770

ख) 1860

ग) 1890

घ) 2003

6.3 पं. विष्णु दिगम्बर पलुष्कर जी का जन्म कोनसे गाँव में हुआ?

क) शोघी

ख) रामनगर

ग) बेलगाँव

घ) तिर्मिली

6.4 1 अगस्त 1872 में किसका जन्म हुआ ?

क)अल्लारखा खां

ख) सुधीर पांडे

ग) पं. विष्णुदिगम्बरपलुष्कर

घ)कोई भी नहीं

6.5 अमीर खुसरो का जन्म कोनसे साल में हुआ ?

क)1111

ख) 1234

ग) 1789

घ) 1253

6.6 अमीर खुसरो किस के दरबार में राज्य-गायक के पद पर नियुक्त हुये थे ?

क)अलाउद्दीनखिलजी

ख) अकबर

ग) टीपू सुलतान

घ) राजा पटियाला

6.7 अमीर खुसरो के गुरु कोन थे ?

क)जाकिर हुसैन

ख) निजामुदीन औलिया

ग) किशन महाराज

घ) कंठे महाराज

6.8 राम सहाय जी कोनसे घराने से सम्बन्ध रखते थे ?

क)दिल्ली

ख) पंजाब

ग) बनारस

घ) फरुखाबाद

6.9 राम सहाय जी के गुरु कोण थे ?

क) मोदू खां

ख) कंठे महाराज

6.10 राम सहाय जी के शिष्यों में जानकी सहाय जी हुए ?

क)सही

ख) गलत

6.4 सारांश

संगीत में कुछ विद्वानों का परिचय और उनके द्वारा संगीत के क्षेत्र में किया गया काम I उनके द्वारा की गयी उप्लब्धि और उनके शिष्यों ने गुरु शिष्य परम्परा को आगे बढाया I

6.5 शब्दावली

- विद्याध्यन : विद्या का अध्यन करने वाला
- शाश्त्रार्थ : शाश्त्रों के बारे में बात करना
- कीर्तनकार : भजन कीर्तन करने वाला
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: क)

6.2 उत्तर: ख)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: ग)

6.5 उत्तर: घ)

6.6 उत्तर: क)

6.7 उत्तर: ख)

6.8 उत्तर: ग)

6.9 उत्तर: क)

6.10 उत्तर: क)

6.7 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

6.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश ।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर ।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद ।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. पंडित विष्णु नारायण का परिचय लिखिए ?

प्रश्न 2. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का परिचय लिखिए ?

प्रश्न 3. अमीर खुसरो का परिचय लिखिए ?

प्रश्न 4. पंडित राम सहाय जी का परिचय लिखिए ?

इकाई-7
प्राचीन अवनध वाद्य चित्र सहित
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्यतथा परिणाम
7.3	प्राचीन अवनध वाद्यों के चित्र
	स्वयं जांच अभ्यास1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, प्राचीन अवनध वाद्यों को चित्र सहित प्रस्तुत किया गया है।

चित्रों की सहायता से वाद्यों के नाम और वह वाद्य किस क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी अनेक प्राचीन अवनध वाद्य देखकर पहचानने में सक्षम होगा और किस किस क्षेत्र में वाद्य का वादन होता है ।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- प्राचीन अवनध वाद्यों की जानकारी प्रदान करना।
- अवनध वाद्यों को पहचानने की क्षमता विकसित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वाद्यों से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- कोनसा वाद्य किस जगह का है उसकी जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

7.3 प्राचीन अवनध वाद्य

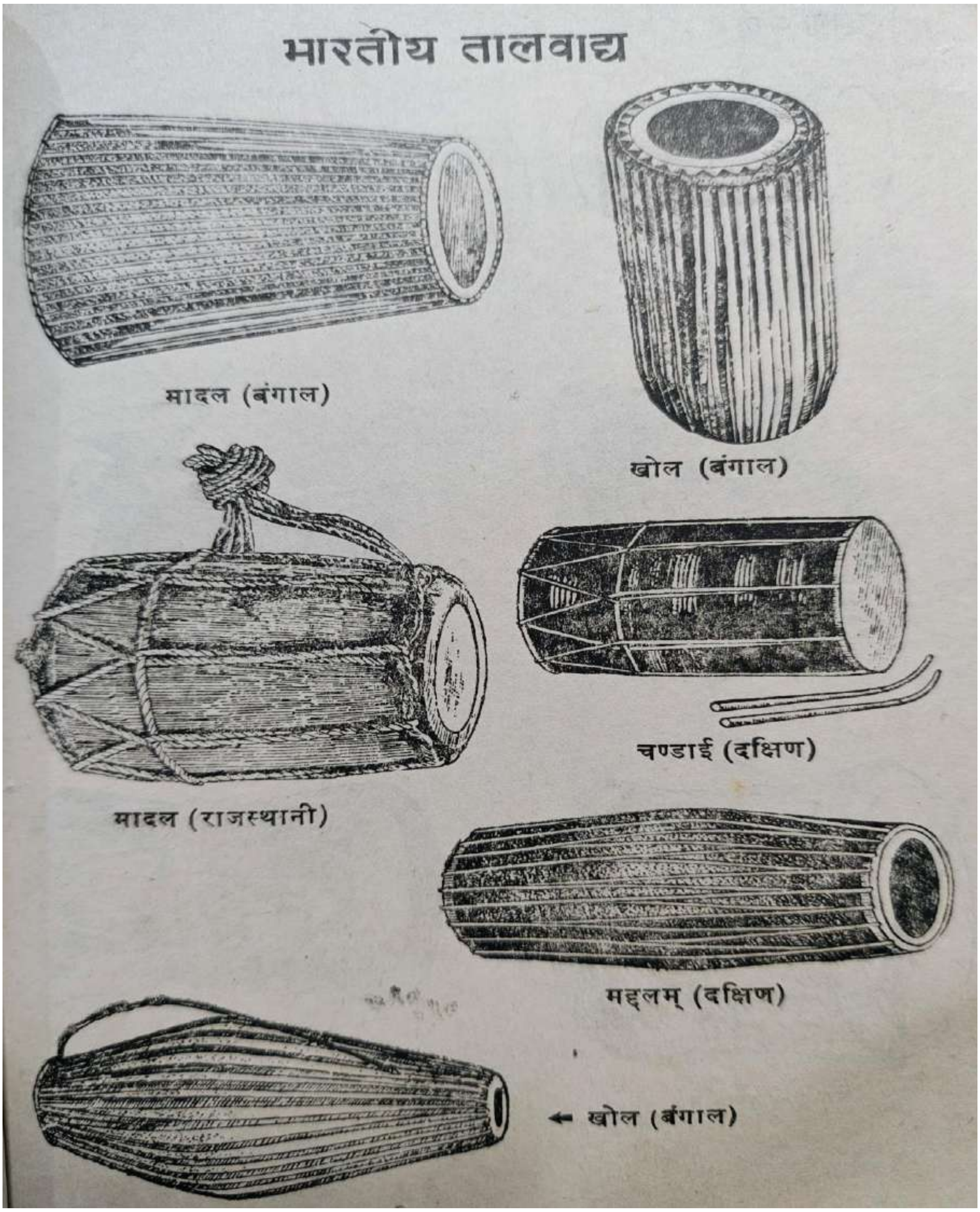

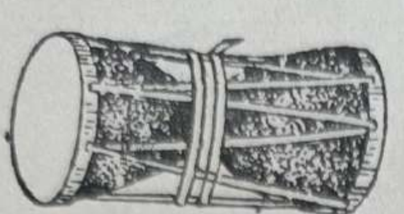

डमरु (सौराष्ट्र)

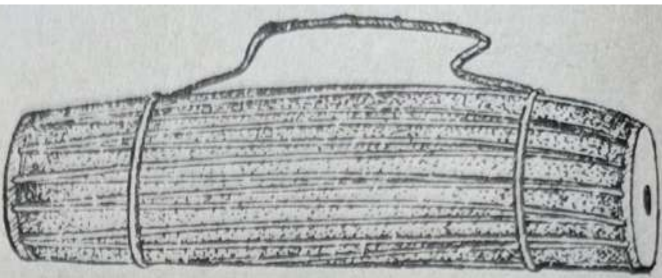

मादल (आदिवासी, गुजरात)

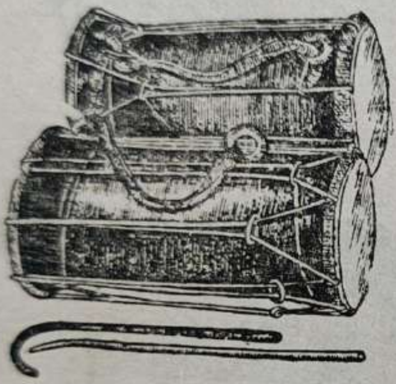

पंबाई (दक्षिण)

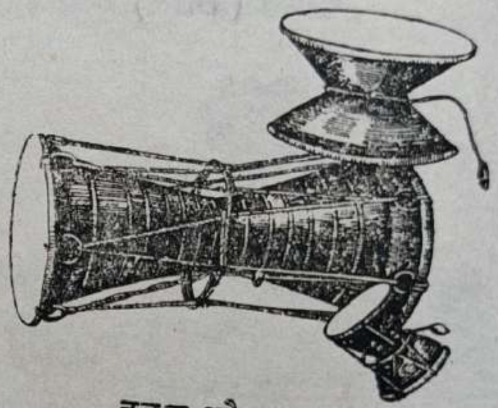

हुड़क और डमरु

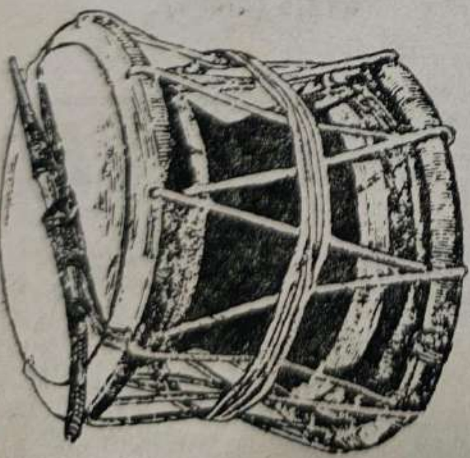

डेरू (राजस्थान)

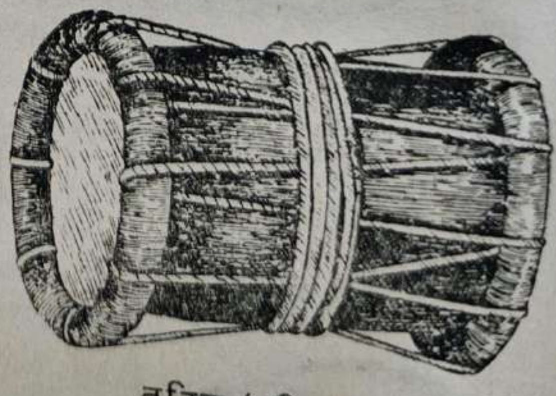

तविल (दक्षिण)

घुमुरू (साओरा जनजाति उड़ीसा)

घटम् (दक्षिण)

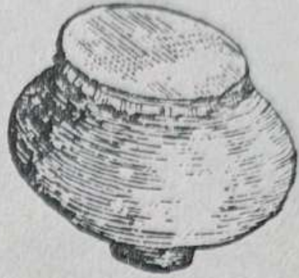

घुमत (गोवा)

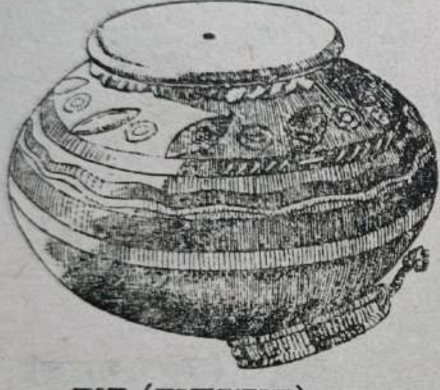

माठ (राजस्थान)

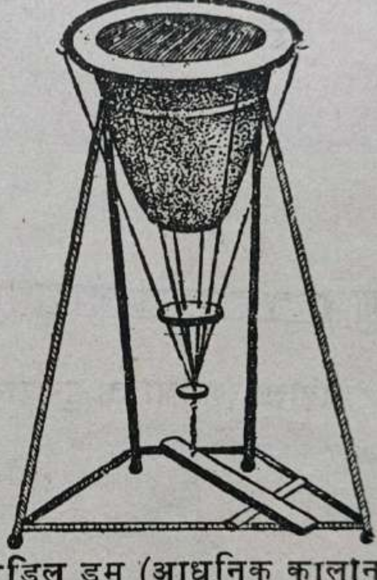

पैडिल ड्रम (आधुनिक कालीन)

पंचमुख वाद्यम् (दक्षिण)

पिकनिक ड्रम (आधुनिक कालीन)

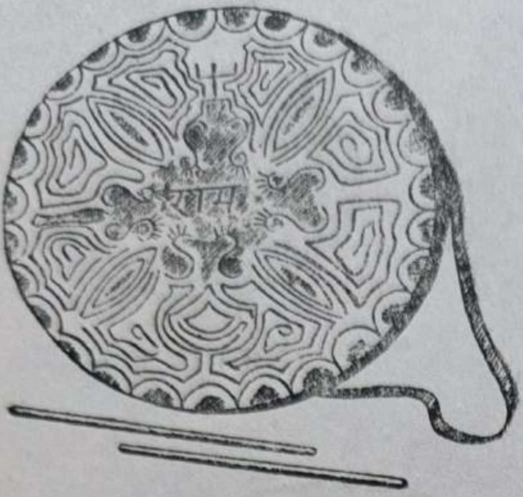

डफ

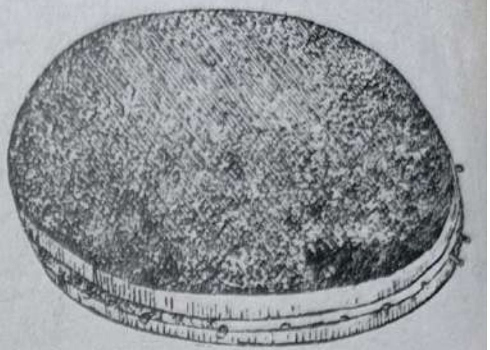

डाकी (उड़ीसा जनजाति)

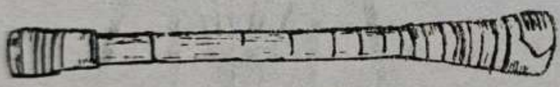

नढ़ीलो (जनजाति, गुजरात)

खंजरी (उत्तर भारत)

खंजरी (दक्षिण)

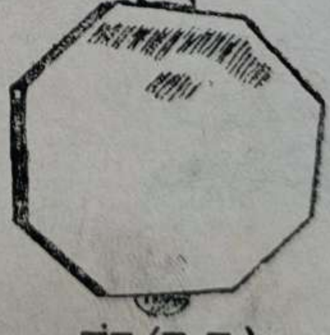

चंग (उ. प्र.)

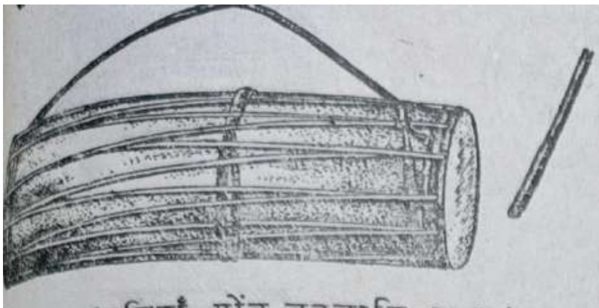

ढोल (मुड़ियाँ-गोंड जनजाति-म. प्र.)

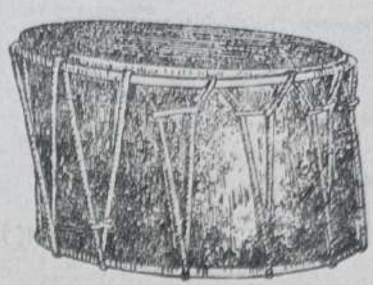

ढोल (राजस्थान)

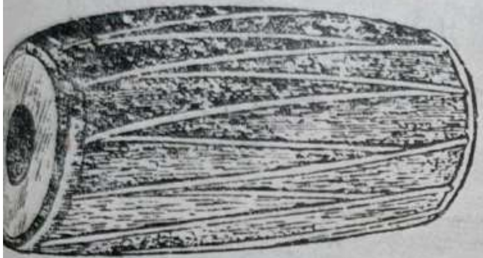

ढोल (आसाम)

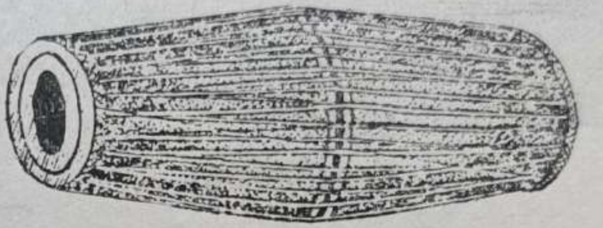

नादरीन (बंगाल)

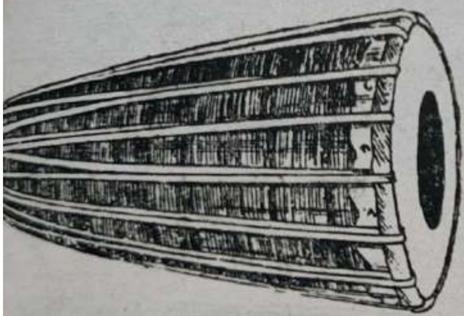

ढोल (मुड़िया गोंड म०प्र०)

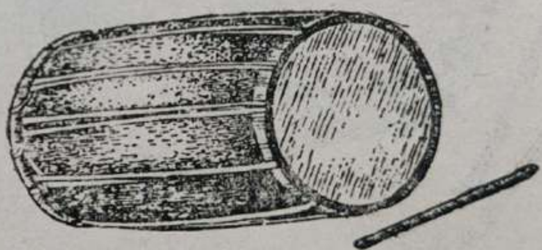

ढोल (बंगाल)

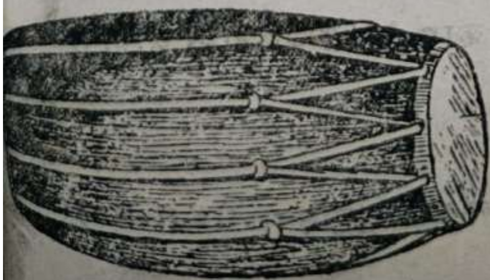

ढोल (सौराष्ट्र)

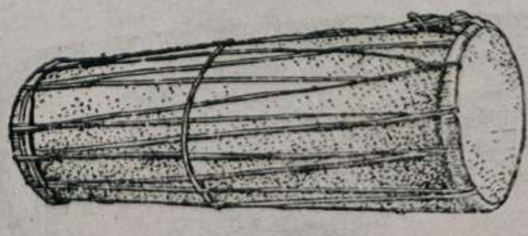

वर्ती लाढो (कोया जनजाति उड़ीसा)

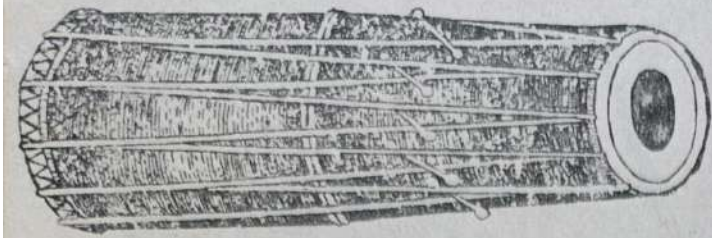

ढोलकी (महाराष्ट्र)

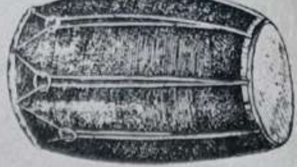

ढोलक

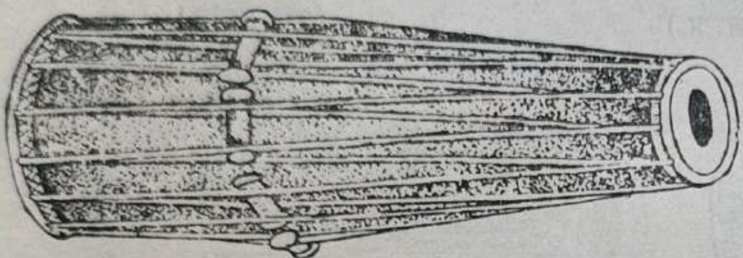

नाल (महाराष्ट्र)

ढाकी (आदिवासी गुजरात)

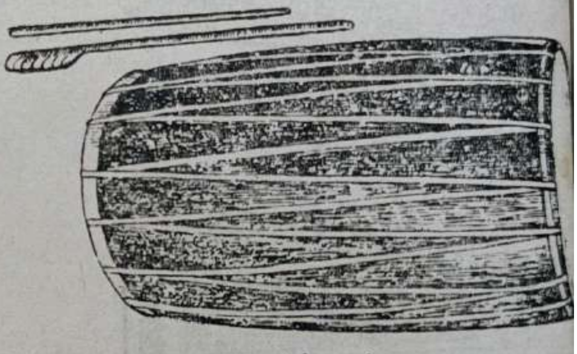

ढाक (बंगाल)

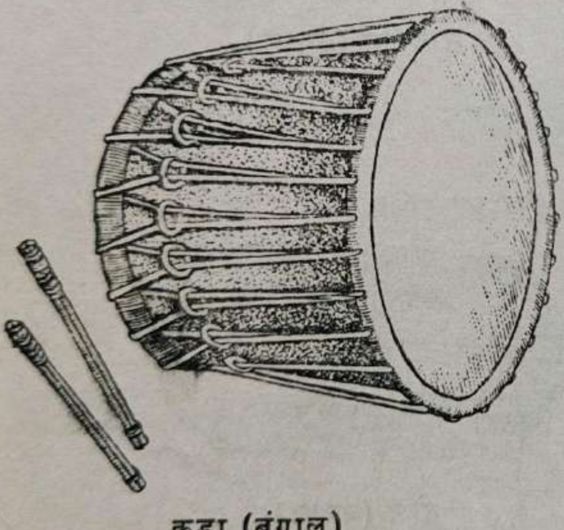

कड़ा (बंगाल)

क्राम (गारो जनजाति आसाम)

← ढोल-मांद्री (मुड़िया-गोंड म०प्र०)

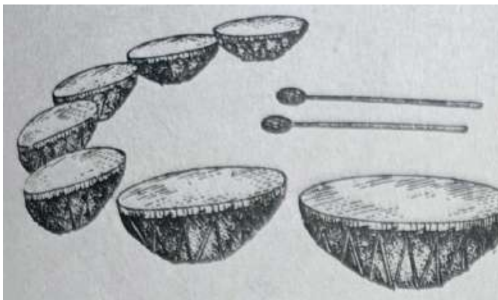

डुग्गी तरंग

तबला (बायाँ व दायाँ)

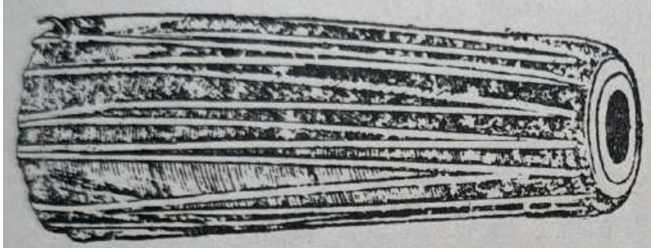

पखावज (उत्तर भारत)

तूड़

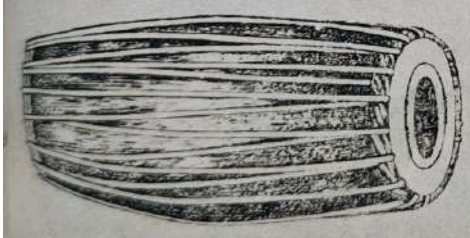

मृदंगम् (दक्षिण)

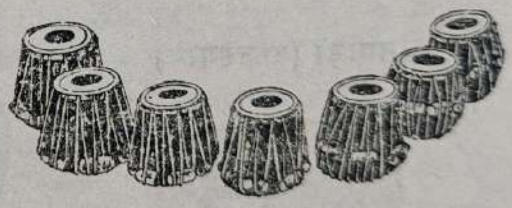

तबला तरंग

ताश (राजस्थानी)

नगाड़ा (जनजाति)

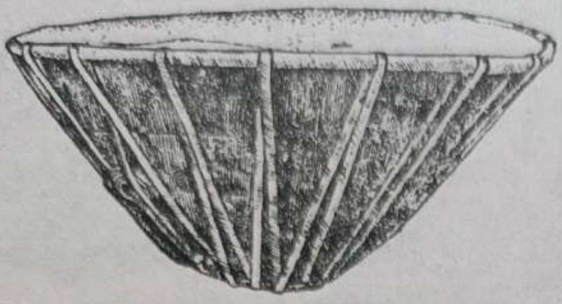

नगाड़ा

नगाड़ा (ओरउँ, म०प्र०)

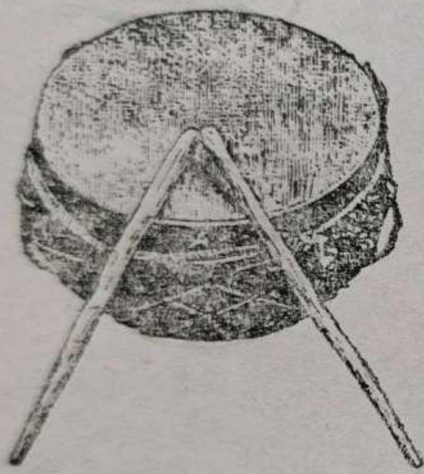

नगाड़ा (राजस्थान)

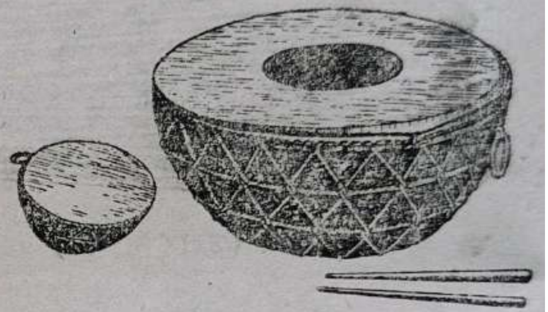

नक्कारा-डुग्गी

नगाड़ो (सौराष्ट्र)

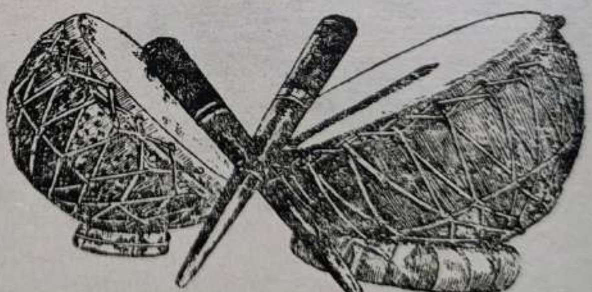

नगाड़ा-नगाड़ी

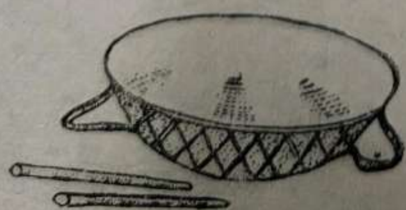

कुंडी (आदिवासी, गुजरात)

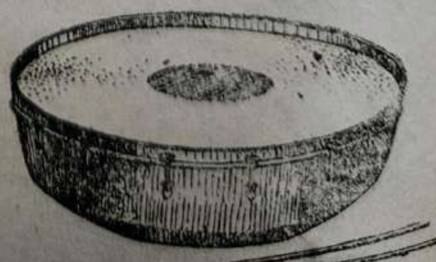

ताशा (गारो जनजाति, आसाम)

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 मादल वाद्य कोनसे क्षेत्र से सम्बंध रखता है ?

क) बंगाल

ख) दक्षिण

ग) दिल्ली

घ) आगरा

7.2 चणडाई वाद्य का क्षेत्र निम्न में से कौन सा है?

क) राजस्थान

ख) दक्षिण

ग) पंजाब

घ) दिल्ली

7.3 डेरू वाद्य का क्षेत्र निम्न में से कौन सा है?

क) हिमाचल प्रदेश

ख) मनिपुर

ग) राजस्थान

घ) केरल

7.4 डमरू वाद्य का क्षेत्र है?

क) गुजरात

ख) गोवा

ग) झारखंड

घ) सौराष्ट्र

7.5 धुमत गोवा का वाद्य है?

क) सही

ख) गलत

7.6 घतम वाद्य का प्रयोग अधिक कहाँ होता है?

क) उड़ीसा

ख) दक्षिण

ग) गोवा

घ) दिल्ली

7.7 चंग वाद्य कोनसे प्रदेश का है?

क) गुजरात

ख) दक्षिण

ग) उतर प्रदेश

घ) गोवा

7.8 क्राम वाद्य कोंसी जनजाति से है?

क) जोगो जनजाति

ख) मुंडिया जनजाति

ग) मींड जनजाति

घ) गारो जनजाति आसाम

7.9 नाल वाद्य महाराष्ट्र से है।

क) हां

ख) नहीं

7.10 आदिवासी गुजरात में कुण्डी वाद्य बजाया जाता है।

क) सही

ख) गलत

7.4 सारांश

प्राचीन समय से अब तक के कुछ अवनध वाद्यों को सचित्र दिखाया गया है जिससे हमें ज्ञात होता है की प्राचीन समय में कैसे कैसे वाद्य होते थे और वो किस किस क्षेत्र में प्रयोग किये जाते थे।

7.5 शब्दावली

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: क)

7.2 उत्तर: ख)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: घ)

7.5 उत्तर: क)

7.6 उत्तर: ख)

7.7 उत्तर: ग)

7.8 उत्तर: घ)

7.9 उत्तर: क)

7.10 उत्तर: क)

7.7 संदर्भ

डॉ.केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश ।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर ।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान,एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. नगाड़ा- नगाड़ी का चित्र बनाइये ?

प्रश्न 2. डुग्गी तरंग का चित्र बनाइये ?

प्रश्न 3. डफका चित्र बनाइये ?

प्रश्न 4. तबला (दांया बांया) का चित्र बनाइये ?

इकाई - 8
एकताल में “ ½ ” और “ ¼ ”
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	½ का परिचय
8.3.1	एकताल को ½ में लिखना
8.3.2	¼ का परिचय
8.3.3	एकताल को ¼ में लिखना
	स्वयं जांच अभ्यास1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक केक्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में, ½ और ¼ को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार विलंबित ख्याल के साथ ½ और ¼ को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी ½ और ¼ के स्वरूप के साथ-साथ उसके बजाने के तरीके को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से ½ और 1/4 को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- ½ के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- ¼ के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- ½ को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना ।
- ¼ को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- ½ और ¼ को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखनेकेपरिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- ½ और ¼ को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- ½ और ¼ को बजाने में सक्षम होंगे।
- ½ ¼ के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 ½ (एक बटा दो) का परिचय

½ (एक बटा दो)

विलंबित लय एक बटा दो (½)किसी भी ताल की क्या है वास्तविकता में मध्य लय की ठीक दुगनी विश्रांति वाली लय विलंबित कहलाती है। उदाहरण के लिए यदि मध्य में दो क्रियाओं का काल एक गिनती का है, तो विलंबित लय में यह एक दो का हो जाएगा अर्थात अगर एक ताल में 12 मात्राएं हैं तो वह 24 का हो जाएगा,

जैसे - 1 S 2 S 3 S ।

इसी तरह क्रमशः 12 तक हम चलेंगे और अगर हम इसकी बोलो में देखे तो

धिं S धिं S ।

यह एक बटा दो लय एक ताल की, और सभी तालों में यही सूत्र मान्य होगा, क्योंकि इसमें धागे में हमने कम किया तो धागे में पहले से ही दो मात्राएं हैं और तिरकिट को हमने कम किया तिर किट दो को एक बना दिया ताकि वह दो का गैप हो, यह रहा एक बटा दो लय।

8.3.1 एकताल को ½ (एक बटा दो) में लिखना

एकताल 12 मात्राओं का जो ठेका है

1	2		3	4		5	6		7	8		9	10		11	12
धिं	धिं	।	धागे	तिरकिट	।	तू	ना	।	क	ता	।	धागे	तिरकिट	।	धी	ना
X			0			2			0			3			4	

परंतु 2 की विश्रांति से हम क्या करेंगे

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12	
धिं	S	धिं	S	।	धा	गे	तिर	किट	।	तू	S	ना	S	।
X					0					2				

13	14	15	16		17	18	19	20		21	22	23	24
क	S	ता	S	।	धा	गे	तिर	किट	।	धी	S	ना	S
0					3					4			

8.3.2 ¼ (एक बटा चार) का परिचय

¼ (एक बटा चार)

विलंबित लय एक बटा चार (¼) किसी भी ताल की क्या है वास्तविकता में मध्य लय की ठीक चौगुनी विश्रांति वाली लय अति विलंबित कहलाती है। उदाहरण के लिए यदि मध्य में दो क्रियाओं का काल एक गिनती का है, तो विलंबित लय में यह एक दो तीन चार का हो जाएगा अर्थात अगर एक ताल में 12 मात्राएं हैं तो वह 48 का हो जाएगा, । इसमें चार की विश्रांति देनी है मान लीजिए 1 2 3 4 इसके लिए हम करेंगे

1 S S S, 2 S S S, 3 S S S, 4 S S S आदि

जैसे बोलों में –

धिं S S S, धिं S S S, धा S गे S

इस तरह से यह 48 मात्रा हो गया। जिसमें बड़ा ख्याल एक बटा चार में गाए जाते है। सभी तालों में यही सूत्र मान्य होगायह , किसी भी ताल का हो सकता है।

8.3.3 एकताल को ¼ (एक बटा चार) में लिखना

एकताल 12 मात्राओं का जो ठेका है

1	2		3	4		5	6		7	8		9	10		11	12
धिं	धिं	।	धागे	तिरकिट	।	तू	ना	।	क	ता	।	धागे	तिरकिट	।	धी	ना
X			0			2			0			3			4	

परंतु 4 की विश्रांति से हम क्या करेंगे

1	2	3	4	5	6	7	8		9	10	11	12
धिं	S	S	S	धिं	S	S	S	1	धा	S	गे	S
X									0			

13	14	15	16		17	18	19	20	21	22	23	24	
ति	र	कि	ट	1	तू	S	S	S	ना	S	S	S	1
-					2								

25	26	27	28	29	30	31	32		33	34	35	36
क	S	S	S	ता	S	S	S	I	धा	S	गे	S
0									3			

37	38	39	40		41	42	43	44	45	46	47	48	
ति	र	कि	ट	I	धी	S	S	S	ना	S	S	S	।
-					4								

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 एकताल में कितनी मात्राएँ होती है?

क) 13

ख) 12

ग) 10

घ) 7

8.2 एकताल में ½ (एक बटा दो) करने पर कितनी मात्राएँ होगी ?

क) 24

ख) 48

ग) 35

घ) 12

8.3 एकताल में ¼ (एक बटा चार) करने पर कितनी मात्राएँ होगी ?

क) 12

ख) 51

ग) 48

घ) 20

8.4 ¼ (एक बटा चार) का प्रयोग द्रुत ख़याल में होता है?

क) सही

ख) गलत

8.5 ½ (एक बटा दो) का प्रयोग विलंबित ख़याल के साथ होता है?

क) सही

ख) गलत

8.4 सारांश

भैरवराग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत ½ (एक बटा दो) और ¼ (एक बटा चार) को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में ½ (एक बटा दो) और ¼ (एक बटा चार) के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए तालों के बोलों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। ½ (एक बटा दो) और ¼ (एक बटा चार) का अभ्यास अति विलंबित लय में होता है। ½ (एक बटा दो) और ¼ (एक बटा चार) का अपना महत्व है और इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- विश्रांति : इसे विश्राम या आराम कुछ देर रुकना कहते हैं
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: ख)

8.2 उत्तर: क)

8.3 उत्तर: ग)

8.4 उत्तर: ख)

8.5 उत्तर: क)

8.7 संदर्भ

डॉ.केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

8.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. ½ (एक बटा दो) और ¼ (एक बटा चार) का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. एकताल की ½ (एक बटा दो) लिखिए।

प्रश्न 3. एकताल की ¼ (एक बटा चार) लिखिए।

इकाई - 9
तीनताल में कायदा
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	तीनताल का परिचय
9.3.1	कायदा की परिभाषा
9.3.2	तीनताल में कायदा- 1
9.3.3	तीनताल में कायदा- 2
9.3.4	तीनताल में कायदा- 3
9.3.5	तीनताल का कायदा - 4
	स्वयं जांच अभ्यास1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह नवम् इकाई है। इस इकाई में वादन संदर्भ में, तीनताल और तीनताल के कायदे को संक्षिप्त परिचय को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में कायदों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में कायदों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए कायदों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बोलों का चलन नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे कायदा कहा जाता है। इसके बाद कायदे के पलटे भी बजते हैं। इससे लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं कायदों से बोलों की सफाई और निकास करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी कायदों के स्वरूप के साथ-साथ उनमें बजाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक वर्णों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से तीनताल के कायदों को तबला वाद्य पर बजा सकेगें।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तीनताल और तीनताल के कायदे के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- तीनताल के कायदे को बजानेकी क्षमता विकसित करना।
- तीनताल के कायदे को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।

- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, तीनताल के कायदे के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, तीनताल के कायदे को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, तीनताल के कायदे को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,वादन के अंतर्गत, तीनताल के कायदे के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 तीनताल का परिचय (वादन के संदर्भ में)

तीनताल

तीनताल अथवा त्रिताल तबले का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, लोकप्रिय एवं प्रचलित ताल है। इस ताल के अनेक रूप भिन्न-भिन्न नामों से भिन्न-भिन्न संगीत शैलियों हेतु प्रचलित हैं। जैसे तिलवाड़ा, पंजाबी (अद्धा), जत आदि। इन सभी के स्वरूप मूलतः तीनताल के समान ही है। माना जाता है कि कर्णाटकीय संगीत के आदि ताल के आधार पर इस ताल की रचना हुई है।

तीन ताल मूल रूप से मध्य, द्रुत और अति द्रुत लय का ताल है। तबला मुक्त वादन और कत्थक नृत्य के लिए इसका खूब प्रयोग होता है। ख्याल गायन के द्रुत (छोटा) ख्याल, तराना तन्त्र एवं सुषिर वाद्यों के मध्य एवं द्रुत लय के गत आदि प्रायः इसी में प्रस्तुत की जाती हैं।

चूँकि यह सम मात्रिक और सम पद ताल है, जिसके 16 मात्राएँ 4-4 मात्राओं के 4 समान विभागों में विभक्त होते हैं, अतः वादन एवं उपज आदि की दृष्टि से यह अपेक्षाकृत अधिक सुविधाजनक प्रतीत होता है। यही कारण है कि इसकी लोकप्रियता अन्य तालों से कहीं अधिक है।

मात्रा 16, विभाग 4, ताली 3, खाली 1,

1, 5, 13, पर ताली और 9 पर खाली

एकगुन -

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16	
धा	धिं	धिं	धा	।	धा	धिं	धिं	धा	।	धा	तिं	तिं	ता	।	ता	धिं	धिं	धा	।
X					2					0					3				

अथवा

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16	
ना	धिं	धिं	ना	।	ना	धिं	धिं	ना	।	ना	तिं	तिं	ना	।	ना	धिं	धिं	ना	।
X					2					0					3				

9.3.1 कायदा की परिभाषा

कायदा

कायदा के साथ एक और शब्द अभिन्नता से जुड़ा होता है-कानून-कायदा कानून। कायदा का अर्थ है पद्धति। किसी भी कार्य को करने का ढंग, सलीका। अंग्रेजी में इसके लिए METHOD शब्द का प्रयोग होता है। कायदा का महत्त्व जीवन के हर क्षेत्र में होता है। और, तबला भी इससे अछूता, अस्पर्शित नहीं है। कायदा शब्द की उत्पत्ति फारसी भाषा के कैद शब्द से हुई है। अतः इसमें कुछ कैद, प्रतिबन्ध और पाबन्दियाँ भी होती हैं। कायदे की शिक्षा विद्यार्थियों को उनके हाथ के रख-रखाव और बोलों के निकास के लिए दी जाती है। इसलिए, तबला के विद्यार्थियों की संगीत शिक्षा योग्य गुरुओं द्वारा प्रायः कायदे से ही आरम्भ की जाती है।

तबला वादन के क्षेत्र में कायदा उस रचना को कहते हैं। जिसकी गणना तबले के महत्त्वपूर्ण बोलों में होती है। चूँकि यह तबले का बोल होता है। अतः इसमें मात्र तबले के वर्णों का ही प्रयोग होता है, और यह तबले के तालों में ही पाया जाता है। कायदा की रचना करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि, जिस ताल में कायदा हो - वह उस ताल के विभाग और ताली, खाली के अनुरूप हो।

इसे तीनताल के निम्नलिखित प्रारम्भिक और अत्यन्त प्रचलित कायदा से समझा जा सकता है –

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16
धा	धा	ते	टे	|	धा	धा	तू	ना	।	ता	ता	ते	टे	।	धा	धा	तू	ना
X					2					0					3			

पल्टा, प्रकार, पेंच, किस्में, विस्तार विस्तारी

भारतीय संगीत के क्षेत्र में सृजनशीलता का काफी महत्त्वपूर्ण स्थान है। पाश्चात्य संगीत में संरचनाकार (कंपोजर) का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है, कलाकार की भूमिका उसे ठीक उसी तरह प्रस्तुत करने तक की होती है। जबकि, भारतीय संगीत में इसके विपरीत कलाकार की भूमिका ज्यादा महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि वह एक छोटी सी रचना को घण्टों अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय देता हुआ गाता या बजाता है।

जब किसी एक बोल का उसमें प्रयुक्त वर्णों के आधार पर भिन्न-भिन्न तरीके से विस्तार किया जाता है, तो उसे पल्टा, प्रकार, पेंच, किस्में आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। एक ही बोल को अलग-अलग जगहों से घुमाने या पलटने की प्रक्रिया होती है।

कायदा का विस्तार उसमें प्रयुक्त वर्णों के आधार पर किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के पल्टों का समावेश करके इसका विकास किया जाता है, और इसका समापन प्रायः तिहाई से होता है। एकल वादन और संगति दोनों में ही कायदा का वादन प्रमुखता से किया जाता है।

नीचे एकताल का एक कायदा प्रस्तुत है-

धातीधागे	धिनगिन	|	तिरकिटतकधा	गीनघेन	।	धागेतिरकिट	तिनकिन	
X			0			2		
तातीताके	तिनकिन	।	तिरकिटतकधा	गीनघेन	।	धागेतिरकिट	धिनगिन	। धाती
0			3			4		X

9.3.2 तीनताल में कायदा – 1

तीनताल कायदा नं० १

धा धा ते टे । धा धा तू ना । ता ता ते टे । धा धा तू ना ।।।

X 2 0 3

पलटे

धा धा ते टे । धा धा ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

ता ता ते टे । ता ता ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

X 2 0 3

धा धा ते टे । ते टे ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

ता ता ते टे । ते टे ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

X 2 0 3

धा धा ते टे । धा ते टे धा । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

ता ता ते टे । ता ते टे ता । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

X 2 0 3

धा धा धा ते । टे धा ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

ता ता ता ते । टे ता ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

X 2 0 3

धा ते टे धा । S धा ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

ता ते टे ता । S ता ते टे । धा धा ते टे । धा धा तू ना ।

X 2 0 3

तिहाई

धा धा ते टे । धा धा तू ना । धा S S S । धा धा ते टे ।

धा धा तू ना । धा S S S । धा धा ते टे । धा धा तू ना । धा

X 2 0 3 X

9.3.3 तीनताल में कायदा -2

तीनताल कायदा नं० २

धा धा तिर किट । धा धा तू ना
X 2

ता ता तिर किट । धा धा तू ना
0 3

पलटे

धाधा तिरकिट धाधा तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तू ना
X 2

ताता तिरकिट ताता तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तू ना
0 3

धाधा तिरकिट तिरकिट तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तूना
X 2

ताता तिरकिट तिरकिट तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तूना
0 3

धाधा तिरकिट Sधा तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तूना
X 2

ताता तिरकिट Sता तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तूना
0 3

धातिर किटधा तिरकिट धाधा । धाधा तिरकिट धाधा तूना
X 2

तातिर किटता तिरकिट ताता । धाधा तिरकिट धाधा तूना
0 3

तिरकिट धाधा धाधा तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तूना
X 2

तिरकिट ताता ताता तिरकिट । धाधा तिरकिट धाधा तूना
0 3

तिहाई

धाधा तिरकिट धाधा तूना । धाS SS धाधा तिरकिट ।
X 2

धाधा तूना धाS SS । धाधा तिरकिट धाधा तूना । धा

0 3 X

9.3.4 तीनताल में कायदा – 3

धाति टधा तिट धाधा । तिट धागे तेन किन |

ताति टता तिट ताता । तिट धागे धेन गिन |

इस कायदा में प्रयुक्त धा, तिट, धागे, तेनकिन आदि वर्णों के आधार पर इसका विविध विस्तार किया जा सकता है। यहाँ इन 4 वर्णों के आधार पर बनने वाले 4 पल्टे प्रस्तुत हैं-

(1) धा का पल्टा-

धाति टधा धाति टधा धाधा तिट धेन गिन,

धाति टधा तिट, धाधा तिट, धागे तेन किन।

ताति टता ताति टता ताता तिट तेन किन,

धाति टधा तिट धाधा तिट धागे धेन गिन

(2) तिट का पल्टा-

तिटतिट धाधातिट धाधातिट धेनगिन,

धातिटधा तिटधाधा तिटधागे तेनकिन।

तिटतिट ताताتिट तातातिट तेनकिन,

धातिटधा तिटधाधा तिटधागे धेनगिन।

(3) धागे का पल्टा-

धागेधागे धागेधेन गिनधागे धेनगिन,

धातीटधा तिटधाधा तिटधागे तेनकिन।

ताकेताके ताकेतेन किनताके तेनकिन,

धातिटधा तिटधाधा तिटधागे धेनगिन।

(4) धेनगिन का पल्टा-

धेनगिन धेनगिन धेनगिन धेनगिन,

धातिटधा तिटधाधा तिटधागे तेनकिन।

तेनकिन तेनकिन तेनकिन तेनकिन,

धातिटधा तिटधाधा तिटधागे धेनगिन।

तिहाई

धातीटधा तिटधाधा तिटधागे तेनकिन धाती धाSधाती टधातिट धाधातिट धागेतेन किनधाS तीSधाS धातीटधा तिटधाधा तिटधागे तेनकिन धाSतीS 1 धा (तिहाई बेदम है)

9.3.5 तीनताल में कायदा - 4

धात्रकधि तिटघिन धातिधागे नाधागेति नाधागेना तिनकधा तिधागेना तिनाकिना,
तात्रकति तिटकिन तातिताके नाताकेति नाताकेना तिनकधा तिधागेना धिनागिना

पलटे –

1 . धात्रकधितिटघिन धातिधागेनाधागेति नाधागेनातिनकधा तिधागेनाधिनागिना धात्रकधितिटघिन धातिधागेनाधागेति नाधागेनातिनकधा तिधागेनातिनाकिना + खाली

2. धात्रकधितिटघिन धातिधागेधिनागिना धात्रकधितिटघिन धातिधागेधिनागिना धात्रकधितिटघिन धातिधागेनाधागेति नाधागेनातिनकधा तिधागेनातिनाकिना + खाली

3 . धात्रकधितिटघिन धिटगिनघिटगिन धात्रकधितिटघिन धिटगिनधिटगिन + कायदा + खाली

4 . धात्रकधातिधागेना धात्रकधातिधागेना धात्रकधातिधागेना धातिधागेधिनागिना +कायदा+खाली

5 . धिटगिनधिटगिन धातिधागेधिनागिना धिटगिनधिटगिन धातिधागेधिनागिना +कायदा+खाली

6 . धितिटधितिटगिन धातिधागेधिनागिना धितिटधितिटगिन धातिधागेधिनागिना +कायदा+खाली

7 . धितिटधितिटगिन धितिटधितिटगिन धितिटधितिटगिन धातिधागेधिनागिना +कायदा + खाली

8 . धिटगिनधिटगिन धागेनातिनकधिन धिटगिनधिटगिन धातिधागेधिनागिना + कायदा + खाली

9 . धातिधागेनाधागेति नाधागेनातिनकधा तिधागेनातिनकधा तिधागेनातिनकता +कायदा + खाली

10. धागेनातिनकधिन धात्रकधितिटगिन धागेनातिनकधिन धात्रकधितिटगिन + कायदा + खाली

11. धागेनातिनकधिन धागेनातिनकधिन धात्रकधितिटगिन धागेनातिनकधिन + कायदा + खाली

तिहाई : -

धात्रकधितिटगिन धातिधागेधिनागिना धाऽकतधाऽकत धाऽकतधाऽकत धाऽकतधाऽकत धाऽऽऽधात्रकधि तिटगिनधातिधागे धिनागिनाधाऽकत धाऽकतधाऽकत धाऽकतधाऽकत धाऽकतधाऽऽऽ धात्रकधितिटगिन धातिधागेधिनागिना धाऽकतधाऽकत धाऽकतधाऽकत धाऽकतधाऽकत । धाऽऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 तीनताल में कितनी मात्राएँ हैं?

क) 16

ख) 12

ग) 10

घ) 8

9.2 कायदे के बीच में क्या बजाय जाता हैं?

क) रेला

ख) पलटे

ग) टुकड़े

घ) संगीत

9.3 कायदे में कितने पलटे बजते है ?

क) चार

ख) दो

ग) अनगिनत

घ) इसमें कोई भी नहीं

9.4 कायदा किन किन तालों में बज सकता है?

क) सिर्फ तीनताल में

ख) सभी तालों में

9.5 कायदे का अंत तिहाई से किया जाता है?

क) सही

ख) गलत

9.4 सारांश

तीनताल भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रचलित ताल हैं। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत तीनताल को बजाया जाता है।शास्त्रीय संगीत में तालों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए कायदों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यह कायदे अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में में बजाए जाते हैं। इन्हीं कायदों से,तालों के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के पलते और प्रकारों का निर्माण किया जाता है।

9.5 शब्दावली

- तिहाई – संगीत में तिहाई का मतलब है, बोलों के एक विशिष्ट समूह को तीन बार बजाना l
- पलटा - एक ही बोल को अलग-अलग जगहों से घुमाने या पलटने की प्रक्रिया को पलटा कहा जाता है।
- लय: वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय:वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय:वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ख)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: ख)

9.5 उत्तर: क)

9.7 संदर्भ

श्री विक्रांत शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अगस्त 2024।

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

9.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. भातखंडे താललिपि पद्धति के अनुसार तीनताल के बोल लिखिए।

प्रश्न 3. दो कायदे पलटों और तिहाई के साथ लिखिए।

इकाई -10
पाठ्यक्रम में प्रयुक्त तीनताल
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्यतथा परिणाम
10.3	तीनताल का परिचय
10.3.1	तीनताल का ठेका व एकगुन
10.3.2	तीनताल की दुगुन
10.3.3	तीनताल की तिगुन
10.3.4	तीनताल की चौगुन
10.4	स्वयं जांच अभ्यास1
10.5	सारांश
10.6	शब्दावली
10.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
10.8	संदर्भ
10.9	अनुशंसित पठन
10.10	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में, तीनताल को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार तालों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत ताल का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर तालों के प्रकार, तिहाई, उठान, लग्गी इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीनताल के स्वरूप के साथ-साथ भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से तीनताल को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तीनताल, की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- तीनताल, को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- तीनताल, को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनी की पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- पाठ्यक्रम की तालों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- तालों को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 तीनताल का परिचय (वादन के संदर्भ में)

--तीन ताल—

तीन ताल में सोलह मात्रा, चारों भाग समान।

एक, पाँच, तेरह पर ताली, नौ पर खाली जान ।।

होत प्रयोग, ख्याल ठुमरी में, द्रुत लय बजत तराने।

चंचल प्रकृति चतस्त्र जाति की, याहि गुनिजन पहचाने।।

तीनताल अथवा त्रिताल तबले का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, लोकप्रिय एवं प्रचलित ताल है। इस ताल के अनेक रूप भिन्न-भिन्न नामों से भिन्न-भिन्न संगीत शैलियों हेतु प्रचलित हैं। जैसे तिलवाड़ा, पंजाबी (अद्धा), जत आदि। इन सभी के स्वरूप मूलतः तीनताल के समान ही है। माना जाता है कि कर्णाटकीय संगीत के आदि ताल के आधार पर इस ताल की रचना हुई है। तीन ताल मूल रूप से मध्य, द्रुत और अति द्रुत लय का ताल है। तबला मुक्त वादन और कत्थक नृत्य के लिए इसका खूब प्रयोग होता है। ख्याल गायन के द्रुत (छोटा) ख्याल, तराना तन्त्र एवं सुषिर वाद्यों के मध्य एवं द्रुत लय के गत आदि प्रायः इसी में प्रस्तुत की जाती हैं। चूँकि यह सम मात्रिक और सम पद ताल है,

जिसके 16 मात्राएँ 4-4 मात्राओं के 4 समान विभागों में विभक्त होते हैं, अतः वादन एवं उपज आदि की दृष्टि से यह अपेक्षाकृत अधिक सुविधाजनक प्रतीत होता है। यही कारण है कि इसकी लोकप्रियता अन्य तालों से कहीं अधिक है।

मात्रा 16, विभाग 4, ताली 3, खाली 1,

1, 5, 13, पर ताली और 9 पर खाली

10.3.1 तीनताल का ठेका व एकगुन

एकगुन -

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16	
धा	धिं	धिं	धा	।	धा	धिं	धिं	धा	।	धा	तिं	तिं	ता	।	ता	धिं	धिं	धा	।
X					2					0					3				

अथवा

1	2	3	4		5	6	7	8		9	10	11	12		13	14	15	16	
ना	धिं	धिं	ना	।	ना	धिं	धिं	ना	।	ना	तिं	तिं	ना	।	ना	धिं	धिं	ना	।
X					2					0					3				

10.3.2 तीनताल की दुगुन

दोगुन –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा।	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा।	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा।	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा।
X				2				0				3			

10.3.3 तीनताल की तिगुन

तिगुन -

1	2	3	4	5	6	7	8
धाधिंधिं	धाधाधिं	धिंधाधा	तिंतिंता।	ताधिंधिं	धाधाधिं	धिंधाधा	धिंधिंधा।
X				2			

9	10	11	12	13	14	15	16
धातिंतिं	ताताधिं	धिंधाधा	धिंधिंधा।	धाधिंधिं	धाधातिं	तिंताता	धिंधिंधा।
0				3			

10.3.4 तीनताल की चौगुन

चौगुन –

धाधिंधिंधा	धाधिंधिंधा	धातिंतिंता	ताधिंधिंधा	। धाधिंधिंधा	धाधिंधिंधा	धातिंतिंता	ताधिंधिंधा	।
X				2				
धाधिंधिंधा	धाधिंधिंधा	धातिंतिंता	ताधिंधिंधा	। धाधिंधिंधा	धाधिंधिंधा	धातिंतिंता	ताधिंधिंधा	।
0				3				

10.4 स्वयं जांच अभ्यास

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

10.2. तीन ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

10.3. तीन ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

10.4. तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

10.5. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) इसमें कोई नहीं

10.6. तीनताल में कितनी खाली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

10.7 तीनताल में 10वीं मात्रा पे कोनसा बोल आता हैं?

क) ता

ख) धिन

ग) तिन

घ) तीट

10.8. तीनताल में धा कितने होते है?

क) 6

ख) 1

ग) 3

घ) 5

10.9. तीन ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धिं

ग) तिं

घ) ता

10.10 तीनताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धी

ग) ती

घ) ता

10.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में एकताल काफी प्रयोग की जाती हैं। तीनताल 16 मात्रा की ताल है। इस ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। एकताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

10.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

10.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: घ)

10.2 उत्तर: ग)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: क)

10.5 उत्तर: घ)

10.6 उत्तर: क)

10.7 उत्तर: ग)

10.8 उत्तर: क)

10.9 उत्तर: ग)

10.10 उत्तर: क)

10.8 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

10.9 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

10.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न2. तीनताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन लिखिए ।

प्रश्न3. तीनताल को हाथ पर बोलकर बताइए।

प्रश्न4. तीनताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन हाथ पर बोलकर बताइए।

इकाई -11
पाठ्यक्रम में प्रयुक्त एकताल
(वादन के सन्दर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्यतथा परिणाम
11.3	एकताल का परिचय
11.3.1	एकताल का ठेका व एकगुन
11.3.2	एकताल की दुगुन
11.3.3	एकताल की तिगुन
11.3.4	एकताल की चौगुन
11.4	स्वयं जांच अभ्यास1
11.5	सारांश
11.6	शब्दावली
11.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
11.8	संदर्भ
11.9	अनुशंसित पठन
11.10	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली एकताल को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। ख़याल गायकी में एकताल काफी प्रयोग की जाती हैं। एकताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि के साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी एकताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगेतथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- एकताल का परिचय प्रदान करना।
- एकताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- एकताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थीमें कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, एकताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, एकताल कोबजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, एकताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, एकताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

11.3 एकताल का परिचय

एक ताल -

छः विभाग अरु मात्रा बारह, कहत गुणी एक ताल।

एक, पाँच, नौ, ग्यारह पर ताली, द्रुत विलम्ब सब चाल ॥

खाली तीन और सात पर रहती, जाति चतस्त्र कहाय।

छोटे-बड़े ख्याल गुनि गावत, तराना सरस सुहाय।।

एकताल की गणना तबले के अत्यन्त लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण तालों में होती है। यह तबले का ताल है, और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अति विलम्बित लय से अति द्रुत लय तक में यह पूरी सफलता के साथ

बजाया जा सकता है विलम्बित ख्याल, मध्य और द्रुत ख्याल, तराना, विलम्बित और द्रुत गत की संगति तथा तबले पर मुक्त वादन आदि के लिए इसका मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है। यह कर्णप्रिय, मधुर ताल है, जिसमें नाना प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं। इसके नामकरण के विषय में कोई तार्किक या सन्तोषजनक व्याख्या नहीं मिलती। 12 मात्रे के इस ताल की गति 2/2/2/2/2/2/ है। इसमें 1, 5, 9, 11 मात्राओं पर तालि हैं, और 3 तथा 7 मात्रे पर खालि।

मात्रा 12, विभाग 6 , ताली 4 और खाली 2

ताली 1, 5, 9, 11, पर और खाली 3, 7, पर।

11.3.1 एकताल का ठेका व एकगुन

एकगुन –

1	2		3	4		5	6		7	8		9	10		11	12	
धिं	धिं	।	धागे	तिरकिट	।	तू	ना	।	क	त्ता	।	धागे	तिरकिट	।	धी	ना	।
X			0			2			0			3			4		

11.3.2 एकताल का ठेका व दुगुन

दोगुन -

धिंधिं	धागेतिरकिट ।	तूना	कत्ता ।	धागेतिरकिट	धीना ।	धिंधिं	धागेतिरकिट ।	तूना	कत्ता ।	धागेतिरकिट	धीना ।
X		0		2		0		3		4	

11.3.3 एकताल का ठेका व तिगुन

तिगुन –

धिंधिंधागे	तिरकिटतूना ।	कत्ताधागे	तिरकिटधीना ।	धिंधिंधागे	तिरकिटतूना ।	कत्ताधागे	तिरकिटधीना ।
X		0		2		0	
धिंधिंधागे	तिरकिटतूना ।	कत्ताधागे	तिरकिटधीना ।				
3		4					

11.3.4 एकताल का ठेका व चौगुन

चौगुन -

धिंधिंधागेतिरकिट तूनाकत्ता । धागेतिरकिटधीना धिंधिंधागेतिरकिट । तूनाकत्ता धागेतिरकिटधीना ।

X 0 2

धिंधिंधागेतिरकिट तूनाकत्ता । धागेतिरकिटधीना धिंधिंधागेतिरकिट । तूनाकत्ता धागेतिरकिटधीना ।

0 3 4

11.4 स्वयं जांच अभ्यास

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1. एकताल में तीसरी मात्रा पे खाली होती हैं?

क) गलत

ख) सही

11.2. एकताल में 13मात्राएँ होती हैं?

क) सही

ख) गलत

11.3. तीन ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 7

11.4. एकताल में कितने सम होते है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

11.5. एकताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 12

घ) 8

11.6. एकताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 4

ख) 2

ग) 3

घ) 6

11.7 एकताल में कितनी खाली होती हैं?

क) 2

ख) 5

ग) 6

घ) 3

11.8. एक ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

11.9. एकताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धिं

ग) धी

घ) ता

11.10 एकताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धी

ग) तू

घ) ता

11.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में एकताल काफी प्रयोग की जाती हैं। एकताल 12 मात्रा की ताल है। इस ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। एकताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

11.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

11.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: ख)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: घ)

11.4 उत्तर: क)

11.5 उत्तर: ग)

11.6 उत्तर: क)

11.7 उत्तर: क)

11.8 उत्तर: क)

11.9 उत्तर: ग)

11.10 उत्तर: ग)

11.8 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

11.9 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

11.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. एकताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न2. एकताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन लिखिए ।

प्रश्न3. एकताल को हाथ पर बोलकर बताइए।

प्रश्न4. एकताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन हाथ पर बोलकर बताइए।

इकाई -12
पाठ्यक्रम में प्रयुक्त चौताल
(वादन के सन्दर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्यतथा परिणाम
12.3	चौताल का परिचय
12.3.1	चौताल का ठेका व एकगुन
12.3.2	चौताल की दुगुन
12.3.3	चौताल की तिगुन
12.3.4	चौताल की चौगुन
12.4	स्वयं जांच अभ्यास1
12.5	सारांश
12.6	शब्दावली
12.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
12.8	संदर्भ
12.9	अनुशंसित पठन
12.10	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR कीयह बारवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली चौताल को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। चौताल पखावज की ताल है

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। ख़याल गायकी में चौताल काफी प्रयोग की जाती हैं। चौताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस ताल को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी चौताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगेतथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- चौताल का परिचय प्रदान करना।
- चौताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- चौताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थीमें कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, चौताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, चौताल कोबजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, चौताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, चौताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

12.3 चौताल का परिचय

चार ताल –

चार ताल में बारह मात्रा, विभाग बनाये छै।

एक पाँच, नौ, ग्यारह पै ताली, खाली तीन सात पर है।।

होत प्रयोग ध्रुपद गायकी में प्रकृति गंभीर बनाई।

हाथ खुले बाजत मृदंग पर, जाति चतस्त्र कहाई।।

चौताल को चारताल भी कहते हैं l यह पखावज का अत्यन्त लोकप्रिय ताल है, इसके कुछ अन्य नाम भी प्रचलित हैं, जैसे - चन्दनाग, मंजी बहट ताल और बड़ा चौताल। फारसी में इसे चहार जर्ब कहते हैं। सुबोध कान्त नंदी ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संगीत ताल ओ छन्द' में लिखा है कि संगीत भाष्य के अनुसार द्वापर युग में इसे रास ताल और मोहन ताल कहा जाता था। डॉ. अरुण कुमार सेन के अनुसार इस ताल का प्रचलन बैजू बावरा, तानसेन और

गोपाल नायक के युग में भी था, यह उचित भी जान पड़ता है। क्योंकि यह ध्रुवपद की संगति में प्रयुक्त होता है, और ध्रुवपद प्राचीनतम गायन शैली है। शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर ग्रन्थ में वर्णित तालों के क्रम 100 पर वर्णायति ताल का उल्लेख है, जिसका लक्षण 2 लघु और 2 द्रुत अंकित है, जो वर्तमान चारताल के अनुरूप है।

ध्रुवपद गायन, ध्रुवपद अंग के वादन तथा पखावज पर एकल वादन हेतु इस ताल का मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है, यह खुले और जोरदार अंग का है। 12 मात्राओं के इस ताल में 1, 5, 9, 11 मात्राओं पर तालि हैं, जो इसके चारताल नाम को चरितार्थ करती हैं, इसकी 3 और 7 मात्राओं पर खालि है।

मात्रा 12, विभाग 6, ताली 4, खाली 2,

1, 5, 9, 11, पर ताली और 3, 7, पर खाली

12.3.1 चौताल का ठेका व एकगुन

एकगुन –

1	2		3	4		5	6		7	8		9	10		11	12
धा	धा	।	दिं	ता	।	किट	धा	।	दिं	ता	।	तिट	कत	।	गदि	गन
X			0			2			0			3			4	

12.3.2 चौताल की दुगुन

दोगुन –

धाधा	दिंता	।	किटधा	दिंता	।	तिटकत	गदिगन	।	धाधा	दिंता	।	किटधा	दिंता	।	तिटकत	गदिगन	
X			0			2			0			3			4		

12.3.3 चौताल की तिगुन

तिगुन -

धाधादिं	ताकिटधा	।	दिंतातिट	कतगदिगन	।	धाधादिं	ताकिटधा	।	दिंतातिट	कतगदिगन	।
X			0			2			0			
धाधादिं	ताकिटधा	।	दिंतातिट	कतगदिगन								
3			4									

12.3.4 चौताल की चौगुन

चौगुन -

धाधादिंता	किटधादिंता	।	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	।	किटधादिंता	तिटकतगदिगन	।
X			0			2		
धाधादिंता	किटधादिंता	।	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	।	किटधादिंता	तिटकतगदिगन	।
0			3			4		

12.4 स्वयं जांच अभ्यास

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1. चौताल में तीसरी मात्रा पे खाली होती हैं ?

क) गलत

ख) सही

12.2. चौताल में 13मात्राएँ होती हैं ?

क) सही

ख) गलत

12.3. चौताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं ?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 7

12.4. चौताल में कितने सम होते है ?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

12.5. चौताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 12

घ) 8

12.6. चौताल में कितनी ताली होती हैं ?

क) 4

ख) 2

ग) 3

घ) 6

12.7 चौताल में कितनी खाली होती हैं ?

क) 2

ख) 5

ग) 6

घ) 3

12.8. चौताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है ?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

12.9. चौताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है ?

क) धा

ख) धिं

ग) गदी

घ) ता

12.10 चौताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है ?

क) धा

ख) धी

ग) किट

घ) ता

12.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में चौताल काफी प्रयोग की जाती हैं। चौताल 12 मात्रा की ताल है। इस ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। चौताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

12.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

12.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: ख)

12.2 उत्तर: ख)

12.3 उत्तर: घ)

12.4 उत्तर: क)

12.5 उत्तर: ग)

12.6 उत्तर: क)

12.7 उत्तर: क)

12.8 उत्तर: क)

12.9 उत्तर: ग)

12.10 उत्तर: ग)

12.8 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश ।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर ।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद ।

12.9 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश ।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर ।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद ।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

12.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. चौताल का परिचय लिखिए ।

प्रश्न2. चौताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन लिखिए ।

प्रश्न3. चौताल को हाथ पर बोलकर बताइए ।

प्रश्न4. चौताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन हाथ पर बोलकर बताइए ।

इकाई -13
पाठ्यक्रम में प्रयुक्त ताल दादरा
(वादन के सन्दर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्यतथा परिणाम
13.3	दादरा ताल का परिचय
13.3.1	दादरा ताल का ठेका व एकगुन
13.3.2	दादरा ताल की दुगुन
13.3.3	दादरा ताल की तिगुन
13.3.4	दादरा ताल की चौगुन
13.4	स्वयं जांच अभ्यास1
13.5	सारांश
13.6	शब्दावली
13.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
13.8	संदर्भ
13.9	अनुशंसित पठन
13.10	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR कीयह तेहरवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली दादरा ताल को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। ग़ज़लों में दादरा ताल काफी प्रयोग की जाती हैं। दादरा ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस ताल को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी दादरा ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगेतथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- दादरा ताल का परिचय प्रदान करना।
- दादरा ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- दादरा ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थीमें कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, दादरा ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, दादरा ताल कोबजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, दादरा ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, दादरा ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

13.3 दादरा ताल का परिचय

दादरा ताल –

मात्रा छै विभाग दो, नाम दादरा ताल।

ताली एक, चार पे खाली, शोभित लाल गुलाल।।

बाजत गजल, भजन, गीत और लोक गीत के संग।

सिने संगीत पर छाय रही, तिस्त्र जाति की अंग।।

दादरा तबले का अत्यन्त लोकप्रिय ताल है। उपशास्त्रीय, सुगम, लोक और फिल्मी संगीत की संगति में इसका मुख्य रूप से प्रयोग होता है। ठुमरी, दादरा, गज़ल, भजन चैती, कजरी आदि की संगति में प्रायः इस ताल का प्रयोग होता है। तबले के साथ-साथ ढोलक, खोल, ताशा, नक्कारा, दुक्कड़ और नाल जैसे वाद्यों पर भी इसका वादन होता है। मूलतः चंचल और शृंगारिक प्रवृत्ति का ताल होने के कारण प्रायः मध्य और द्रुत लय में ही इसका वादन होता है। लेकिन ठुमरी और दादरा अंग की गायकी के साथ इसका विलम्बित रूप भी यदा-कदा देखने को मिलता है। भिन्न-भिन्न प्रकार की लग्गी-लड़ियों का इसमें खूबसूरती से प्रयोग किया जाता है। 6 मात्राओं का यह सम पद ताल 3/3/मात्राओं के 2 खण्डों में विभाजित है। इसकी प्रथम मात्रा पर ताली और चौथी पर खाली है।

मात्रा 6, विभाग 2, ताली 1 और खाली 1
1 पर ताली और 4 पर खाली

13.3.1 दादरा ताल का ठेका व एकगुन

एकगुन -

1	2	3		4	5	6	
धा	धी	ना	।	धा	तू	ना	।
X				0			

13.3.2 दादरा ताल की दुगुन

दोगुन -

धाधी	नाधा	तूना	।	धाधी	नाधा	तूना	।
X				0			

13.3.3 दादरा ताल की तिगुन

तिगुन -

धाधीना	धातूना	धाधीना	।	धातूना	धाधीना	धातूना	।
X				0			

13.3.4 दादरा ताल की चौगुन

चौगुन -

धाधीनाधा	तूनाधाधी	नाधातूना	।	धाधीनाधा	तूनाधाधी	नाधातूना	।
X				0			

13.4 स्वयं जांच अभ्यास

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1. दादरा ताल में तीसरी मात्रा पे खाली होती हैं ?

क) गलत

ख) सही

13.2. दादरा ताल में 7 मात्राएँ होती हैं ?

क) सही

ख) गलत

13.3. दादरा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं ?

क) 1

ख) 5

ग) 3

घ) 4

13.4. दादरा ताल में कितने सम होते है ?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

13.5. दादरा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं ?

क) 10

ख) 16

ग) 6

घ) 8

13.6. दादरा ताल में कितनी ताली होती हैं ?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 6

13.7 दादरा ताल में कितनी खाली होती हैं ?

क) 1

ख) 5

ग) 6

घ) 3

13.8. दादरा ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है ?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

13.9. दादरा ताल में 2सरी मात्रा पर कौन सा बोल होता है ?

क) धा

ख) धिं

ग) गदी

घ) ता

13.10 दादरा ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है ?

क) धा

ख) धी

ग) किट

घ) ता

13.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में चौताल काफी प्रयोग की जाती हैं। दादरा ताल 6 मात्रा की ताल है। इस ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। दादरा ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

13.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

13.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर: ख)

13.3 उत्तर: घ)

13.4 उत्तर: क)

13.5 उत्तर: ग)

13.6 उत्तर: क)

13.7 उत्तर: क)

13.8 उत्तर: क)

13.9 उत्तर: ख)

13.10 उत्तर: क)

13.8 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

13.9 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

13.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. दादरा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न2. दादरा ताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन लिखिए ।

प्रश्न3. दादरा ताल को हाथ पर बोलकर बताइए।

प्रश्न4. दादरा ताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन हाथ पर बोलकर बताइए।

इकाई -14
पाठ्यक्रम में प्रयुक्त ताल रूपक
(वादन के सन्दर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
14.1	भूमिका
14.2	उद्देश्य तथा परिणाम
14.3	दादरा ताल का परिचय
14.3.1	दादरा ताल का ठेका व एकगुन
14.3.2	दादरा ताल की दुगुन
14.3.3	दादरा ताल की तिगुन
14.3.4	दादरा ताल की चौगुन
14.4	स्वयं जांच अभ्यास1
14.5	सारांश
14.6	शब्दावली
14.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
14.8	संदर्भ
14.9	अनुशंसित पठन
14.10	पाठगत प्रश्न

14.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR कीयह चौदवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली रूपक ताल को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। एकल वादन और ग़ज़लों में रूपक ताल काफी प्रयोग की जाती हैं। रूपक ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस ताल को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी रूपक ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगेतथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- रूपक ताल का परिचय प्रदान करना।
- रूपक ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- रूपक ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थीमें कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने केपरिणाम

- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, रूपक ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,ताल के संदर्भ में, रूपक ताल कोबजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, रूपक ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,ताल के संदर्भ में, रूपक ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

14.3 रूपक ताल का परिचय

रूपक ताल –

मात्रा सात विभाग तीन रूपक का है रूप।

ताली एक, चार और छ पर, सुन्दर ताल अनूप।।

भजन, गीत औ ख्याल में, सोहत है यह ताल।

विलम्बित और द्रुत लय की, राखत रूप विशाल।।

तबले का अत्यन्त लोकप्रिय ताल है रूपक, जिसका प्रयोग शास्त्रीय और उपशास्त्रीय दोनों ही प्रकार की रचनाओं में समान रूप से होता है। विगत कुछ वर्षों से इस ताल में विलम्बित (अति विलम्बित नहीं) ख्याल का गायन भी होने लगा है। मध्य लय के ख्याल, गीत, भजन, ग़ज़ल एवं तन्त्र तथा सुषिर वाद्यों के गतों की संगति में इस ताल का प्रयोग होता है। इस ताल में तबला वादक स्वतन्त्र वादन भी प्रस्तुत करते हैं। अतः पेशकार, कायदे, रेले, टुकड़े,

मुखड़े, गतें जैसी रचनाएँ भी इसमें मिलती हैं। अति द्रुत लय में इस ताल का वादन उचित नहीं माना जाता। पखावज का तीवरा ताल और कर्णाटकीय संगीत के मिश्र जाति का त्रिपुट ताल इसके सदृश है।

7 मात्राओं के इस ताल का विभाग 3/2/2 का होने के कारण यह विषम पद ताल हुआ। कुछ लोग इसके सम पर खाली मानते हैं, जबकि कुछ ताली - क्योंकि अन्य किसी भी ताल में सम पर खाली नहीं है। किन्तु अपवाद स्वरूप इस ताल के सम पर खाली माना जा सकता है। क्योंकि इसके सम पर बन्द बोलों का प्रयोग तो सभी करते हैं।

मात्रा 7, विभाग 3, और ताली 3 ताली 1, 4 और 6 पर, कोई खाली नहीं

कुछ लोग रूपक ताल की पहली मात्रा पर खाली देते हैं और इसका प्रमाण यह देते हैं कि 'ती' बन्द बोल है। सम पर बन्द बोल नहीं होना चाहिये। अगर इस तर्क पर ती या पहली मात्रा पर खाली मानी जाय तो धमार ताल की पहली मात्रा पर भी खाली माननी चाहिये क्योंकि धमार ताल में भी सम पर बन्द बोल है। धमार ताल में प्रथम मात्रा पर खाली नहीं सम है, इसलिये रूपक ताल में भी पहली मात्रा पर खाली नहीं सम है।

14.3.1 रूपक ताल का ठेका व एकगुन

एकगुन -

1	2	3	4	5	6	7
ती	ती	ना ।	धी	ना ।	धी	ना ।
X0			2		3	

14.3.2 रूपक ताल की दुगुन

दोगुन -

तीती	नाधी	नाधी	।	नाती	तीना	।	धीना	धीना	।
0				2			3		

14.3.3 रूपक ताल की तिगुन

तिगुन -

तीतीना	धीनाधी	नातीती	।	नाधीना	धीनाती	।	तीनाधी	नाधीना	।
0				2			3		

14.3.4 रूपक ताल की चौगुन

चौगुन –

तीतीनाधी	नाधीनाती	तीनाधीना	।	धीनातीती	नाधीनाधी	।	नातीतीना	धीनाधीना
0				2			3		

14.4 स्वयं जांच अभ्यास

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1. रूपक ताल में तीसरी मात्रा पे खाली होती हैं?

क) गलत

ख) सही

14.2. रूपक ताल में 7 मात्राएँ होती हैं?

क) सही

ख) गलत

14.3. रूपक ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 2

ख) 5

ग) 4

घ) 1

14.4. रूपक ताल में कितने सम होते है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

14.5. रूपक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 7

घ) 8

14.6. रूपक ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 2

ख) 1

ग) 3

घ) 6

14.7 रूपक ताल में कितनी खाली होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 6

घ) 3

14.8. रूपक ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

14.9. रूपक ताल में 2सरी मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) ती

ग) गदी

घ) ता

14.10 रूपक ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धी

ग) ना

घ) ता

14.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में रूपक ताल काफी प्रयोग की जाती हैं। रूपक ताल 7 मात्रा की ताल है। इस ताल को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। रूपक ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

14.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

14.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1 उत्तर: क)

14.2 उत्तर: क)

14.3 उत्तर: घ)

14.4 उत्तर: क)

14.5 उत्तर: ग)

14.6 उत्तर: क)

14.7 उत्तर: क)

14.8 उत्तर: क)

14.9 उत्तर: ख)

14.10 उत्तर: ग)

14.8 संदर्भ

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

14.9 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

14.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. रूपक ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. रूपक ताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन लिखिए ।

प्रश्न 3. रूपक ताल को हाथ पर बोलकर बताइए।

प्रश्न 4. रूपक ताल की एकगुन , दुगुन , तिगुन , और चौगुन हाथ पर बोलकर बताइए।

इकाई -15
(तबला के वर्ण)
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
15.1	भूमिका
15.2	उद्देश्य तथा परिणाम
15.3	तबला के वर्ण
15.3.1	केवल दाहिने तबले पर निकलने वाले वर्ण
15.3.2	केवल बायें तबले पर निकलने वाले वर्ण
15.3.3	दोनों तबले पर निकलने वाले वर्ण
15.3.4	कुछ अन्य वर्ण निकालने की विधि
	स्वयं जांच अभ्यास1
15.4	सारांश
15.5	शब्दावली
15.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर
15.7	संदर्भ
15.8	अनुशंसित पठन
15.9	पाठगत प्रश्न

15.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSI503PR की यह पन्द्रवीं इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में, तबला के वर्णों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला के प्रस्तुतिकरणके लिए तथा तबला के बोलों को जानने के लिए वर्णों काअभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तबला के वर्णों के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से वर्णों को तबले पर बजा सकेंगे।

15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तबला के वर्णों के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- तबला के बोलों को तबले पे बजाने की क्षमता विकसित करना।
- तबला के बोलोंको भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थीमें कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, तबला के बोलों के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत,तबला के वर्णों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, तबला के बोलों को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी,वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में,वादन के अंतर्गत, तबला के वर्णों को जोडकर ,संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

15.3 तबला के वर्ण (वादन के संदर्भ में)

तबला के दस वर्ण और उन्हें बजाने की विधि तबले पर निकलने वाली ध्वनियों को वर्ण कहते हैं।
वर्ण 10 माने जाते हैं, किन्तु कुछ विद्वान 7 वर्ण मानते हैं।
उनके नाम हैं-

केवल दाँये पर बजने वाले वर्ण-

1- ता या ना, 2- ति या ती. 3- दिं या थुं, 4- तू, 5- ते, 6- रे या टे।

केवल बाँये पर बजने वाले वर्ण-

(7) गे या घे, (8) क़, के, की, कत्।

दोनों पर बजने वाले वर्ण-

(9) धा और (10) धिं।

कुछ लोगों के मत से सात वर्ण होते हैं।

उनके नाम हैं- (1) ती, (2) ना, (3) दिं, (4) तिं, (5) रे, (6) धी, (7) कत्।

ये सभी वर्ण दस वर्णों में सम्मिलित हैं।

15.3.1 केवल दाहिने तबले पर निकलने वाले वर्ण

सुविधा के लिये हाथ के पाँचों अँगुलियों की संख्या इस प्रकार रख रहे हैं -

अँगूठे को नं. 1. तर्जनी को नं. 2, बीच (मध्यमा) की अँगुली को नं. 3, अनामिका को नं. 4 और कनिष्ठिका को नं. 5।

(1) ता या ना - सिर्फ दाहिने पर नं. 2 अंगुली से चाँटी पर मारने के बाद अंगुली तुरन्त ऊपर को उठे, उस पर चिपकी न रहे। तीसरी अँगुली तबले पर लगी न रहे, वह भी ऊपर को उठी रहेगी और नं. 4 व 5 अँगुली उसी पर रक्खी रहेगी, उठेगी नहीं। इस प्रकार से ता या ना निकलता है। दोनों में अंतर यह है कि ता में अँगुली थोड़ा लव की ओर होती है और न केवल चाँटी पर बजता है।

(2) तिं या ती - दाहिने के लव पर दूसरी अंगुली से मारने से तिं या ती निकलेगा।

(3) दिं या थुं - दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों को मिलाकर गद्दी द्वारा दाहिने स्याही के ऊपर आघात करके ऊपर उठा लेने से दिं या थुं निकलता है।

(4) तू - नं. 2 अँगुली से दाहिनी ओर स्याही के किनारे मारने से तू निकलता है।

(5) ती या ते - नं. 3 अँगुली से स्याही के बीच की जगह ठोस आघात करने से ती बजता है।

(6) रे या टे -ती या ते बजने की जगह पर नं. 2 अँगुली से स्याही के बीचो-बीच में आघात करने से यह बजता है। नं. 3, 4, 5 अँगुली को मिलाकर एक ही साथ स्याही के मध्य स्थान पर आघात करने से ती या टे भी निकलता है।

15.3.2 केवल बायें तबले पर निकलने वाले बोल

केवल बायें पर बजने वाले वर्ण

(7) गे या घे - बाँये हाथ के नम्बर 2 या 3 की अँगुलियों को लव परं आघात करने से गे या घे निकलता है, परन्तु ध्यान रहे कि कलाई का गट्टा स्याही के पीछे रक्खा हो।

(8) क, के, की, कत- बाँयें हाथ की अँगुलियों को मिलाकर बाँयें पर एक साथ मारने से यह ध्वनि निकलती है।

15.3.3 दोनों तबले पर बजने वाले वर्ण

(9) धा - दाहिने हाथ की नं. 2 अँगुली दाहिने की चाँटी पर और बाँयें हाथ की नं. 2 अँगुली बाँयें पर ग के समान एक साथ मारने से धा निकलता है।

(10) धिं - दाहिने पर तिं और बायें पर ग या घ एक साथ बजाने से धिं निकलता है।

15.3.4 कुछ अन्य बोल निकालने की विधि

(1) तिरकिट–

केवल मध्यमा या मध्यमा-अनामिका दोनों के संयोग से दाहिने की स्याही पर दबा कर बजाने से 'ति' निकलता है। पुनः तर्जनी को उसी स्थान पर दबा कर बजाने से 'र' निकलता है। 'र' बजाते समय पहले की दोनों अँगुलियों को उठा लेना चाहिये। इसके पश्चात्, बायें तबले के स्याही पर सभी अँगुलियों को अँगूठे सहित जोड़कर थपकी लगा देने से 'कि' निकलता है। पुनः जिस प्रकार कि 'ति' बजाया उसी प्रकार से 'ट' बजेगा। क्रमशः चारों बोल इसी प्रकार बजाने से तिरकिट बजेगा ।

(2) तेटे -

'तिरकिट' बजाने के क्रम में जिस प्रकार 'तिर' बजाया उसी प्रकार से 'तेटे' भी बजता है। तेटे और तिर में अंतर इतना है कि तेटे तिर की तुलना में जोरदार होता है।

(3) तूनाकत्ता -

'तू' बजाने के लिये तर्जनी से दाहिने तबले की स्याही पर आघात करके पुनः उठा लेना चाहिये। 'ना' बजाने का ढंग ऊपर समझाया गया है। 'किट' में 'क' बजाने के लिये जिस प्रकार ऊपर समझाया गया है, उसी प्रकार से 'क' बजता है। 'ता' या 'ना' दोनों एक समान ही बजते हैं। इस प्रकार से चारों बोलों को क्रमानुसार बजाने से 'तूनाकत्ता' का बोल निकलेगा।

(4) धिरधिर-

दाहिनी हथेली का दाहिना हिस्सा और बायें में 'घ' एक साथ बजाने से 'धिं बजेगा। हथेली के केवल बाटों के मार से 'र' बजेगा।

(5) घिड़नग-

इनमें 'घि' बायें पर, 'ड़', तर्जनी के अलावा तीन अँगुलियों से 'ति' की भाँति स्याही पर, 'त' चाँटी पर और 'ग' पुनः बाँये पर बजेगा। चारों बोलों को क्रम से बजाने पर 'घिड़नग' बजेगा।

(6) किड़नक–

इसमें 'घ' के स्थान पर 'क' बजाकर, शेष को ऊपर की भाँति बजा दिया जाएगा।

(7) धिनगिन –

यह चार जरबों का बोल है। चारों बोल साफ हैं। धिड़नग : इसमें 'घि' बाएँ से, 'ड़' 'ति' की भाँति, 'न' किनारी पर और 'ग' बाएँ से बजेगा।

(8) तिनकिन–

यह ठीक 'धिनगिन' की भाँति बजेगा। सभी बोल स्पष्ट हैं।

(9) धड़धिन :

'धा' बजाकर मध्यमा और अनामिका से 'ड़' बजेगा। बाएँ से 'घि' तथा दाहिने की चाँट पर 'न' बजेगा।

(10) तड़किन :

बायाँ बंद करके 'धड़धिन' की भाँति बजेगा।

(11) त्रक या त्रिका-

दाहिने तबले की स्याही पर सर्वप्रथम मध्यमा और उसके बाद तर्जनी से झटके के साथ आघात करने पर 'त्र' या 'त्रि' बजता है। पुनः 'ट' बजाने से 'क' बजेगा। इसी प्रकार क्रमानुसार बजाने से 'त्रक' या 'त्रिका' बजेगा।

(12) थुं या दिं-

जब चारों अँगुलियों को जोड़कर स्याही के अगले भाग पर हल्का सा आघात करके हाथ को ऊपर उठा लें तो 'थं' या 'दिं' निकलता है। सही पहचान के लिये इसकी ध्वनि आसदार होनी चाहिए।

(13) किटतक-

बाँयें हाथ की थपकी से 'क' य 'कि' बजता है। ऊपर समझाई हुई विधि के अनुसार तर्जनी के अलावा तीन अँगुलियों द्वारा दाहिने तबले की स्याही पर आघात करने से 'ट' बजेगा। दाहिने तबले की लव पर तर्जनी से 'त' बजेगा। पुनः बाँयें हाथ की थपकी के प्रयोग से 'क' बजेगा। इसी प्रकार क्रम से चारों बालों को बजाने से 'किटतक' की ध्वनि उत्पन्न होगी।

(14) धीना गीना-

बाँयें तबले के मैदान में मध्यमा से 'गि' तथा दाहिने तबले में स्याही पर तर्जनी से 'ती' के स्थान पर एक ही साथ दोनों हाथों का प्रयोग करने से 'धी' बजेगा। चाँटी पर तर्जनी से 'ना' बजेगा। पुनः बायें पर ऊपर बताई विधि के अनुसार 'गि' और चाँटी पर तर्जनी से 'ना' क्रमानुसार बजाने से धीना गीना बजेगा।

(15) क्ड़ांध-

बाँये हाथ से 'कत' तथा दायें हाथ से 'ता' बजाने से 'कडा' बजेगा। लेकिन यह जोर से बजेगा। उसके बाद 'ग' तथा 'ना' दोनों एक साथ बजाने से ध बजेगा।

(16) धुमकिट-

यह पखावज का बोल है। बाँये पर 'घ' और दाहिने पर 'थु' एक साथ बजाने से 'धु' बजता है। 'ते' दाहिने पर बजाने से 'म' बजता है। 'तिरकिट' के क्रम में 'किट' बजाना समझाया गया है। चारों बोलों को क्रमानुसार बजाने से 'धुमकिट' बजेगा |

(17) धाड़ा : 'धा' को 'ता' व 'ध' से मिलाकर बजाओ' और 'ड़' दो प्रकार से बजता है –

१. मध्यमा तथा अनामिका दोनों से लव पर और

२. तर्जनी को 'त' के स्थान पर प्रहार करने से।

(18) नाड़ा :

ऊपर के बोल में बायाँ ना बजाने से यह बोल निकलेगा।

(19) घ्ड़ा :

बाएँ से 'घ' तथा तुरन्त दाएँ से 'ता' बजाएँ। इसका शुद्ध रूप 'घ्ता' है।

(20) क्ड़ा :

बाएँ से 'क' और दाहिने से 'ता' बजाएँ। शुद्ध रूप 'क्ता' है।

(21) तड़न्न :

इसमें 'त' मध्यमा व अनामिका से चाँट पर, 'ड़' तर्जनी से तथा 'न' पुनःदोनों से बजेगा।

(22) किड़धा :

'किटधा' की भाँति बजेगा।

(23) गदिगिन :

'ग' बाएँ से, 'द' दाहिने की स्याही से, 'ग' पुनः बाएँ से तथा 'न' दाहिने से मध्यमा के अग्रभाग से स्याही पर बजेगा।

(24) क्ड़ान और घ्ड़ान :

प्रायः इसे दो प्रकार से बजाते हैं। दोनों हाथों से बजाने के लिए पहले बाएँ पर चारों उँगलियों को मिला कर स्याही पर जरब मारने से 'क' और उसके बाद तुरन्त तर्जनी से दाएँ पर 'ता' बजाते हैं। परन्तु कुछ लोग दाएँ पर सीधे हाथ को मार कर इस प्रकार तुरन्त उठा लेते हैं कि देखने में तो पूरे हाथ की जरब दिखाई दे, परन्तु पुड़ी पर केवल कनिष्ठिका तथा उसके नीचे की हथेली का भाग ही पड़ता है।

(25) दिन्नक :

पहले बाएँ पर खुला बोल बजा कर दाएँ पर तुरन्त ‘ना' बजाया जाता है।

(26) गिद्दी :

दोनों तबलों पर खुले बोल बजाने से यह बनता है। पहले दाहिने पर सीधा हाथ पूरा उठा हुआ मारो, फिर डग्गे के किनारे पर उछटता हुआ बायाँ हाथ मारो।

(27) घेत् :

बाएँ हाथ की अनामिका तथा मध्यमा और दाएँ की कनिष्ठिका, अनामिका और मध्यमा को मिला कर दोनों तबलों पर एक साथ जरब लगाने से यह बोल बजता है।

(28) तरान, ततान,टतान :

दाएँ हाथ की कनिष्ठिका, अनामिका तथा मध्यमा के अग्रभाग से स्याही पर दबा हुआ आघात करके 'ट' की भाँति 'त' को बजाइए। फिर 'रा' को खुले 'ता' के समान तथा 'ना' को चाँटी पर बजाएँगे। यही 'तरान' बोल होगा। 'तरान' बोल वास्तव में 'टतान' बजाया जाता है।

(29) थाप का ‘ता’ बजाना:

जब दाहिने हाथ की चारों उँगलियों को मिलाकर स्याही पर इस प्रकार आघात किया जाए कि कनिष्ठिका का प्रहार सबसे जोरदार पड़े और जरब लगते ही हाथ ऊपर उठ जाए, तो बहुत उत्तम

‘ता’ बजता है। इसे ठेका बजाते समयदम लेने के लिए बजा देते हैं।

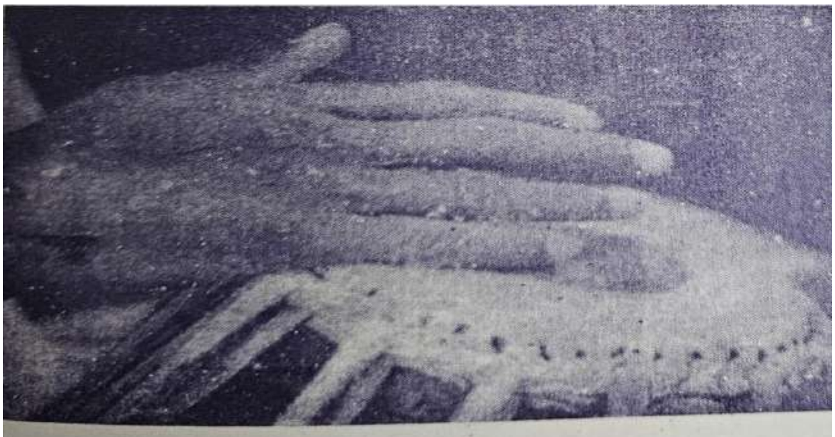

थाप का 'ता'

"चाँट का 'त'"

"दित्"

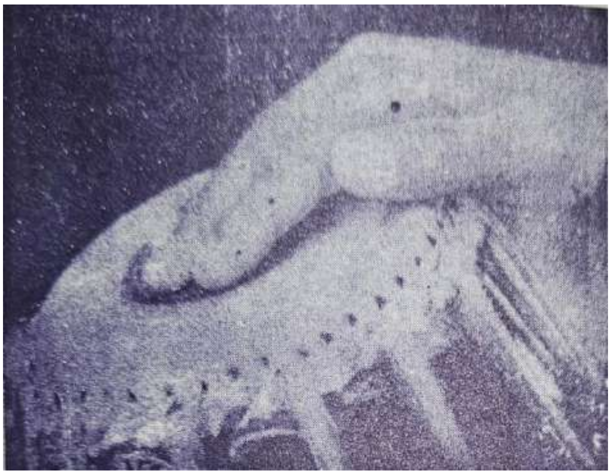

“ता या ना”

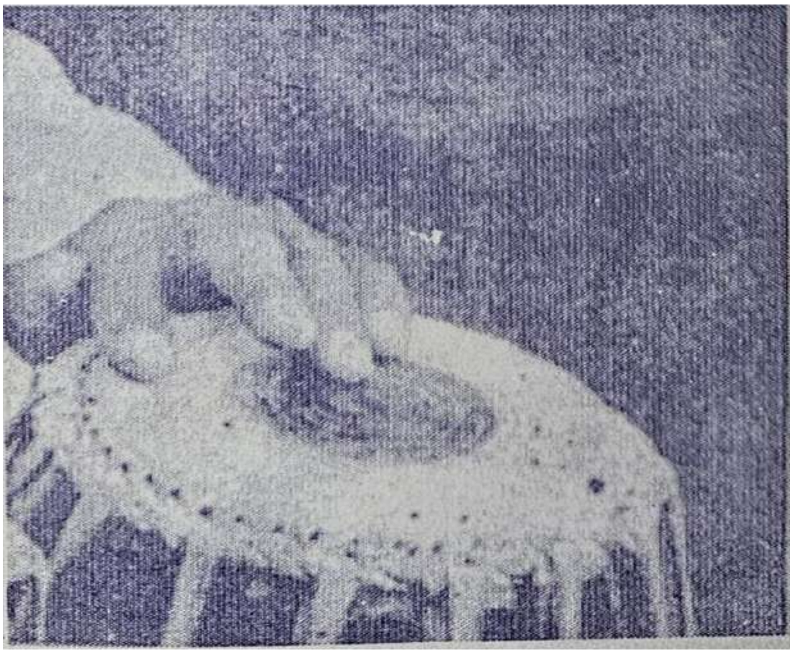

“धिर धिर का धि”

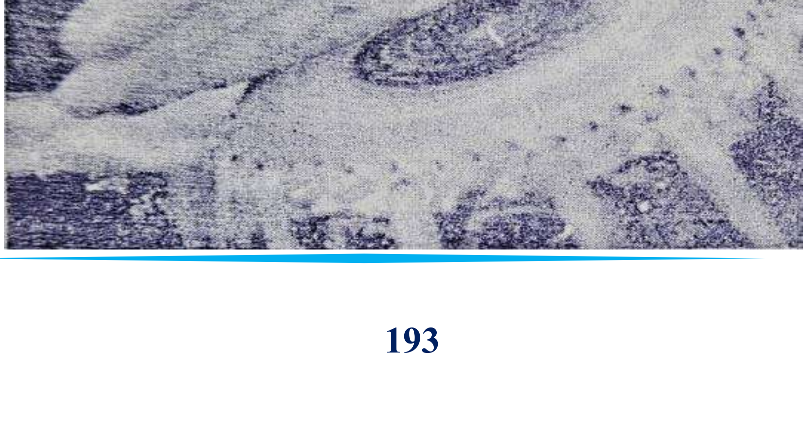

“धिर धिर का र”

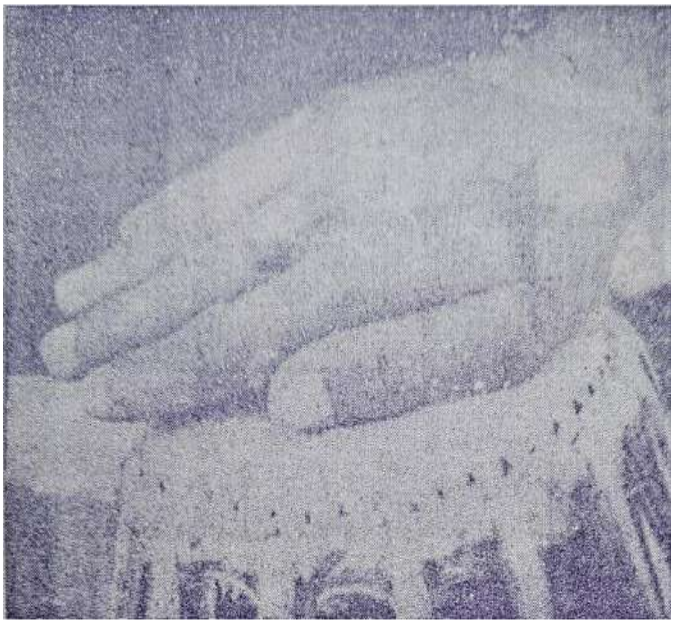

“दिन”

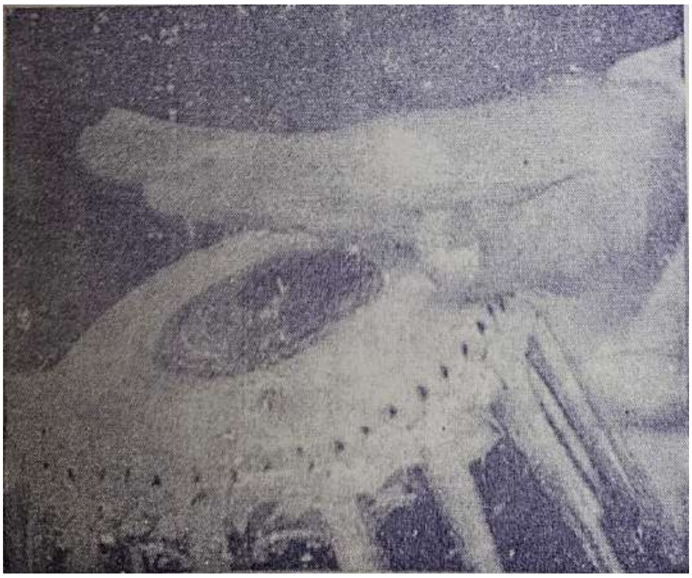

“रे या टे”

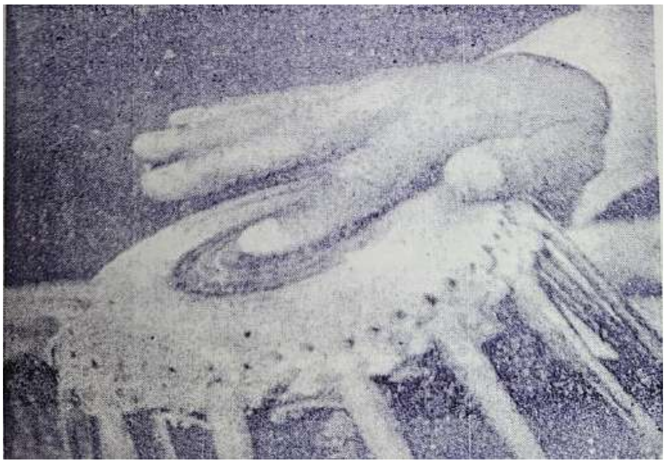

“क”

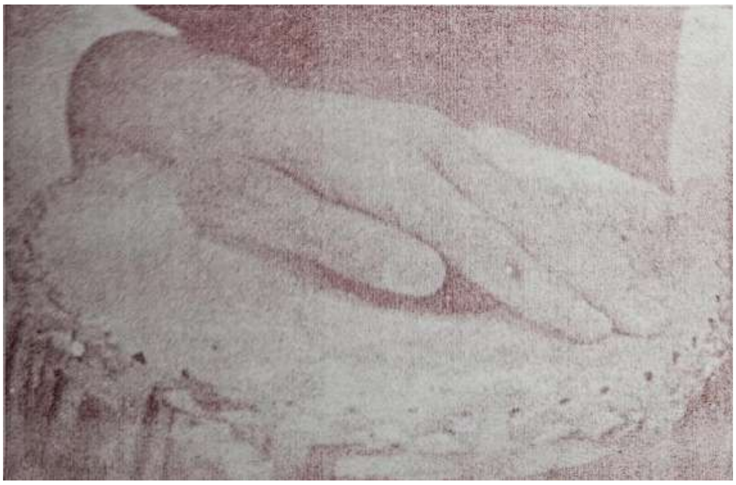

बाएँ से निकलनेवाला ’घ‘ या ’ग‘

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 तबला के कितने वर्ण माने है।

क) 10

ख) 4

ग) 6

घ) 2

15.2 ता या ना किस ऊँगली से बजता हैं ?

क) अनामिका

ख) तर्जनी

ग) मध्यमा

घ) कनिष्ठिका

15.3 तबले पर तिरकिट दोनों हाथों से बजता हैं।

क)हां

ख) नहीं

15.4 क वर्ण कोनसे तबले पे बजता हैं।

क)दायाँ

ख) बायाँ

15.5 मध्यमा ऊँगली से निकलने वाला वर्ण।

क)ना

ख) घ

ग) ती

घ) र

15.6 दाहिने पर तिं और बायें पर ग या घ एक साथ बजाने से कोनसा वर्ण निकलता है।

क) धा

ख) धिं

15.4 सारांश

किसी ताल में प्रयुक्त होने वाले बोलों को बजाने के तरीके की पहचान होना। इससे ताल -ज्ञान के साथ-साथ बोलों के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों के प्रस्तुतिकरणके लिए तथा बोलों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

15.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वालेस्वरोंकी तालबद्ध रचना कोसरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वालेस्वरोंकी (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीतवह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 उत्तर: क)

15.2 उत्तर: ख)

15.3 उत्तर: क)

15.4 उत्तर: ख)

15.5 उत्तर: ग)

15.6 उत्तर: ख)

15.7 संदर्भ

डॉ. राजीव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अगस्त 2024।

भगवत शरण शर्मा . (2007). ताल प्रकाश ,संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

श्री विक्रांत शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, सितम्बर 2024

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

श्री. राम नरेश राय . (2006). ताल दर्शन मंजरी (भाग 1-3),पाठक पब्लिकेशन 211003, इलाहबाद।

15.8 अनुशंसित पठन

भगवत शरण शर्मा . (2007) ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय हाथरस -204101 उत्तर प्रदेश।

डॉ. मनोहर भालचंद्रराव मराठे . (1991). ताल – वाद्य शास्त्र (एक विवेचन) शर्मा पुस्तक सदन, ग्वालियर।

प्रो० बी. एल. यादव (2003).तबला प्रकाश , संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलहाबाद।

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव . ताल परिचय , रूबी प्रकाशन गुरु तेग बहादुर नगर इलहाबाद 211016

पंडित विजय शंकर मिश्र (2005) तबला पुराण , कनिष्क पब्लिशर्स , डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 110 002

15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तबला के कितने वर्ण होते हैं।

प्रश्न 2. दायें पर बजने वाले वर्ण लिखिए।

प्रश्न 3. बायें पर बजने वाले वर्ण लिखिए।

प्रश्न 4. दोनों तबले पर बजने वाले बोल कोनसे हैं ।

प्रश्न 5. तिरकिट को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 6. किटतक बोल को लिखकर समझाइए।

महत्वपूर्ण प्रश्न- कार्यभार

प्रश्न 1. वाद्यों के प्रकार तथा तबले का परिचय लिखिए ?

प्रश्न 2. तबला के अंगों को विस्तारपूर्वक लिखिए ?

प्रश्न 3. नाद और संगीत क्या है संक्षिप्त में लिखिए ?

प्रश्न 4. .ताललिपि पद्धति लिखिए ?

प्रश्न 5. लय और लयकारी का परिचय लिखिए/बताइए ?

प्रश्न 6. पंडित विष्णु नारायण और पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का परिचय लिखिए ?

प्रश्न 7. ½ (एक बटा दो) और ¼ (एक बटा चार) का परिचय लिखिए/बताइए ?

प्रश्न 8. तीनताल में दो कायदे पलटों और तिहाई के साथ लिखिए ?

प्रश्न 9. तीनताल और एकताल का परिचय और एकगुन और दोगुन लिखिए ?

प्रश्न 10. तबला के वर्णो को विस्तारपूर्वक लिखिए ?